



प्रभावित लोगों का रेस्क्यू

चित्रकूट में रामघाट का पुल बहा एयरफोर्स के हेलिकॉप्टर से एयरलिफ्ट किए जा रहे फंसे लोग

हरिभूमि न्यूज़ ►► सतना/चित्रकूट

विन्ध्य और बुंदेलखंड अंचल में हो रही मूसलाधार बारिश के चलते सतना, चित्रकूट, टीकमगढ़, छतरपुर और पन्ना जिलों में बाढ़ के गंभीर हालात बन गए हैं। चित्रकूट में बीते 18 घंटों से जारी बारिश के कारण मंदकिनी नदी खतरे के निशान से ऊपर लगभग 30 फीट की ऊंचाई पर बह रही है। नदी के प्रचंड वेग में रामघाट का 300 मीटर लंबा पुल बह गया है। साल 2003 के बाद ऐसा पहली बार हुआ है जब ऐसी भयंकर बाढ़ देखने को मिली है। नयागांव का मुख्य पुल पानी में डूब गया है और उसकी रैलिंग टूट चुकी है। प्राचीन मठ-मंदिरों और सैकड़ों घरों में पानी भर जाने के कारण लोगों को छतों का सहारा लेना पड़ रहा है। रामघाट, भरतघाट और सती अनसुझा क्षेत्र पूरी तरह जलमग्न हो चुके हैं और करीब 400 दुकानें पानी में डूब गई हैं। बाढ़ का पानी नयागांव राजमहल, थानों और पेट्रोल पंपों में घुस गया है। छतों पर फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए एसडीआरएफ की टीमों के साथ एयरफोर्स के 2 हेलिकॉप्टरों को तैनात किया गया है, जो प्रभावितों को एयरलिफ्ट रहे हैं।

मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

प्रदेश के 5 जिलों में मूसलाधार बारिश से तबाही

सतना और चित्रकूट में बाढ़ का ‘तांडव’

ये हैं हेल्पलाइन नंबर: कमलेश भदौरिया (तहसीलदार, चित्रकूट): 7701079667, अंकित सोनी (सीएमओ): 7987420141, कृपालपुर जेनल अधिकारी (सतना): 9754129296, नजीराबाद जेनल अधिकारी (सतना): 9179080455

मंदकिनी नदी का रौढ़ रूप

नदी के किनारे बाढ़

- मंदकिनी नदी का जलस्तर 30 फीट पहुंचा
- टोंस हाइडल प्रोजेक्ट से पानी छोड़े जाने को लेकर 36 गांवों में हाई अलर्ट
- सतना-मानिकपुर रेलखंड पर 44 ट्रेनें प्रभावित

36 गांवों में हाई अलर्ट और ट्रेन यातायात प्रभावित

टोंस हाइडल प्रोजेक्ट से 2500 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड पानी छोड़े जाने की संभावना को देखते हुए सतना की



रामपुर बघेलान और कोटर तहसील के 36 तटीय गांवों में अलर्ट जारी कर सुरक्षित स्थानों पर जाने के निर्देश दिए गए हैं। उधर, सतना के गोरगी बांध के फूटने और रेलवे ट्रैक पर पानी भरने से सतना-मानिकपुर रेलखंड पर 24 यात्री ट्रेनें और 20 मालगाड़ियां प्रभावित हुई हैं। रेलवे पटरियों पर जलभराव के चलते आनंद विहार-रीवा सुपरफास्ट और सारनाथ एक्सप्रेस जैसी ट्रेनें रास्ते में प्रभावित हुई हैं। उचेहरा के धनेह गांव में बड़ा तालाब फूट गया है और कोठी के वेयरहाउस में पानी घुसने से पांच हजार मॉटिक टन से ज्यादा अनाज बर्बाद हो गया है।

खबर संक्षेप

ओरछा में आज भाजपा कार्यसमिति की बैठक

भोपाल। निवाड़ी जिले में भगवान राजाराम की नगरी ओरछा में 14 साल बाद भाजपा प्रदेश



कार्यसमिति की बैठक होने जा रही है। यह दो दिवसीय बैठक 30 और 31 अगस्त को होगी। इसमें करीब 350 प्रतिनिधियों के शामिल होने की संभावना है। शनिवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल और प्रदेश महामंत्री गौरव रणदिवे ओरछा पहुंचे।

66 लाख से ज्यादा नशीली गोलियां जब्त

नई दिल्ली। सेंट्रल ब्यूरो ऑफ नारकोटिक्स (सीबीएन) की मप्र यूनिट ने 'ऑपरेशन वन 2.0' के



तहत चंडीगढ़-बड़ी इंदरस्टेट मार्ग पर बड़ी कार्रवाई की है। पंजाब-हिमाचल कॉरिडोर पर निगरानी रखी और उग्र नंबर के एक संदिग्ध ट्रक को रोका। ट्रक की तलाशी लेने पर 120 मास्टर कार्टन में रखी कुल 66,79,980 साइकोट्रॉपिक (नशीली) गोलियां बरामद हुईं।

मुकदमों के अंबार और भारी-भरकम फीस पर जस्टिस नागरत्ना की चिंता वकालत को कमाई नहीं, जनसेवा समझें, एआई के फैसलों से ‘बचें’

एजेंसी ►► नई दिल्ली

नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी (एनएलयू) के 13वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए सुप्रीम कोर्ट की वरिष्ठ जज जस्टिस बी.वी. नागरत्ना ने देश की न्याय प्रणाली और वकीलों के रवैये पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज हमारी अदालतें मुकदमों के भारी बोझ, लगातार होती देरी और वकीलों की महंगी फीस से कराह रही हैं। ऐसे में लीगल प्रोफेशन को अपने कामकाज और सोच पर आत्मचिंतन करने की सख्त जरूरत है। जस्टिस नागरत्ना ने वकीलों से अपील की कि वे वकालत को सिर्फ पैसा कमाने का जरिया न बनाएं, बल्कि इसे जनसेवा के रूप में देखें।

उन्होंने कहा कि वकील लोकतंत्र के सेप्टी वाल्व हैं। उन्हें मिली स्वतंत्रता किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि सरकार या बाजार के दबाव के बिना सच के साथ खड़े होने के लिए है। साथ ही उन्होंने बार काउंसिल को अपनी गरिमा, नैतिकता और योग्यता बनाए रखने के लिए सख्त कदम उठाने की बात कही। तकनीक के बढ़ते इस्तेमाल पर चेतावनी देते हुए उन्होंने युवा वकीलों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का सोच-समझकर प्रयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि एआई कभी भी इंसानी समझ का विकल्प नहीं हो सकती। वकील एआई द्वारा तैयार किए गए फर्जी या मनगढ़ंत अदालती फैसलों (हेलुसिनेशन) के झंझ में न आएँ और कोर्ट में गलत तथ्य पेश करने से बचें।



जस्टिस नागरत्ना

►► एनएलयू के दीक्षांत समारोह में कहा आपसी समझौते पर जोर दें

कानूनी लड़ाई ही विकल्प नहीं

अदालती प्रक्रियाओं को जटिल, थकाऊ और खर्चीला बताते हुए जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि अब समय आ गया है कि कानूनी लड़ाइयों के बजाए आपसी समझौते और मध्यस्थता को प्राथमिकता दी जाए। वकीलों को चाहिए कि वे अपने मुवक्किलों को कोर्ट-कचहरी के चक्कर में उलझाने के बजाए बातचीत से विवाद सुलझाने की सलाह दें।

सरकार का जन विश्वास अभियान



बहनों से राखी बंधवाते सीएम

विशेष प्रतिनिधि ►► भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को बालाघाट जिले के दूरस्थ गांव बोंदारी पहुंचे। उन्होंने पूर्व में नक्सल प्रभावित रहे इस बोंदारी गांव में ग्रामवासियों से आत्मीय संवाद किया। मुख्यमंत्री ग्रामीणों के बीच जमीन पर बैठे, जनजातीय समाज की समस्याएं सुनीं और उन्हें मौके पर ही हल किया। डॉ. यादव ने इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास और यहां के बैगा समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए बालाघाट जिले के 100 गांवों के समग्र विकास के लिए 225 करोड़ रुपए प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार बालाघाट जिले के आदिवासी क्षेत्र में मृत बच्चों के परिवारों को दो-दो लाख रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान करेगी। ग्राम कोरका व बोंदारी में उन्होंने एक सभा मंच पर प्रभावित परिवारों से मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने मृत बच्चों के संबंध में जानकारी ली और पोषण आहार की स्थिति पर भी चर्चा की। उल्लेखनीय है कि पहली बार कोई मुख्यमंत्री बालाघाट जिले के नक्सल प्रभावित रहे बोंदारी और कोरका गांवों में ग्रामवासियों से मिलने पहुंचे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव पहुंचे बालाघाट जिले के नक्सल प्रभावित गांव बोंदारी

225 करोड़ से बदलेगी बालाघाट के जिले के 100 गांवों की तस्वीर

पहली बार कोई मुख्यमंत्री बालाघाट जिले के नक्सल प्रभावित रहे बोंदारी और कोरका गांवों में ग्रामवासियों से मिलने पहुंचे



मुख्यमंत्री ग्रामीणों के बीच जमीन पर बैठे

►► मृत आदिवासी बच्चों के परिवारों को दो-दो लाख रुपए की आर्थिक सहायता

►► जनजातीय समाज के साथ किया आत्मीय संवाद, समस्याओं का किया निवारण

सुरक्षा के साथ विकास और रोजगार का संकल्प: मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार को स्पष्ट संकल्प 'सुरक्षा के साथ विकास और विकास के साथ रोजगार' का है। नक्सलवाद के प्रभाव से मुक्त हुए क्षेत्रों में अब सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं को मजबूत करने के साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार और स्व-रोजगार के अवसरों का विस्तार किया जाएगा।

बैगा समाज के सर्वांगीण विकास पर विशेष जोर

डॉ. यादव ने ग्राम बोंदारी में बैगा समाज के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि बैगा परिवारों तक शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, आवास, सड़क, बिजली और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी योजनाओं का प्रभावी लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

सरकार का लक्ष्य अब केवल सड़क बनाने का ही नहीं

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य अब केवल सड़क बनाने का ही नहीं, बल्कि सड़कों को बाजार से, गांव को रोजगार से और युवाओं को अवसरों से जोड़ने का है। बालाघाट जिले में एमएसएमई, ग्रामोद्योग तथा स्थानीय रोजगारपरक उद्योगों को और भी बढ़ावा देकर युवाओं के लिए अपने ही क्षेत्र में रोजगार और स्व-रोजगार के अवसर विकसित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार का प्रयास रहेगा कि गांव में तैयार होने वाले उत्पादों का स्थानीय स्तर पर ही मूल्य संवर्धन हो और उन्हें देश के बड़े बाजारों तक आसानी से पहुंचाया जा सके।



धर्म कुमार

नेपाल बाढ़ में लापता पिता की आस में कुशीनगर पहुंचा 11 साल का मासूम

पापा, आप कहां हो?...गंडक की लहरों में पिता की तलाश

एजेंसी ►► कुशीनगर

नेपाल में कुदरत के बरपाए कहर ने न जाने कितने हंसते-खेलते परिवारों को हमेशा के लिए उजाड़ दिया है। इस भयानक जलप्रलय का सबसे कारुणिक और दिल को झकझोर देने वाला रूप

■ सांसों रोके हर लहर को निहारती मासूम आंखें

कुशीनगर में गंडक (नारायणी) नदी के किनारे देखने को मिल रहा है। जहां नदी की उफनती लहरों के बीच एक 11 साल का मासूम धर्म कुमार अपने लापता पिता की एक झलक पाने के लिए टकटकी लगाए बैठा है। बिहार के मोतिहारी रहने वाले नंदलाल साहनी नेपाल के रसुवा जिले में रोजी-रोटी के लिए कबाड़ की दुकान चलाते थे।

नेपाल से बहकर आ रहे शव

नेपाल से बहकर आ रहे शवों के पहुंचने से दहशत है। पुलिस की टीम ने नदी में सर्च ऑपरेशन चला रही है और किनारे मिलने वाले हर शव के साथ इस मासूम का कलेजा मुंह को आ जाता है कि कहीं यह उसके पिता तो नहीं।

दो अफसरों को अतिरिक्त प्रभार का आदेश आईपीएस के तबादले: अंशुमान एडीजी इंटेलेजींस, शेखर खेल संचालक बने

विशेष प्रतिनिधि ►► भोपाल

दो वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों का तबादला किया गया है। दो अधिकारियों को अतिरिक्त प्रभार दिया है। चंचल शेखर (1995 बैच) को अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, विशेष सशस्त्र बल से हटाकर संचालक, खेल एवं युवा कल्याण बनाया गया। अंशुमान यादव (1998 बैच) को खेल विभाग से वापस पुलिस मुख्यालय भेजा गया। अंशुमान



चंचल शेखर और अंशुमान यादव

यादव अब अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजी), इंटेलेजींस के साथ अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, साइबर का अतिरिक्त प्रभार भी संभालेंगे।

संघ के शताब्दी वर्ष का किया उल्लेख

इस दौरान उन्होंने आरएसएस की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर (शताब्दी वर्ष) का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि संघ भी समाज में इसी उच्च चेतना को जागृत करने का कार्य कर रहा है। दौरे के दौरान डॉ. भागवत ने मैनहट्टन में 26 सेकंड एवेन्यू (जहां से 1966 में इस्कॉन की शुरुआत हुई थी) का दौरा किया और बेघर लोगों के लिए चलाए जा रहे 'जीरो हंगर' खाद्यान्न वितरण कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

न्यूयॉर्क स्थित इस्कॉन मंदिर में संघ प्रमुख डॉ. भागवत ने दुनिया को दिया एकता का मंत्र

कॉरपोरेट जगत का उदाहरण देकर लोगों की जिम्मेदारियों की दी समझाइश

एजेंसी ►► न्यूयॉर्क

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने अपने अमेरिका दौरे के दौरान न्यूयॉर्क स्थित भक्ति सेंटर और ऐतिहासिक इस्कॉन मंदिर का दौरा किया। इस दौरान श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में दुनिया कई तरह के टकरावों, विविधताओं और विरोधाभासों से जूझ रही है। ऐसे माहौल में केवल 'कृष्ण चेतना' ही पूरी मानवता को एक सूत्र में

यह संसार कोई बाजार नहीं बल्कि कृष्ण का ही रूप

पिरो सकती है। डॉ. भागवत ने भगवद्गीता के मुख्य संदेश को रेखांकित करते हुए कहा कि यह संसार कोई बाजार नहीं बल्कि



इस्कॉन मंदिर में डॉ. भागवत

कृष्ण का ही रूप है। उन्होंने कहा कि दुनिया में कितनी भी विविधताएं और मतभेद क्यों न हों, मूल रूप से सब कुछ कृष्णमय ही है।

वैश्विक संकट और टकराव के बीच ‘कृष्ण चेतना’ ही दुनिया को कर सकती है एक

यदि यह विचार हर व्यक्ति के हृदय तक पहुंच जाए, तो यह भौतिक जगत सभी के लिए एक स्वर्ग जैसी सुंदर जगह में बदल जाएगा। संघ प्रमुख ने स्पष्ट किया कि भगवद्गीता जीवन की चुनौतियों से भागना नहीं सिखाती, बल्कि अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहकर उनका सामना करने की प्रेरणा देती है। उन्होंने कॉरपोरेट जगत का उदाहरण देते हुए समझाया कि जैसे किसी कंपनी में डायरेक्टर, सीईओ और कर्मचारी अलग-अलग जिम्मेदारियां निभाते हैं, लेकिन सभी का अंतिम लक्ष्य एक ही होता है।

सोनिया की आत्मकथा 'बिलॉनिंग' पर छिड़ा सियासी संग्राम

एजेसी ►► नई दिल्ली

कांग्रेस नेताओं ने दावा किया है कि पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया पर सोनिया गांधी के संस्मरण को प्रकाशित नहीं करने के लिए दबाव डाला गया है।

इस आरोप के बाद सत्तारूढ़ भाजपा और कांग्रेस के बीच जुबानी जंग शुरू हो गई है। पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया ने शुक्रवार को कहा कि वह सोनिया गांधी की आत्मकथा 'बिलॉनिंग: ए जर्नी ऑफ लव' का



पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया थी प्रकाशक

प्रकाशक नहीं है। यह बयान अमेरिकी प्रकाशक अलेक्रेड ए. नॉफ की ओर से किताब को 10 नवंबर को प्रकाशित करने की घोषणा के कुछ दिनों बाद आया।

प्रकाशक ने कहा कि लेखकों की सामग्री की तथ्य-जांच करना उसका अधिकार और जिम्मेदारी है। यह बयान उन खबरों के बीच आया, जिनमें कहा गया था कि सोनिया गांधी द्वारा संपादकीय बदलावों को स्वीकार नहीं किए जाने के बाद प्रमुख प्रकाशक ने किताब प्रकाशित करने का फैसला वापस ले लिया।

कांग्रेस ने साधा भाजपा आरएसएस पर निशाना

कांग्रेस के लोकसभा में उपनेता गौरव मोगोई ने पेंगुइन इंडिया के बयान की आलोचना की और इसे कमजोर बताया। उन्होंने एक्स पर लिखा, यह किताब कमजोर बयान है। पेंगुइन इंडिया 'एक्जाम वॉरियर्स' और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर कई किताबें प्रकाशित करने में पूरी तरह खुश है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भाजपा सरकार में ऐसे लोग हैं, जो अब डर गए हैं कि भारत के लोग इस किताब को पढ़ेंगे।

भाजपा ने कहा

यह संस्मरण है या उसका सियासीकरण: नकवी

पूर्व केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने सोनिया गांधी की किताब पर जारी विवाद पर कहा कि यह लेखक और प्रकाशक के बीच का मामला है। वे तय करेंगे कि यह संस्मरण है या उसका सियासीकरण है। नकवी ने कहा कि यह सोनिया गांधी का संस्मरण है या कल्पना है, ये तो लेखक और प्रकाशक के बीच की बात है।

कांग्रेस के ये प्रयास पाखंड से भरे: केसवन

भाजपा ने कहा कि कांग्रेस नेता संस्मरण को लेकर 'डर की झूठी कहानी' गढ़ने और एक गलत धारणा बनाने की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सीआर केसवन ने कहा कि कांग्रेस के ये प्रयास सिर्फ विडंबना से ही नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से पाखंड से भी भरे हैं।

छापने से पहले बदलाव की क्या जरूरत: गहलोत

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया से पूछा कि जब उसकी अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन इकाई इस संस्मरण को दुनिया भर में प्रकाशित कर रही है तो भारत में इसे प्रकाशित करने से उसे क्या रोक रहा है? पेंगुइन किताब को उसके मूल रूप में पूरी दुनिया में प्रकाशित करने के लिए तैयार है, लेकिन वह इसे भारत में प्रकाशित करने से पहले बदलाव चाहता है। क्या वजह है उसे भारत में प्रकाशित नहीं किया जा सकता? किताब को दबाव में दबाना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की हत्या के समान है।

विपक्ष ने भी किया कांग्रेस का समर्थन

आत्मकथा को लेकर हुए विवाद पर सीपीआई सांसद पी. संदीप कुमार ने कहा, लेखिका को अपने मन की बात लिखने का पूरा अधिकार है, और यह एक तरह की आत्मकथा ही है। इसमें से कुछ अंश हटाने का कोई मतलब नहीं है। इसके पीछे क्या तर्क है? इसलिए हम इसका विरोध करते हैं। कई प्रकाशक हैं, और मुझे उम्मीद है कि उनमें से कुछ इसे जल्द ही प्रकाशित करेंगे।

खबर संक्षेप

एक्टर हाशमी हुए एवाएन1 के शिकार

मुंबई। आचारपान 2 स्टार इमरान हाशमी ने सोशल मीडिया पर अपनी हेल्थ अपडेट देते हुए, फैस को बताया कि उनकी तबीयत खराब है। रांची समेत कई जगहों की यात्रा करने के बाद कुछ दिनों से बीमार चल रहे एक्टर इमरान को स्वाइन फ्लू हो गया है। शनिवार को उन्होंने इंस्टा स्टोरी पर बताया कि वह इतने बीमार हैं।

नवीन ने चुनाव तैयारियों पर बैठक की

नई दिल्ली। भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने शनिवार को पार्टी नेताओं के साथ एक अहम बैठक की, जिसमें युवाओं तक पहुंचने की पार्टी की योजना पर चर्चा हुई। सूत्रों ने यह जानकारी दी। उत्तर प्रदेश, पंजाब और गुजरात समेत सात राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी की तैयारी भी इस बैठक का एक मुख्य एजेंडा था।

जरांगे ने शुरू किया बेमियादी अनशन

छत्रपति संभाजीनगर। आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने शनिवार को बेमियादी भूख हड़ताल शुरू कर दी। उन्होंने कहा मराठा समुदाय अब सरकार को और अधिक समय नहीं देगा तथा महाराष्ट्र सरकार सत्यापित किए गए 58 लाख कुनबी रिकॉर्ड के आधार पर जाति प्रमाणपत्र जारी करें।

एनएचआरसी 2-3 को करेगा खुली सुनवाई

गांधीनगर। गुजरात में राज्य में मानवाधिकारों के कथित उल्लंघन के मामलों की सुनवाई के लिए 2 दिनी 'खुली सुनवाई और शिविर बैठक' आयोजित कर रहा है। भारत के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी. रामसुब्रह्मण्यम और सदस्य न्यायमूर्ति (डॉ.) विद्युत रंजन सारंगी और विजया भारती सयानी अधिकारियों की उपस्थिति में सुनवाई करेंगे।

बंबई उच्च न्यायालय ने कहा मामले में हद पार कर दी और मनमानी कार्रवाई की

कोर्ट की लगी फटकार तो एफडीए ने वापस लिया सिप्ला के बिक्री लाइसेंस का रद्दीकरण



एजेसी ►► मुंबई

बंबई उच्च न्यायालय की फटकार के बाद महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) ने सिप्ला फार्मा एंड लाइफ साइंसेज लिमिटेड की पुणे स्थित कैरी एंड फॉरवर्डिंग इकाई का दवा बिक्री लाइसेंस निरस्त करने का आदेश शनिवार को वापस ले लिया। अदालत ने नियामक से कहा कि उसने मामले में हद पार कर दी और मनमाने तरीके से कार्रवाई की। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश रवींद्र घुगे और न्यायमूर्ति गौतम अंखड़ की पीठ ने कहा कि एफडीए की कार्रवाई 'प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों' के खिलाफ है।

एफडीए ने कहा कि वह लाइसेंस रद्द करने का आदेश तत्काल वापस लेगा और कंपनी को नया कारण बताओ नोटिस जारी करेगा। इसके बाद मामले में कारणों सहित नया आदेश पारित किया जाएगा। नियामक ने पुणे के वाडकी स्थित सिप्ला फार्मा एंड लाइफ साइंसेज लिमिटेड की दवाओं के भंडारण एवं वितरण सुविधा का दवा बिक्री लाइसेंस 27 अगस्त से रद्द कर दिया था।

◀ एफडीए ने कहा- कंपनी को नया कारण बताओ नोटिस जारी करेगा



सिप्ला फार्मा ने दी थी चुनौती

एफडीए ने पुणे के वाडकी स्थित सिप्ला फार्मा एंड लाइफ साइंसेज लिमिटेड की दवाओं के भंडारण और वितरण सुविधा का दवा बिक्री लाइसेंस 27 अगस्त से रद्द कर दिया था। ये कार्रवाई 'रिफ्लिक्शन प्लस' टैबलेट की पैकेजिंग, स्टोरेज और वापसी से जुड़ी गंभीर अनियमितताओं के आरोपों के संबंध में की गई थी। सिप्ला फार्मा एंड लाइफ साइंसेज ने शुक्रवार शाम कहा था कि उसने इस कार्रवाई को कोर्ट में चुनौती दी है।

बॉम्बे हाई कोर्ट की बड़ी टिप्पणी

फूड लाइसेंस निलंबन: तुम खुद को भगवान समझते हो?

बॉम्बे हाईकोर्ट ने एफडीए को कड़ी फटकार लगाई है। कोर्ट ने अधिकारियों को अवमानना की कार्रवाई की चेतावनी भी दी। मामला मुंबई किचन एंसेम्बलेशन परिसर में मौजूद पांच रेस्टोरेन्ट के फूड लाइसेंस निलंबित करने से जुड़ा है। अदालत ने कहा कि विभाग को बार-बार फटकार लगाते-लगाते अब वह थक चुका है। कोर्ट ने एफडीए के रवैये



को व्यावहारिक के बजाय नियमों को लेकर ज़रूरत से ज्यादा कठोर बताया। एफडीए ने कथित स्वच्छता संबंधी खामियां और थर्ड पार्टी

ऑपरेशन से जुड़े मुद्दों को लाइसेंस निलंबित कर दिए थे। कोर्ट के निर्देश के बाद गुरुवार को इन रेस्टोरेन्ट का नया निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण ने रेस्टोरेन्ट 88 फीसदी तक फूड सेफ्टी नियमों के अनुरूप पाए गए। इस पर एक्टिंग चीफ जस्टिस रविंद्र घुगे और जस्टिस गौतम अंखड़ की डिवीजन बेंच ने विभाग के रवैये पर नाराजगी जताई।

►► एफडीए ने हमारे आदेश की अवहेलना की

बेंच ने एफडीए की कार्रवाई पर कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि इतना स्पष्ट कहने के बावजूद एफडीए ने हमारे आदेश की अवहेलना की और व्यावहारिक रूख अपनाते के बजाय तकनीकी गंजिया अपनाया। विभाग और अधिकारियों को बार-बार फटकार लगाते-लगाते हम थक चुके हैं। अदालत ने चेतावनी दी कि संबंधित अधिकारियों के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई शुरू की जाएगी।

पेडेंटिक अप्रोच अपनाया

कोर्ट ने कहा कि एफडीए पहले दिए गए निर्देश पर दोबारा विचार करने के बजाय पेडेंटिक अप्रोच अपनाया। इसके बाद हाईकोर्ट ने पांचों रेस्टोरेन्ट के निलंबन आदेश रद्द कर दिए और उन्हें दोबारा खोलने की अनुमति दे दी। एफडीए ने शुरुआत में रेस्टोरेन्ट के लाइसेंस का निलंबन जारी रखा था।

केंद्रीय बजट 2027-28 की तैयारी शुरू

बिहारी और कश्मीरी पंडितों का मजाक उड़ाने का लगा आरोप

एजेसी ►► मुंबई

कॉमिडियन समथ रैना ने शुक्रवार को 'इंडियाज गॉट टैलेंट' सीजन 2 का एक और एपिसोड रिलीज किया, जिसके कुछ हिस्से बाद में सोशल मीडिया पर वायरल हो गए।



यह एपिसोड बिहार के लोगों और कश्मीरी पंडितों के बारे में की गई कथित टिप्पणियों की वजह से चर्चा में आ गया है; ये टिप्पणियां रैना और स्टैंड-अप कॉमिडियन शैरन वर्मा के बीच बातचीत के दौरान की गई थीं। उन्होंने कहा, 'वह बिहार से हैं। वह इतनी बिहारी हैं कि उन्हें लगता है 'इबोला' का मतलब है कि किसी ने कुछ कहा है।' शैरन ने समय की कश्मीरी जड़ों पर मजाक करते हुए जवाब दिया, 'समथ इतने कश्मीरी हैं कि उन्हें 'स्टोन' होना

(नशे में धुत होना) पसंद है। शैरन वर्मा एक बिहारी हैं जो नौकरी की तलाश में मुंबई आईं। बस बिहारी वाली बातें शैरन ने कहा, 'कम से कम, मैंने अपनी मर्जी से अपना राज्य छोड़ा।

एजेसी ►► नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2027-28 के केंद्रीय बजट की तैयारियां औपचारिक रूप से शुरू कर दी हैं। वित्त मंत्रालय ने बजट प्रक्रिया के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश और समय सीमा तय करते हुए बजट परिपत्र (बजट सर्कुलर) जारी कर दिया है। इसके साथ ही विभिन्न मंत्रालयों और विभागों को आगामी वित्तीय वर्ष के लिए योजनागत



जमा कराने के निर्देश दिए गए हैं। मंत्रालयों और विभागों को संशोधित अनुमान और अनुमान तैयार करने होंगे। विभागों से विस्तृत व्यय प्रस्ताव और वित्तीय जरूरतों का आकलन मांगा गया है।

एजेसी ►► बंगलुरु

कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष के नेता और वरिष्ठ भाजपा नेता आर. अशोक ने शनिवार को कांग्रेस के उन आरोपों का जवाब दिया, जिनमें कहा गया था कि भाजपा दलित नेता और योजना एवं सांख्यिकी विभाग के पूर्व मंत्री बी. नागेंद्र को निशाना बना रही है। उन्होंने सवाल किया कि क्या कथित अनियमितताओं के सिलसिले में आत्महत्या करने वाले दलित

अधिकारी को न्याय नहीं मिलना चाहिए था। अशोक ने कहा कि अधिकारी चंद्रशेखर का परिवार न्याय की मांग को लेकर सड़कों पर उतर आया है। नागेंद्र के साथ कथित अन्याय पर तो चिंता जता रहे हैं, लेकिन मृतक



अधिकारी और उनके परिवार की हालत को नजरअंदाज कर रहे हैं। नागेंद्र का इस्तीफा मंजूर नहीं किया जाना चाहिए, जबकि चंद्रशेखर जैसे दलित अधिकारी की आत्महत्या करने वाले दलित

सिद्धारमैया ने माना था- रकम 84 करोड़ थी

चंद्रशेखर की आत्महत्या के बाद सुसाइड नोट मिलने पर अनियमितताओं का मामला सामने आया था। अशोक ने आरोप लगाया कि चंद्रशेखर ने मरण से पहले जिन लोगों के नाम लिए थे, उनमें से कई दलित थे। उन्होंने सवाल किया कि क्या कांग्रेस न्याय को तभी अड़सित देती है जब आरोपी आर्थिक रूप से संपन्न हो। मृतक दलित और उनके परिवार को न्याय की ज़रूरत नहीं है, लेकिन नागेंद्र को न्याय चाहिए, जो आर्थिक रूप से संपन्न है।

सिद्धारमैया ने माना था- रकम 84 करोड़ थी

चंद्रशेखर की आत्महत्या के बाद सुसाइड नोट मिलने पर अनियमितताओं का मामला सामने आया था। अशोक ने आरोप लगाया कि चंद्रशेखर ने मरण से पहले जिन लोगों के नाम लिए थे, उनमें से कई दलित थे। उन्होंने सवाल किया कि क्या कांग्रेस न्याय को तभी अड़सित देती है जब आरोपी आर्थिक रूप से संपन्न हो। मृतक दलित और उनके परिवार को न्याय की ज़रूरत नहीं है, लेकिन नागेंद्र को न्याय चाहिए, जो आर्थिक रूप से संपन्न है।

सत्ता में बैठे लोग ऐसा खाना अपने बच्चों को भी खिलाएंगे?



खाना अपने बच्चों को भी खिलाएंगे? दीपके ने दावा किया कि स्कूल की रसोई में जांच के दौरान एक मसाले का पैकेट मिला, जिस पर अगस्त 2025 में पैक होने की तारीख दर्ज थी। उनके मुताबिक, इस पैकेट को फरवरी 2026 से पहले इस्तेमाल किया जाना था। दीपके ने आरोप लगाया कि इसके बावजूद ऐसी सामग्री का इस्तेमाल ग्रामीण इलाकों के बच्चों के भोजन में किया जा रहा है।

सीजेपी के दीपके का केंद्र सरकार से सवाल

सरकारी स्कूल की रसोई में एक्सपायर्ड मसाला मिलने का दावा, वीडियो दिखाया

एजेसी ►► मुंबई

कॉंग्रेस जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके ने शनिवार को एक सरकारी स्कूल की रसोई का वीडियो साझा कर बच्चों को कथित तौर पर एक्सपायर्ड खाद्य सामग्री दिए जाने का आरोप लगाया। उन्होंने अपने एक्स पोस्ट में सरकार से सवाल किया कि क्या सत्ता में बैठे लोग ऐसा स्कूल की रसोई में जांच के दौरान एक मसाले का पैकेट मिला, जिस पर अगस्त 2025 में पैक होने की तारीख दर्ज थी। उनके मुताबिक, इस पैकेट को फरवरी 2026 से पहले इस्तेमाल किया जाना था। दीपके ने आरोप लगाया कि इसके बावजूद ऐसी सामग्री का इस्तेमाल ग्रामीण इलाकों के बच्चों के भोजन में किया जा रहा है।



मलबे से कैसे खड़ी होगी जिंदगी?



नेपाल में आई बाढ़ से घड़िग गांव में मची तबाही का मंजर

नेपाल बाढ़ अब तक 626 लोगों की मौत, 2400 से ज्यादा लापता

त्रासदी राहत-बचाव अभियान जारी, भारतीय मदद को सराहा



11 सदस्यीय भारतीय दल पहुंचा

एजेसी ► काठमांडू

नेपाल बाढ़ त्रासदी में मरने वालों का आंकड़ा 616 पहुंच गया है। वहीं, लापता लोगों का आंकड़ा भी 2000 से ज्यादा हो गया है। नेपाल के विदेश मंत्री शिसिर खनाल ने कहा कि देश की तत्काल प्राथमिकता लापता लोगों का पता लगाना और उन्हें तत्काल राहत प्रदान करना है। उन्होंने बताया कि 187 विदेशी नागरिकों सहित 4,451 लोगों को बचाया जा चुका है। इस बचाव अभियान में स्थानीय अधिकारियों की सहायता के लिए 11 सदस्यीय भारतीय दल शनिवार को नेपाल पहुंचा। भारतीय दूतावास के सूत्रों के अनुसार, चिकित्सा कर्मियों और सुरंग बचाव विशेषज्ञों सहित इस टीम को नेपाल सरकार के अनुरोध पर भेजा गया था।

► अज्ञात शवों की पहचान के लिए डीएनए सुरक्षित रख रहे

► भारत ने सहायता के लिए 11 सदस्यीय बचाव दल भेजा

नेपाल के राष्ट्रपति ने मदद के लिए जताया आभार



रामचंद्र पौडेल

मैं उन्होंने कहा कि नेपाल सरकार

और जनता की ओर से वह राष्ट्रपति मुझुं की चिंता और भारत की ओर से दी गई उदार सहायता के लिए गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। पौडेल ने 26 अगस्त 2026 की आपदा में भारतीय नागरिकों की मौत पर भी दुःख जताया। उन्होंने भारत सरकार और भारतीय जनता के प्रति गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा कि इस त्रासदी में जान गंवाने वाले भारतीयों का दुःख नेपाल भी महसूस करता है।

पुननिर्माण में करीब 5 अरब डॉलर लगेंगे

नेपाल के वित्त मंत्री स्वर्णिम वाग्ले ने कहा कि विनाशकारी बाढ़ के बाद देश के पुनर्निर्माण के लिए 4 अरब डॉलर से 5 अरब डॉलर के बीच की राशि की जरूरत होगी। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ एक अनुमान है। नुकसान और क्षति का आकलन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि नेपाल इस संकट से कई चरणों में निपट रहा है। तत्काल प्राथमिकता उन लोगों को बचाने की है जिन्हें बचाया जा सकता है। इनमें वे लोग भी शामिल हैं जो जलविद्युत परियोजनाओं में फंसे या वहां से निकल नहीं पा रहे हैं। वाग्ले ने कहा कि भारत सरकार और पीएम नरेंद्र मोदी बेहद उदार रहे हैं। जब 2015 में भूकंप आया था, तब मैं सरकार में था। उस समय भी मदद की थी।



स्वर्णिम वाग्ले

229 शवों की नहीं हो सकी पहचान

नेपाल के दक्षिणी मध्य तराई क्षेत्र के चितवन जिले में स्वास्थ्य संस्थानों और नदी तटों से एकत्र किए गए शव/ अवशेष सड़ने की अवस्था में हैं। अब उनकी पहचान करना संभव नहीं है। शेष 229 शवों को हिरासत केंद्रों और स्वास्थ्य संस्थानों में रखा जा रहा है, और डीएनए के नमूने अभी भी एकत्र किए जा रहे हैं।

डब्ल्यूएचओ ने डेढ़ लाख अमेरिकी डॉलर की धनराशि जारी की

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक ने टेक्सास अधीनस्थ गेबेरियस ने बताया कि बाढ़ को लेकर अपनी मदद का दायरा बढ़ा रहा है, जिसके तहत तत्काल 150,000 अमेरिकी डॉलर की धनराशि जारी की गई है।

बाढ़ में बहकर आया बैंक लॉकर, नेपाल में लोगों ने निकाले 92.68 लाख, 29 गिरफ्तार



नेपाल में भीषण बाढ़ के बीच एक बैंक का लॉकर पानी में बहकर धादिंग पहुंच गया। लॉकर लोगों के हाथ लगा तो उन्होंने उसे तोड़ दिया। इसके अंदर रखी नकदी निकालने के दौरान 29 लोग पकड़े गए। पुलिस ने मौके से 92,68,505 रुपए बरामद किए हैं। बाढ़ की शुरुआत रासुवा क्षेत्र में हुई। त्रिशूली नदी का बहाव तेज हो गया। इसी दौरान एक बैंक का लॉकर पानी में बह गया। लॉकर बहता हुआ धादिंग इलाके तक पहुंच गया। इसी दौरान सशस्त्र पुलिस बल और नेपाल पुलिस की संयुक्त गश्ती टीम वहां पहुंच गई। संयुक्त टीम ने मौके पर कार्रवाई की और 29 संदिग्धों को पकड़ लिया। पुलिस ने उनके पास से 9,268,505 नेपाली रुपए बरामद किए। भारतीय संस्था पद्धति में यह रकम 92,68,505 रुपए, यानी करीब 92.68 लाख नेपाली रुपए बैठती है।



19 अप्रैल 2024



27 अगस्त 2026

सैटेलाइट तस्वीरों में दिखा मंजर

हिमालय में आई बाढ़ ने नेपाल-चीन बॉर्डर कॉसिंग का मिटा दिया नामोनिशान

नई सैटेलाइट तस्वीरों में नेपाल-चीन बॉर्डर पर हिमालय में अचानक आई बाढ़ से हुई तबाही का मंजर देखने को मिला है। इन तस्वीरों से पता चलता है कि 26 अगस्त को चट्टान, बर्फ, कीचड़ और पानी के तेज बहाव के कारण रसुनागढ़ी क्रॉसिंग लगभग खत्म हो गई। कर्माशियल सैटेलाइट कंपनी वेंटर ने हाई-रिजॉल्यूशन वाली पहले और बाद की तस्वीरें जारी की हैं। इनमें 19 अप्रैल, 2024 की तस्वीर की तुलना की जाए तो एक दिन बाद, 27 अगस्त, 2026 की तस्वीर से की गई है। पहली तस्वीर में नदी के किनारे एक बड़ी कई मंजिला बॉर्डर सुविधा, सड़कें, पक्के इलाके और अन्य बुनियादी ढांचे दिखाई देते हैं।

बाढ़ के बाद घर, पुल बह गए, दब गए

बाढ़ के बाद की तस्वीर में, वह ज्यादातर ढांचा चट्टान, कीचड़ और मलबे के नीचे दब गया है। प्रभावित इलाके की अन्य सैटेलाइट तस्वीरों में घर, पुल और सड़कों व बुनियादी ढांचे के हिस्से या तो बह गए हैं या दब गए हैं। बाढ़ के बाद की तस्वीरों में रसुनागढ़ी में मुख्य कई मंजिला इमारत और आस-पास की सुविधाएं दिखाई नहीं दे रही थीं।

खबर संक्षेप

नीति आयोग के उपाध्यक्ष का सियाचिन दौरा

नई दिल्ली। नीति आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार लाहिड़ी ने अपनी टीम के साथ



दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र सियाचिन का दौरा किया। उन्होंने सियाचिन बेस कैंप का दौरा करने के साथ ही

उत्तरी ग्लेशियर का हवाई निरीक्षण भी किया। नीति आयोग ने पोस्ट में लिखा, 'सियाचिन: सीमाओं पर साहस का साक्षी।' डॉ. अशोक कुमार लाहिड़ी ने रॉकफ्राफ्ट ट्रेनिंग स्कूल का दौरा किया और सियाचिन वॉर मेमोरियल पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

रुस का यूक्रेन पर हमला, 27 की मौत

कीव। रुस ने एक बार फिर यूक्रेन पर बड़ा हमला किया है। इस हमले में यूक्रेन में 27 लोगों की मौत हुई है



और बड़ी संख्या में लोग घायल हुए हैं। यह हमला राजधानी कीव के पास बुचा जिले में हुआ। रुस के इस

हमले में 50 के करीब घर तबाह हुए हैं। हमले से बड़े पैमाने पर आग भी लगी, जिसकी चपेट में आकर कई घर और रेस्तरां को नुकसान हुआ है। हाल ही में रुस ने यूक्रेन के एक शॉपिंग मॉल पर हमले कर 16 लोगों की जान ली थी।

मध्य एशिया मिशन के लिए पीएम मोदी उज्बेकिस्तान के दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे

व्यापार, निवेश, रक्षा, ऊर्जा और शिक्षा के क्षेत्रों में आपसी सहयोग को और गहरा करेंगे

एजेसी ► नई दिल्ली

पीएम नरेंद्र मोदी उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शवकत मिर्जियोयेव के निमंत्रण पर शनिवार को ताशकंद पहुंचे जहां राष्ट्रपति मिर्जियोयेव ने उनका गले लगकर स्वागत किया। पीएम दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए राष्ट्रपति मिर्जियोयेव के साथ प्रतिनिधिमंडल-स्तर की बातचीत करेंगे। उनका यह दौरा दो दिन का है। इसके बाद 31 अगस्त को वह किर्गिस्तान दौरे पर रहेंगे। पीएम मोदी ने उज्बेकिस्तान के लिए रवाना होने से पहले लिखा कि मैं 29 अगस्त से 1 सितंबर तक उज्बेकिस्तान और किर्गिज की यात्रा पर जा रहा हूं। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में भारत-उज्बेकिस्तान रणनीतिक साझेदारी में काफी प्रगति हुई है। मैं राष्ट्रपति मिर्जियोयेव के साथ व्यापार और निवेश, डिजिटल कनेक्टिविटी, रक्षा, ऊर्जा के क्षेत्रों में सहयोग को और गहरा करने व 'विकसित भारत' और 'यांगी उज्बेकिस्तान' के हमारे साझा विजन को आगे बढ़ाने पर चर्चा करने के लिए उत्सुक हूं। पीएम ने कहा कि मैं ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज में शास्त्री स्मारक और महात्मा गांधी केंद्र का भी दौरा करूंगा, जो हमारे दोनों देशों को जोड़ने वाले गहरे सांस्कृतिक संबंधों का प्रतीक है।

► उज्बेकिस्तान के साथ रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करेगा भारत

► 'विकसित भारत' और 'यांगी उज्बेकिस्तान' के साझा विजन पर भी चर्चा



उज्बेकिस्तान के ताशकंद में सैनिकों को श्रद्धांजलि देते पीएम मोदी

चौथी बार पहुंचे उज्बेकिस्तान

विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) सिबी जॉर्ज ने बताया कि यह पीएम मोदी का उज्बेकिस्तान का चौथा दौरा होगा। इससे पहले उन्होंने 2015 में उज्बेकिस्तान और मध्य एशिया के अन्य देशों का दौरा किया था, और फिर 2016 और 2022 में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) समिट में शामिल होने के लिए वहां गए थे। पिछले कई वर्षों से भारत और उज्बेकिस्तान के बीच द्विपक्षीय और बहुपक्षीय दोनों स्तरों पर बड़े पैमाने पर और फायदेमंद संबंध रहे हैं।

1 सितंबर को जाएंगे किर्गिज

पीएम मोदी एक सितंबर को किर्गिज का भी दौरा करेंगे। उन्होंने कहा कि किर्गिज के राष्ट्रपति सादिर झापारोव के निमंत्रण पर मैं 26वें एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए बिश्केक जाऊंगा। यह सम्मेलन इस महत्वपूर्ण संगठन के 25 साल पूरे होने का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि भारत 2017 से एससीओ का एक सक्रिय सदस्य रहा है। मैं सुरक्षा, संपर्क और अवसर पर आधारित इस क्षेत्र के लिए भारत के विजन को आगे बढ़ाने और आतंकवाद, अलगाववाद व चरमपंथ की बुराई से मुक्त क्षेत्र के लिए काम करने के लिए उत्सुक हूं।

छठे 'वर्ल्ड नोमैड गेम्स' के उद्घाटन समारोह में होंगे शामिल

पीएम मोदी ने कहा कि मैं राष्ट्रपति झापारोव और एससीओ के अन्य नेताओं से मिलने और छठे 'वर्ल्ड नोमैड गेम्स' के उद्घाटन समारोह में शामिल होने के लिए भी उत्सुक हूं। यह मध्य एशिया की समृद्ध जीवंत विरासत का उत्सव है, जिसका भारत बहुत सम्मान करता है। यह यात्रा मध्य एशिया में भारत की रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करेगी, इस क्षेत्र के साथ हमारे सख्तागत जुड़ाव को गहरा करेगी और शांति, स्थिरता व समृद्धि की हमारी साझा कोशिशों को आगे बढ़ाएगी। ये वे मूल्य हैं जो दुनिया के साथ भारत के जुड़ाव के केंद्र में हैं।

31 अगस्त को एससीओ समिट में शामिल होंगे

पीएम मोदी 31 अगस्त को 26वें एससीओ (शंघाई शिखर सम्मेलन) समिट में शामिल होने के लिए बिश्केक जाएंगे। यह एससीओ की 25वीं वर्षगांठ है। इस साल का थीम है 'एससीओ के 25 साल: टिकाऊ शांति, विकास और समृद्धि की ओर साथ-साथ'। बिश्केक में होने वाले एससीओ लीडरशिप समिट के कार्यक्रमों में 31 अगस्त को वेलकम डिनर और अगले दिन समिट की मुख्य बैठक शामिल है, जिसमें पीएम मोदी अपना भाषण देंगे। बिश्केक में समिट के दौरान पीएम मोदी की सदस्य देशों के साथ कई द्विपक्षीय बैठकें भी आयोजित करने की योजना है।

पूर्व सेना प्रमुख नरवणे का पाकिस्तान को दो टूक

‘ऑपरेशन सिंदूर’ भारत के सैन्य तौर-तरीकों में एक बहुत महत्वपूर्ण बदलाव था

एजेसी ► बड़ोदरा

पूर्व सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान के प्रति भारत के से न य दृष्टिकोण में बड़ा बदलाव दिखाया। इस कार्रवाई में सिर्फ सीमा के पास मौजूद आतंकी ठिकानों को निशाना



पूर्व आर्मी चीफ जनरल एमएम नरवणे

नहीं बनाया गया, बल्कि पाकिस्तान के भीतर गहराई में मौजूद उन लोगों और ठिकानों पर भी कार्रवाई की गई, जिन्हें आतंकवादियों का समर्थन करने वाला माना गया। जनरल नरवणे ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर जरूरी कार्रवाई थी। उन्होंने बताया कि इससे पहले उरी और पुलवामा जैसे आतंकी हमलों के बाद भारत की सैन्य कार्रवाई मुख्य रूप से सीमा के नजदीक स्थित आतंकी ठिकानों तक सीमित रही थी।

आतंकियों के लिए कोई जगह सुरक्षित नहीं

पूर्व सेना प्रमुख ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के उस बयान का भी उल्लेख किया, जिसमें आतंकवादियों के खिलाफ उनके इलाके में जाकर कार्रवाई करने की बात कही गई थी। नरवणे के मुताबिक, ऑपरेशन सिंदूर भारत के सैन्य तौर-तरीकों में एक बहुत महत्वपूर्ण बदलाव था। उन्होंने कहा कि आतंकवाद को समर्थन देने वालों के लिए अब कोई सुरक्षित जगह नहीं होने का संदेश दिया गया।

भारत में मुकाबले की पाक से कहीं अधिक क्षमता

जनरल नरवणे ने कहा कि पाकिस्तान की भारत से मुकाबला करने की क्षमता नहीं है। पाकिस्तान के सिर कोक क्षेत्र में बड़ी गतिविधियों और कथित 'ऑपरेशन अबाबील' को लेकर पूछे गए सवाल पर उन्होंने कहा कि इस तरह की गतिविधियां होती रहती हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय सशस्त्र बल हर गतिविधि पर नजर रखते हैं और जरूरत पड़ने पर उचित समय पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। लोग धरारों नहीं।

चीन से जमीन पर सीमा स्पष्ट नहीं

भारत-चीन संबंधों पर जनरल नरवणे ने राष्ट्रपति सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई बातचीत का संक्षेप दिया। उन्होंने कहा कि यह दोनों देशों के बीच सीमा विवाद के व्यापक संदर्भ में होने वाली विशेष प्रतिनिधि स्तर की वार्ता का 25वां दौर था। उन्होंने कहा कि भारत और चीन के बीच सीमा का वास्तविक निर्धारण अब तक नक्शे और जमीन दोनों स्तरों पर स्पष्ट रूप से नहीं हुआ है। इसी कारण दोनों देशों के बीच समय-समय पर विवाद की स्थिति बनती है।

ट्रंप ने की भारतीय मूल के अंतरिक्ष यात्री मेनन की तारीफ

ये महान अमेरिकी, देशभक्त और बहादुर ओवल ऑफिस आने का भी दिया न्योता

एजेसी ► वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर मौजूद भारतीय मूल के नासा अंतरिक्ष यात्री अनिल मेनन और उनके दो साथियों की तारीफ की है। ट्रंप ने उन्हें 'महान अमेरिकी, महान देशभक्त और बहादुर लोग' बताया। साथ ही, राष्ट्रपति ट्रंप ने पृथ्वी पर लौटने के बाद उन्हें ओवल ऑफिस आने का न्योता भी दिया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ह्यूस्टन में नासा के जॉनसन स्पेस सेंटर से हुई बातचीत के दौरान कहा कि आपके साथ होना बहुत सम्मान की बात है। मैं जेसिका, अनिल और जैक का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। ये महान अमेरिकी, महान देशभक्त और बहादुर लोग हैं।



डोनाल्ड ट्रंप अंतरिक्ष यात्रियों से बात करते हुए माइक थामे मेनन

अंतरिक्ष अकादमी बनाने का ऐलान

यह बातचीत राष्ट्रपति ट्रंप की ओर से अमेरिकी अंतरिक्ष अकादमी की योजना की घोषणा के बाद हुई। उन्होंने अंतरिक्ष यात्रियों से कहा कि प्रस्तावित संस्थान को वेस्ट पॉइंट नौसेना अकादमी, तटरक्षक अकादमी और वायुसेना अकादमी के बराबर का दर्जा दिया जाएगा। ट्रंप ने कहा कि उन्हें अपने पहले कार्यकाल के दौरान 'अंतरिक्ष बल' की स्थापना पर गर्व है।

हिमालय पर बढ़ता दबाव आपदाओं को आमंत्रण दे रहा है। जलवायु परिवर्तन ने इस आग में घी का काम किया है। लगातार बढ़ते वैश्विक तापमान की वजह से ग्लेशियर बहुत तेजी से पिघल रहे हैं। ग्लेशियरों के पिघलने से पहाड़ों के ऊपर बर्फ की झीलों में पानी का दबाव अचानक बढ़ जाता है। जब ये प्राकृतिक झीलें टूटती हैं तो नीचे की घाटियों में तबाही का भयानक मंजर देखने को मिलता है। कमी पहाड़ों पर विनाशकारी भूस्खलन, कमी मैदानी इलाकों में भयानक बाढ़, कमी आग उगलती गर्म हवाएं और कमी अकाल जैसा सूखा; यह सब भीतर तक डराने वाला है। यदि प्राकृतिक जल निकासी और वर्षाजल प्रबंधन विकास की गति के साथ नहीं चलते, तो महंगा बुनियादी ढांचा भी बारिश के सामने असहाय दिखाई दे सकता है। हिमालयी शहरों में मैदानों के शहरी विकास मॉडल को ज्यों का त्यों लागू नहीं किया जा सकता। पहाड़ों की अपनी भूगर्भीय और पारिस्थितिक सीमाएं हैं। अनियंत्रित निर्माण, बढ़ता यातायात और प्राकृतिक ढलानों पर दबाव आपदा के जोखिम को बढ़ा सकते हैं। पहाड़ों के लिए विकास का एक अलग मॉडल बनाने की सख्त जरूरत है। पर्यटन को भी सुरंत नियंत्रित करने की आवश्यकता है ताकि पहाड़ों पर उतनी ही भीड़ जाए, जितनी वह आसानी से सहन कर सके। *इन्हीं मुद्दों की पड़ताल करता आजकल का यह खास अंक...*

फड़फड़ाने लगा है भोले का तीसरा नेत्र



विश्लेषण

डॉ. चन्द्र त्रिखा

वरिष्ठ स्तंभकार

हिमालय साफ-साफ चेतावनी दे रहा है कि अगर हमने विकास के नाम पर उसकी अस्मिता से, उसकी पहचान से छेड़छाड़ बंद नहीं की तो पूरे परिवेश के लिए भयावह त्रासदियों से मुक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता। पुल बनाने, रेल मार्ग बिछाने, पर्यटन के नए-नए आयाम एवं नई-नई संभावनाएं तलाश करने के लोभ में हमने निरंतर हिमालय की पहचान पर संकट खड़े किए हैं। चीन को सीमा क्षेत्रों में नए रेलमार्ग बिछाने, नए पुल बनाने, हवाई पट्टियां बनाने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी। सिर्फ सीमा-सुरक्षा के नाम पर पहाड़ों को घाव देने की कोई ऐसी जरूरत नहीं थी जिसके लिए डायनामाइट एवं बारूदी सुरंगों के जाल बिछाए जाते। चीन की सीमावर्ती-चुनौतियों का सामना करने के लिए उसी क्षेत्र में सड़कों, रेलों व अन्य यातायात साधनों के जाल बिछाने की अपातकालीन जरूरत हमें भी महसूस होने लगी। स्थितियां इतनी भयावह हो चुकी हैं कि तथ्यों का सही-सही आकलन कर पाना भी संभव नहीं रहा। चेतावनियां पिछले साढ़े तीन दशकों से चेता रही हैं। वर्ष 1998 में उत्तराखण्ड के मालया क्षेत्र में हुई तबाही, वर्ष 2000 में तिब्बत में आई विनाशकारी बाढ़, वर्ष 2005 में पाश्च-नदी की विभीषिका, जून 2013 की केदारनाथ त्रासदी, 2021 की चमोली त्रासदी, इन सबकी खुली अपेक्षा करते हुए चीन, नेपाल, भारत और तिब्बत आदि में बड़ी-बड़ी योजनाएं बनती रही। अब नई सूचना यह है कि 189 नई झीलें बन चुकी हैं। स्थिति यह है कि अब तिब्बत-नेपाल क्षेत्रों में सैकड़ों की संख्या में झीलें बन चुकी हैं। सभी में ग्लेशियरों के पिछलाव का जल ठाटें मारने लगा है। एक झील में आए प्रकोप ने नवान हिला दिया तो आने वाले ऐसे अनेक संकटों का सामना कैसे होगा, इसके लिए सांझा प्रयास करने की दिशा में सोचा भी नहीं जा रहा है। अभी तो लाशें ढोने, घायलों को बचाने, लापता लोगों की तलाश करने से भी फुर्सत नहीं मिल पा रही।

विकास की अंधी दौड़

जब अमरनाथ का शिवलिंग पिघलने लगा तो कैलाश पर विराजमान भोले शंकर का भी तीसरा नेत्र फड़फड़ाने लगा, इधर नेपाल में विराजे भोले पाशुपतिनाथ भी नाराज होने लगे। सवाल यह है कि इस प्रकोप से बचा कैसे जाए? हिमालय केवल पत्थरों और बर्फ से बना कोई निर्जीव ढांचा नहीं है, बल्कि यह इस उपमहाद्वीप की धड़कन है। सदियों से यह हमारा रक्षक रहा है, जीवनदायिनी नदियों का उद्गम और हमारी आस्थाओं का केंद्र रहा है।आज आए दिन पहाड़ों के दरकरने, बाढ़ल फटने, भूस्खलन और अचानक आई बाढ़ की खबरें हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गई हैं। प्रकृति का यह रौद्र रूप अकारण नहीं है। सब तो यह है कि हमने अपने ही रक्षक पर इतना हमा लाद दिया है कि अब वह हांफने लगा है। हिमालय पर बढ़ता यह दबाव अब सीधे तौर पर विनाशकारी आपदाओं को आमंत्रण दे रहा है। अगर हम गहराई से सोचें तो समझा जाएगा कि पहाड़ों के साथ हमारा रिश्ता अब अद्भुत का नहीं बल्कि उपभोग का हो गया है। विकास की अंधी दौड़ में हमने यह भुला दिया कि हिमालय दुनिया की सबसे युवा पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। जब हम इन नाजुक पहाड़ों का सीना चीरकर चौड़ी सड़कें बनाते हैं, रेलवे के लिए लंबी सुरंगें खोदते हैं और बिजली के लिए विशालकाय बांध बनाते हैं तो हम अनजाने में पहाड़ की नींव को खोखला कर रहे होते हैं।

पर्यावरण के अनुकूल तकनीक अपनाएं



मंथन

दिनेश शर्मा ‘दिनेश’

वरिष्ठ स्तंभकार

प्रकृति और मनुष्य का रिश्ता सदियों पुराना है, किंतु समय के साथ मनुष्य की बदलती जीवन शैली से बदली प्राकृतिक परिस्थितियों से यह रिश्ता एक नाजुक मोड़ पर आकर खड़ा हो गया है। आज मानव और प्रकृति दोनों का ही अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। पिछले कुछ वर्षों में हमने अनेक भयानक प्राकृतिक आपदाओं का सामना किया है। कभी पहाड़ों पर विनाशकारी भूस्खलन, कभी मैदानी इलाकों में भयानक बाढ़, कभी आग उगलती गर्म हवाएं और कभी अकाल जैसा सूखा; यह सब भीतर तक डराने वाला है। यह कोई कुदरती कहर नहीं है बल्कि प्रकृति की गंभीर चेतावनी है जो हमें चीख-चीख कर कह रही है कि अब रुक जाओ! इन बढ़ती आपदाओं के पीछे का सबसे बड़ा कारण हमारा अंधा और अनियंत्रित विकास है, जिसने पर्यावरण की कीमत पर सिर्फ कंक्रीट के जंगल खड़े किए हैं। आज समूची मानव जाति के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर विकास और पर्यावरण के बीच एक स्थायी संतुलन कैसे कायम किया जाए।

हम समय के पहिए को नहीं रोक सकते और न ही विकास की प्रक्रिया से मुंह मोड़ सकते हैं। बढ़ती आबादी के लिए घर, स्कूल, अस्पताल, चौड़ी सड़कें और रोजगार के नए साधन मुहैया कराना किसी भी सरकार और समाज की प्राथमिक जिम्मेदारी है। जब हम विकास की अंधी दौड़ में पहाड़ों को डायनामाइट से उड़ाकर सड़कें बनाते हैं, नदियों के स्वाभाविक रास्तों को रोककर ऊंचे बांध बनाते हैं या हरे-भरे जंगलों को रातों-रात साफ करके कारखाने लगाते हैं तो हम अनजाने में ही अपने विनाश की कहानी लिख रहे होते हैं। विकास का मतलब कभी भी विनाश नहीं हो सकता। हम एक पेड़ काटते हैं तो सिर्फ लकड़ी का एक टुकड़ा नहीं गिरता, बल्कि बेजुबान पक्षियों का घर उजड़ता है, शीतल छांव खत्म होती है और वह जड़ें मर जाती हैं जो मिट्टी को कसकर बांधे रखती हैं। परिणामस्वरूप जरा-सी



हमें एक ऐसा मार्ग खोजना है, जहां नदियां भी अपने स्वच्छ स्वरूप में बहें और कल-कारखाने भी चलें, जहां पहाड़ भी अपनी जगह अडिग रहें और उन तक पहुंचने के सुरक्षित रास्ते भी बनें, जहां सुबह चिड़ियों की चहचहाहट भी गुंजे और तकनीक का सकारात्मक इस्तेमाल भी हो।

इसे विज्ञान की भाषा में पर्यावरण की वहन क्षमता कहते हैं। अगर किसी पहाड़ या जंगल की क्षमता सौ लोगों का बोझ उठाने की है और हम अपने लालच में वहां हजार लोगों के लिए बड़े-बड़े होटल और सड़कें बना दें तो कुदरत का संतुलन बिगड़ना और आपदा आना तय है।

हमें पर्यावरण के अनुकूल तकनीक का इस्तेमाल करना चाहिए। उदाहरणतया, भवन निर्माण में ऐसी सामग्री का उपयोग हो जो कम से कम कार्बन उत्सर्जन करे और ऊर्जा की अधिकतम बचत करे। हमें कोयले और पेट्रोलियम जैसे जीवाश्म ईंधनों पर अपनी निर्भरता तेजी से कम करनी

वास्तव में उस जमीन और प्रकृति के सबसे करीब रहते हैं। हमें एक ऐसा मार्ग खोजना है जहां नदियां भी अपने स्वच्छ स्वरूप में बहें और कल-कारखाने भी चलें, जहां पहाड़ भी अपनी जगह अडिग रहें और उन तक पहुंचने के सुरक्षित रास्ते भी बनें, जहां सुबह चिड़ियों की चहचहाहट भी गुंजे और तकनीक का सकारात्मक इस्तेमाल भी हो। अगर अब भी हमने प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाना जीना नहीं सीखा तो आने वाले समय में प्राकृतिक आपदाएं हमारा वो सब कुछ निरदया से छीन लेंगी जिसे हमने विकास के नाम पर बड़े अहंकार से खड़ा किया है।

इंसानों ने रची यह त्रासदी

डायनामाइट के धमाके सिर्फ चट्टानों को नहीं तोड़ते बल्कि वे पहाड़ के उस प्राकृतिक संतुलन को भी चकनाचूर कर देते हैं जो लाखों सालों की खानोशी में बना है। पहाड़ों के सीने में सुराख करके जो मलबा निकाला जाता है, उसे अक्सर बिना किसी योजना के नदियों के किनारे डाल दिया जाता है। बरसात के दिनों में यही मलबा नदियों के प्रवाह को रोकता है और फिर नदियां अपना रास्ता बदलकर बरिसियों की ओर रुख कर लेती हैं। यह कोई प्राकृतिक आपदा नहीं है, यह पूरी तरह से इंसानों द्वारा रची गई एक त्रासदी है जिसमें हमने खुद ही विनाश के बीज बोए हैं। इसके साथ ही पर्यटन के नाम पर जो भीड़ हम पहाड़ों की तरफ धकेल रहे हैं, वह भी इस समस्या का एक बहुत बड़ा कारण है। छुट्टियां मगाने के लिए पहाड़ों का रुख करना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन हर जगह की अपनी एक वहन क्षमता होती है जिसे हम 'केरिंग कैपेसिटी' कहते हैं। आज पहाड़ों के छोटे-छोटे कस्बों में कंक्रीट के विशाल होटलों का जंगल उग आया है। जहां कभी दलान पर देवदार और बुरांश की अपनी एक अलग कदर थी, वहां आज बहुमंजिला इमारतें खड़ी हैं। ये भारी भरकम इमारतें पहाड़ की दलान पर एक ऐसा बोझ हैं जिसे उठाने के लिए वह बना ही नहीं है। इसके अलावा पर्यटकों की भीड़ अपने साथ जो प्रदूषण और प्लास्टिक का कचरा लाती है, वह नदियों और प्राकृतिक जल स्रोतों का गला घोट रहा है।

हिमालय के पिघलते ग्लेशियर

जलवायु परिवर्तन ने इस आग में घी का काम किया है। लगातार बढ़ते वैश्विक तापमान की वजह से हिमालय के ग्लेशियर बहुत तेजी से पिघल रहे हैं। ग्लेशियरों के पिघलने से पहाड़ों के ऊपर बर्फ की झीलें में पानी का दबाव अचानक बढ़ जाता है। जब ये प्राकृतिक झीलें टूटती हैं तो नीचे की घाटियों में तबाही का ऐसा मंजर देखने को मिलता है जिसकी कल्पना भी इंसान की रूढ़ कंपा देती है। बारिश के पैटर्न में भी भयानक बदलाव आया है। अब हफ्तों तक रिमड्रिम बारिश होने के बजाय कुछ ही घंटों में इतना पानी बरस जाता है कि पहाड़ उसे सोख नहीं पाते और मिट्टी कटकर नीचे बहने लगती है। यही वजह है कि बाढ़ल फटने और अचानक भयानक बाढ़ आने की घटनाएं आम हो गई हैं। जोशीमठ जैसी घटनाएं कोई अचानक हुआ हादसा नहीं थी बल्कि ये दशकों से पहाड़ों पर किए जा रहे अत्याचार का दुःखद परिणाम हैं। जब जमीन धसती है, पुराने घरों में दरारें आती हैं और लोगों को अपने पुरखों के घर छोड़कर रातों-रात राहत शिविरों में जाना पड़ता है तो वह सिर्फ एक मौलौलिक घटना नहीं होती। वह एक गहरा मानवीय संकट होता है। लोग अपनी आंखों के सामने अपनी जीवन की पूंजी, अपनी यादें और अपना भविष्य मिटते हुए देखते हैं। पहाड़ों में रहने वाले सीधे-साढ़े लोग विकास की इस मनमानी कोमत को सबसे ज्यादा चुका रहे हैं।

नियोजित रूप से किया जाए शहरीकरण



स्वरूप

विनीत पाण्डेय

वरिष्ठ पत्रकार

शहर केवल इमारतों, सड़कों और बाजारों का समूह नहीं होते, वे किसी देश की आर्थिक गति, सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र के कई बड़े शहर इसके प्रत्यक्ष फलदायक हैं। देश के प्रमुख कॉरपोरेट केंद्रों में गिना जाने वाला गुरुग्राम अत्याधुनिक कार्पोरालों, गगनचुंबी इमारतों और एक्सप्रेस-वे के कारण आधुनिक शहरी विकास का चेहरा दिखाई देता है, लेकिन भारी वर्षा के दौरान सड़कों में दूसरे महानगरों में जलभराव उसकी दूसरी तस्वीर प्रस्तुत करता है। यह विरोधाभास बताता है कि चमकदार निर्माण और वास्तविक शहरी मजबूती दो अलग-अलग बातें हैं। यदि प्राकृतिक जल निकासी और वर्षाजल प्रबंधन विकास की गति के साथ नहीं चलते, तो महंगा बुनियादी ढांचा भी बारिश के सामने असहाय दिखाई दे सकता है। यही स्थिति अलग-अलग रूपों में दूसरे महानगरों में भी सामने आती रही है। मुंबई ने बार-बार भीषण वर्षा और शहरी बाढ़ का सामना किया है। समुद्र तटीय स्थिति, अत्यधिक वर्षा और घनी आबादी के साथ प्राकृतिक जल निकासी तंत्र पर दबाव इस महानगर की संवेदनशीलता बढ़ाता है। इन उदाहरणों का अर्थ यह नहीं कि प्रत्येक शहरी बाढ़ केवल अतिक्रमण या खराब नियोजन का परिणाम

है। जलवायु परिवर्तन के कारण कम अवधि में अत्यधिक वर्षा जैसी घटनाओं की चुनौती भी बढ़ रही है। यही नई जलवायु वास्तविकता शहरों से अधिक मजबूत नियोजन की मांग करती है। यदि बारिश का स्वरूप बदल रहा है तो दशकों पुराने वर्षाजल निकासी मानकों के भरोसे भविष्य के शहर नहीं चलाए जा सकते। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली इस चुनौती का एक दूसरा पक्ष दिखाती है। एक ओर मानसून में जलभराव और यमुना के बढ़ते जलस्तर से बाढ़ का खतरा सामने आता है, तो दूसरी ओर गर्मियों में अत्यधिक तापमान और



विकास की असली कसौटी गगनचुंबी इमारतों की ऊंचाई नहीं, बल्कि यह होगी कि शहर असाधारण बारिश, बाढ़, भीषण गर्मी और अन्य आपदाओं के बीच अपने नागरिकों को कितना सुरक्षित रख पाता है। शहर यदि प्रकृति के साथ विकसित होंगे, तभी शहरीकरण वास्तव में सतत विकास का माध्यम बन सकेगा।

हीट वेव गंभीर संकट बन जाती है। अर्थात एक ही शहर को बाढ़ और भीषण गर्मी दो विपरीत प्रकार की जलवायु आपदाओं के लिए तैयार रहना पड़ सकता है। इसलिए अब शहरी आपदा प्रबंधन किसी एक संभावित संकट के आधार पर नहीं, बल्कि बहु-आपदा दृष्टिकोण से तैयार किया जाना चाहिए। बढ़ता शहरी तापमान स्वयं एक गंभीर चुनौती है। हरित क्षेत्रों में गिरावट, पथर केंडीशनरों का बढ़ता इस्तेमाल और वाहनों तथा उद्योगों से निकलने वाली ऊष्मा स्थिति को और गंभीर बनाती है। पहाड़ी शहरों की चुनौती इससे अलग, लेकिन उतनी ही गंभीर है। जोशीमठ में भू-ध्रंसव

जलवायु परिवर्तन की समस्या एक गंभीर वैश्विक संकट है। यह संकट अभी हमें चाहे ना दिखाई दे लेकिन मानव सभ्यता के लिए यह एक गंभीर चुनौती है। प्रकृति हमेशा से मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र और पालक रही है, लेकिन हाल के वर्षों में हमने इसका रौद्र रूप भी बार-बार देखा है। कभी जंगलों में धधकती आग बेजुबान जानवरों को लील जाती है तो कभी समुद्र में उठने वाले भयंकर तूफान पल भर में तटीय बस्तियों को उजाड़ देते हैं। यह सब देखकर मन में एक सहज सा सवाल उठता है कि क्या यह सब बस यूं ही हो रहा है या इसके पीछे हमारी अपनी कोई भूल है। इससे भी बड़ा यह सवाल मन में बार-बार उठता है कि क्या जलवायु परिवर्तन आने वाले समय में हमारे लिए इससे भी बड़ी और



चुनौती

डॉ. विजेंद्र कुमार

स्वतंत्र स्तंभकार

भयंकर विपत्तियां ला सकता है। इस सवाल का जवाब ढूंढने के लिए हमें भविष्य के किसी वैज्ञानिक मॉडल को देखने या बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं है। हमारे आसपास का बदलता हुआ मौसम खुद इसका जीता जागता गवाह है। जिस जलवायु परिवर्तन को हम कुछ दशक पहले सिर्फ विज्ञान की भारी-भरकम किताबों या वैश्विक सम्मेलनों का विषय मानते थे, वह आज हमारे घर के दरवाजे तक दस्तक दे चुका है। बेमौसम की भारी बारिश, सदियों के महीनों में कम होती ठंड, और गर्मियों में झूलसा देने वाली लंबी लू, ये सब प्रकृति की खुली चेतावनी हैं। जब कोई आपदा आती है तो वह सिर्फ ईंट-पत्थर की इमारतें या कंक्रीट के पुल नहीं तोड़ती, बल्कि वह इंसानों के संजोए हुए सपने, उनकी जीवन भर की गाढ़ी कमाई और उनके बच्चों का भविष्य भी उजाड़ देती है। वैज्ञानिक लगातार पूरी दुनिया को चेता रहे हैं कि पृथ्वी का तापमान जिस तेजी से बढ़ रहा है, वह बहुत ही अस्वामाविक और खतरनाक है। हमारे द्वारा किए जा रहे अंधाधुंध औद्योगीकरण, बेतहाशा जंगलों की कटाई, पहाड़ों के सीने को चीरकर किए जा रहे अनियोजित निर्माण और लगातार बढ़ते कार्बन उत्सर्जन ने धरती के प्राकृतिक संतुलन को बुरी तरह से बिगाड़ दिया है। अगर यही स्थिति बनी रही तो इसमें कोई संदेह नहीं कि आने वाला समय वाकई बहुत डरावना होगा। जैसे-जैसे पृथ्वी और गर्म होंगे, ग्लेशियर बहुत तेजी से पिघलेंगे और समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा। इसका सीधा मतलब यह है कि दुनिया भर के कई तटीय शहर, महानगर और छोटे-छोटे द्वीप हमेशा के लिए पानी में समा सकते हैं। जरा सोचिए, जब लाखों करोड़ों लोग एक साथ बेघर होंगे तो उन्हें हम कहा बसाएंगे। आने वाले समय में प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता और उनकी संख्या दोनों में बेतहाशा वृद्धि होने की पूरी आशंका है। जो चकवाती तूफान पहले दस या बीस सालों में एक बार आते थे, वे अब हर साल और भी ज्यादा ताकतवर होकर तटों से टकरा सकते हैं। ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने के कारण शुरुआत में तो नदियों में भयानक बाढ़ आएगी, जो अपने रास्ते में आने वाले हर गांव और शहर को डुबो देगी, लेकिन बाद में जब ये बर्फ के पहाड़ पूरी तरह खत्म हो जाएंगे तो वही सदानीरा नदियां सूख जाएंगी। इससे पाने के पानी और सिंचाई के लिए एक ऐसा भयंकर संकट खड़ा होगा जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। जलवायु परिवर्तन केवल एक पर्यावरण का या विज्ञान का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह एक बहुत बड़ा मानवीय, सामाजिक और आर्थिक संकट है। जब एक जगह का तापमान बढ़ता है तो उसका अरप पुरी दुनिया के मौसम चक्र पर पड़ता है। यह एक भयंकर चेन रिएक्शन की तरह है। जंगलों में लगने वाली भीषण आग की घटनाएं इसका एक बड़ा उदाहरण हैं। जब जंगल जलते हैं तो न सिर्फ लाखों बेजुबान जानवर तड़प-तड़प कर मारे जाते हैं, पेड़-पौधों की दुर्लभ प्रजातियां नष्ट हो जाती हैं, बल्कि भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड वापस वातावरण में घुल जाती है, जो धरती की गर्मी को और ज्यादा बढ़ा देती है। इसी तरह, आर्कटिक जैसे ठंडे इलाकों में सदियों से जमी हुई बर्फ के पिघलने से वहां दबी हुई मिथेन जैसी खतरनाक गैसें बाहर आ सकती हैं। अगर ऐसा हुआ तो ग्लोबल वार्मिंग इतनी तेजी से बढ़ेगी कि उसे रोकना फिर इंसान की तकनीक और पश के बाहर हो जाएगा। हमारे देश के लिए तो यह खतरा और भी बड़ा है। एक तरफ हमारे पास विशाल हिमालय है तो दूसरी तरफ एक बहुत लंबी तटरेखा। अगर जलवायु परिवर्तन के कारण मालमसून का चक्र इसी तरह बिगड़ता

जब कोई आपदा आती है तो वह सिर्फ ईंट-पत्थर की इमारतें या कंक्रीट के पुल नहीं तोड़ती, बल्कि वह इंसानों के संजोए हुए सपने, उनकी जीवन भर की गाढ़ी कमाई और उनके बच्चों का भविष्य भी उजाड़ देती है। पृथ्वी का बढ़ रहा तापमान बहुत ही अस्वामाविक और खतरनाक है।

रहा, कभी बहुत ज्यादा बारिश या कभी मालमसून सूखा पड़ा तो हमारी खाद सुरक्षा पर सीधा प्रहार होगा। पहाड़ जो कभी अपनी स्थिरता के लिए जाने जाते थे, वे आज दरकर रहे हैं। हमने अपने स्वार्थ में अंधी दौड़ लगाते हुए प्रकृति को बहुत गहरे घाव दिए हैं, लेकिन प्रकृति एक मां की तरह है, जिसमें खुद की और अपने बच्चों को ठीक करने की अद्भुत क्षमता होती है, बशर्ते हम उसे ऐसा करने का मौका और समय दें। हमें एक ऐसा रास्ता चुनना होगा जिसमें तबकी तो हो, लेकिन जंगलों और नदियों की बलि देकर नहीं। जलवायु परिवर्तन कोई ऐसी आसमानी आपदा नहीं है जो किसी दूसरे यह से अचाक हमारे ऊपर आ गिरी हो। यह हमारी अपनी पैदा की हुई विपत्ति है। इसलिए इसका समायधान भी हमें ही करना होगा। हम आज जान जाएं, अपने लातल को किनारे रखकर प्रकृति के साथ तारनम बिनाकर चलना सीख लें तो शायद हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित, हरी-भरी और खूबसूरत दुनिया सौंप सकें।

ने पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण, भूगर्भीय संवेदनशीलता और विकास की वहन क्षमता को लेकर व्यापक बहस को जन्म दिया। हिमालयी शहरों में मैदानों के शहरी विकास मॉडल को ज्यों का त्यों लागू नहीं किया जा सकता। पहाड़ों की अपनी भूगर्भीय और पारिस्थितिक सीमाएं हैं। अनियंत्रित निर्माण, बढ़ता यातायात और प्राकृतिक ढलानों पर दबाव आपदा के जोखिम को बढ़ा सकते हैं। इन समस्याओं का समाधान विकास रोकना नहीं, बल्कि विकास को अधिक समझदार बनाना है। सबसे पहले शहरी मास्टर प्लान में जलवायु

परिवर्तन और आपदा जोखिम को केंद्रीय स्थान देना होगा। भविष्य में आवश्यकता ऐसे शहर बनाने की है जो केवल बड़े और आधुनिक न दिखें, बल्कि सुरक्षित, समावेशी, पर्यावरण-संवेदी और आपदा-रोधी भी हों। विकास की असली कसौटी गगनचुंबी इमारतों की ऊंचाई नहीं, बल्कि यह होगी कि शहर असाधारण बारिश, बाढ़, भीषण गर्मी और अन्य आपदाओं के बीच अपने नागरिकों को कितना सुरक्षित रख पाता है। शहर यदि प्रकृति के विरुद्ध नहीं, प्रकृति के साथ विकसित होंगे, तभी शहरीकरण वास्तव में सतत विकास का माध्यम बन सकेगा।

हनुमानताल में गूंजा समरसता का संदेश: संतों का आशीर्वाद, सर्वसमाज की भागीदारी और हजारों लोगों का मिलन बना आकर्षण, एक-दूसरे को कजलियां देकर दिया सद्भाव का संदेश, लोक संस्कृति और पारंपरिक व्यंजनों ने मोहा मन

कजलियों के रंग में रंगी संस्कारधानी

हरिभूमि, जबलपुर।

कजलियों के बहाने संस्कारधानी ने रविवार को सामाजिक समरसता की ऐसी तस्वीर रची, जिसमें जाति-वर्ग की सीमाएं पीछे छूट गईं और ‘सब सबको जाने, सब सबको माने’ का भाव सामने आया। देव सरोवर हनुमानताल में समरसता सेवा संगठन के संयोजन में हुए ‘संस्कारधानी समरसता कजलियां महोत्सव’ में संतों का आशीर्वाद, जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी और सर्वसमाज की हजारों की भागीदारी रही। अलग-अलग समाजों के लोग अपने घरों में बोई कजलियां लेकर पहुंचे और पूजन के बाद एक-दूसरे को कजलियां भेंट कर शुभकामनाएं दीं।

महोत्सव में संतों ने कहा कि समरसता भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भारतीय समाज की शक्ति उसकी एकता और सहिष्णुता में है। कजलियां जैसे पारंपरिक पर्व समाज को जोड़ने और आपसी सद्भाव को मजबूत करने का माध्यम हैं। लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह ने कहा कि जबलपुर में बना यह समरसता का इतिहास देशभर में संदेश देगा। उन्होंने आयोजन को सामाजिक एकता की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। समरसता सेवा संगठन के संस्थापक एवं जेडीए अध्यक्ष संदीप जैन ‘गुड्डा’, अध्यक्ष पवन पांडे और सचिव मनोज सेठ ने संतों के साथ कन्याओं का पूजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां नर्मदा पूजन और दीप प्रज्वलन से हुआ। वेद मंत्रोच्चार के बीच कजलियों का पूजन किया गया। इसके बाद संतों का पूजन-अर्चन कर आशीर्वाद लिया गया।



संतों से लेकर जनप्रतिनिधियों तक जुटे

महोत्सव में जगतगुरु नृसिंह पीठाधीश्वर डॉ. नरसिंहदेवाचार्य जी, स्वामी गिरिशानंदजी, महामंडलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद जी, स्वामी राजारामाचार्य जी, स्वामी पागलनन्द जी, स्वामी कालीनन्द जी, ब्रह्माकुमारी भावना बहन जी, महंत राजेश्वरानंद जी, पं. वासुदेव शास्त्री, पं. रोहित दुबे और पं. देवेंद्र त्रिपाठी सहित संत-महंत उपस्थित रहे। महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नु, विधायक अभिलाषा पांडे और नीरज सिंह, भाजपा जिला अध्यक्ष रत्नेश सोनकर, नगर निगम अध्यक्ष रिकु विज, जेडीए उपाध्यक्ष प्रशांत केसरवानी, डॉ. जितेंद्र जामदार, शरद अग्रवाल और पंकज दुबे सहित राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक और औद्योगिक क्षेत्र के गणमान्यजन शामिल हुए।

कजरी-आल्हा से नर्मदा अष्टक तक

सांस्कृतिक प्रभारी मनीष अग्रवाल की सन्निधि में मां नर्मदा अष्टक और स्वस्ति वाचन की समवेत प्रस्तुति हुई। नर्मदा पर आधारित नृत्य-नाटिका, कजरी, आल्हा, लोकगीत और पारंपरिक नृत्यों ने आयोजन को बुंदेली रंग दिया। देवी अग्रवाल (मंडला), श्याम बैरागी (बड़ा मलहरा), सविता मिश्रा, नरेंद्र राज, अभिषेक बर्मन, रञ्जन सूर्यवंशी और गोलू अहिरवार ने अपनी प्रस्तुतियों से समां बांधा।

कजलियां ही नहीं, हर समाज का स्वाद भी साथ

महोत्सव का कजलियां भोज भी सामाजिक सहभागिता का उदाहरण बना। अग्रवाल समाज ने गुड़ की जलेबी, कायस्थ समाज ने इंदौरी पोहा, कसौंधन वैश्य समाज ने महीबरा, बारी समाज ने स्वीट कॉर्न-रायता, सुदर्शन समाज ने काले चने व आलू कचमूर सलाद, गुरु सिंध सभा ने चाच, युवा रजक समाज ने पानी, हप्पी वंशी क्षत्रीय ताम्रकार समाज ने सगौड़ा चाट, वैष्णव देवी यात्रा सेवा समिति ने वेंज पुलाव-पंजी, पंजाबी महासंघ ने सेवेई खीर, नामदेव महिला विकास परिषद व भागव ब्राह्मण महिला समिति ने फुल्की तथा चौरसिया समाज ने मुखवास-पान उपलब्ध कराया।

चाइल्ड जोन में बच्चों का उत्साह, किन्नर समाज भी पहुंचा

बच्चों के लिए बनाए गए चाइल्ड जोन में झूलों और मनोरंजन का झंझाम रहा। 12 से 18 वर्ष के बच्चों के लिए निबंध प्रतियोगिता तथा महिलाओं के लिए पूजा थाली सजाओ, वेशभूषा और रखी सृजन प्रतियोगिताएं हुईं। भारत माता, मां शबरी, बाल हनुमान, अर्धनारीश्वर, मां काली और क्रांतिकारियों की वेशभूषा में बच्चों ने आकर्षण बढ़ाया। चयनित प्रतिभागियों को आगामी कार्यक्रम में पुरस्कृत किया जाएगा। परंपरा निभाते हुए हीरा बाई के नेतृत्व में किन्नर समाज भी कजलियों का जुलूस लेकर महोत्सव में पहुंचा और शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में भारत सिंह यादव, इंद्रमोहन भाटिया, कैलाश चंद्र जैन, गुलशन मखीजा, एड. मनीष मिश्रा, श्याम शाहनी, करतार सिंह बठिंजा, डॉ. सुनील मिश्रा, सुरेश आसवानी, जगदीश चोहटेल, सुधीर मागचंदनी, बसंत घोड़वाल, आशीष कोठारी, सुशील सोनी, प्रतुल श्रीवास्तव, राजेश अग्रवाल, वीरेन्द्र साहू, विजय भावे, चंद्रप्रकाश श्रीवास्तव, मुकेश साहू, रविशंकर साहू, श्याम बिहारी चोद्धा, रमेश प्रजापति, विनय केसरवानी, प्रकाश चौरसिया, प्रणीत वर्मा, रामबाबू विश्वकर्मा, रमेश विश्वकर्मा, सुनील श्रीवास्तव, अमीरचंद सोनकर, प्रकाश राठौर, संतोष नेमा, राजकुमार रजक, विवेक रजक, डॉ. वाणी अहलुवालिया, राजेश जैन पिंकी, विवेक अग्रवाल, नितिन बरसैया, प्रदीप चौहान, सुशील सोनी, पंकज गौरव, श्याम सुहाने, मुकेश जैन, मुकेश अग्रवाल, राकेश खंडेलवाल, संजय गोस्वामी, अनिल त्रिवेदी, प्रकाश साहा, पुष्पराज पिल्ले, अनिल जैन (गुड्डा), विवेक चौधरी, सुरेश सराफ नवरूप, एड. सुनील सोनी, मोहन श्रीवास, अमित मेहरा, नरेंद्र गुप्ता लालू, सुजीत सौंधिया, मोहन कश्यप, अशोक नामदेव, उमेश पारवानी, अनूप खंडेलवाल, कमलेश नाहटा, भीमलाल गुप्ता और संतोष शास्त्री सहित हजारों लोगों ने सहभागिता की।

आयुष्मान भारत योजना के तहत गैलेक्सी सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में हुआ निःशुल्क उपचार

हृदय में छिपे दुर्लभ ट्यूमर को 5 घंटे की सर्जरी में निकाला, नौशाद को मिली नई जिंदगी



ऑपरेशन के बाद विशेषज्ञ चिकित्सकों की निगरानी में उपचार एवं देखभाल के पश्चात करीब एक सप्ताह में मोहम्मद नौशाद स्वस्थ होकर घर लौट गए। इस उपचार की

विशेष उपलब्धि यह रही कि पूरी जटिल हृदय सर्जरी आयुष्मान भारत योजना के तहत निःशुल्क की गई, जिससे मरीज के परिवार को बड़ी आर्थिक राहत मिली। मरीज एवं परिजनो ने सफल उपचार के लिए डॉ. अखिलेश दुबे, डॉ. प्रीतम सांगवान, डॉ. विवेक गुप्ता सहित पूरी चिकित्सकीय टीम का आभार व्यक्त किया। गैलेक्सी सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, जबलपुर आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं एवं विशेषज्ञ टीम के साथ जटिल हृदय रोगों के उपचार के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रकाशोत्सव पर आज निकलेगा नगर कीर्तन

जबलपुर। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रकाशोत्सव के अवसर पर गुरुद्वारा गुरुवाणी प्रचार सभा, हाथीताल से आज रविवार सुबह 6 बजे से 8.30 बजे तक नगर कीर्तन निकाला जाएगा। नगर कीर्तन के समापन के बाद कीर्तन दरबार एवं गुरु का लंगर आयोजित होगा। इसके बाद दोपहर 2 बजे तक निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया जाएगा। शिविर में नेत्र रोग, कार्डियोलॉजी, आर्थोपेडिक एवं गायनेकोलॉजी विशेषज्ञ चिकित्सक मरीजों की जांच कर आवश्यक परामर्श देंगे। वहीं रात 8 बजे से कीर्तन दरबार सजेगा। सोमवार, 31 अगस्त को गुरुद्वारा परिसर में दिनभर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाशोत्सव श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया जाएगा। गुरुद्वारा सभा के प्रधान हरदेव सिंह, सचिव फुलवीर सिंह फूल एवं आयोजन समिति ने साथ संगत से नगर कीर्तन एवं प्रकाशोत्सव के सभी कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर गुरु घर की सुधियां प्राप्त करने की अपील की है।

मटकी सजाओ प्रतियोगिता में 51 प्रतिभागियों ने दिखाई रचनात्मकता

जबलपुर। सनातन धर्म महासभा जबलपुर के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पूर्व आयोजित 10 दिवसीय कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत घमापुर स्थित गोपाल मंदिर में श्रीकृष्ण मटकी सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ‘श्रीकृष्ण एक, रूप अनेक’ विषय पर आयोजित प्रतियोगिता में 51 प्रतिभागियों ने आकर्षक एवं रंग-बिरंगी मटकियां सजाकर अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मटकियों को श्रीराधाकृष्ण, बाल गोपाल, माखन चोर, जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा मैया के विभिन्न स्वरूपों के साथ मोरपंख, फूल-पत्तियों, रंग-बिरंगे मोतियों एवं अन्य सजावटी सामग्री से मनोहारी रूप दिया गया। उद्घाटन अवसर पर जगतगुरु नरसिंह पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी नरसिंह देवाचार्य जी महाराज ने कहा कि गोपियों की मटकी में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और स्नेह



माखन के रूप में भरा रहता है। उन्होंने कहा कि बच्चों को धर्म, अध्यात्म और संस्कारों से जोड़ने के लिए ऐसी प्रतियोगिताएं प्रभावी माध्यम हैं। प्रतियोगिता का संयोजन सुनीता चावला, सोनल सेठी, नंदिता महाजन, कविता दुबे, डॉ. वाणी अहलुवालिया एवं नेहा जेठा ने

किया। शुभारंभ अवसर पर गोपाल मंदिर के महंत श्रीकृष्ण राज आराध्य, अध्यक्ष श्याम साहनी, गुलशन मखीजा, मुन्ना पांडे, शरद काबरा, प्रवेश खेड़ा, मनोज शर्मा, जगदीश साहू, रत्नेश मिश्रा, जितिन नारंग, अभिषेक आराध्य, राजेश सेठी एवं विध्वंश भापकर सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी, मातृशक्ति एवं बच्चे उपस्थित रहे। सनातन धर्म महासभा द्वारा 30 अगस्त को दोपहर 2 बजे श्रीकृष्ण मंदिर, गोरखपुर में सनातन श्रीकृष्ण चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इसमें तीन आयु वर्गों के बच्चे एवं बच्चियां सहभागिता करेंगे।

► 24 अगस्त को ही सत्यापित किए थे नोजल, नाप-तौल निरीक्षक को नोटिस ► संजीवनी क्लीनिक में गायब मिला रजिस्टर का रिकॉर्ड, सभी कर्मचारियों का वेतन रोकने के निर्देश

पेट्रोल पंप के 3 नोजल कम दे रहे थे पेट्रोल, कलेक्टर ने मौके पर सील कराए

जबलपुर। मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत शनिवार को रांझी क्षेत्र में निकले कलेक्टर राघवेंद्र सिंह के निरीक्षण में पेट्रोल पंप से लेकर संजीवनी क्लीनिक तक कई गड़बड़ियां सामने आईं। पनेहरा पेट्रोल पंप पर जांच के दौरान तीन नोजल से निर्धारित मात्रा से कम पेट्रोल निकलता मिला। कलेक्टर ने तीनों नोजल तत्काल सील करा दिए। खास बात यह रही कि इन नोजलों का महज पांच दिन पहले, 24 अगस्त को ही सत्यापन किया गया था। कलेक्टर ने नाप-तौल निरीक्षक सचिन कुमार सोनी को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

वहीं गणेशगंज रांझी स्थित संजीवनी क्लीनिक में मरीजों के रिकॉर्ड से जुड़े रजिस्ट्रों में गड़बड़ी मिली। बीच का रिकॉर्ड गायब था और प्रविष्टियों के क्रमांक भी सही नहीं मिले। कलेक्टर ने क्लीनिक में पदस्थ सभी कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस देने और उनका वेतन रोकने के निर्देश दिए। कलेक्टर राघवेंद्र सिंह ने नगर निगम आयुक्त रामप्रकाश अहिरवार और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. आयुष जाखड़ के साथ रांझी क्षेत्र में गार्बेज ट्रांसफर स्टेशन, तहसील कार्यालय, पनेहरा पेट्रोल पंप, विद्युत सेवा केंद्र और संजीवनी क्लीनिक का निरीक्षण किया।

5 लीटर के जार से खुद कराई जांच

पनेहरा पेट्रोल पंप पर कलेक्टर ने पेट्रोल-डीजल की डिस्पेंसिंग मशीनों का कट-ऑफ सिस्टम, जीरो रीसेट और डिलीवरी रेट जांचा। उन्होंने अपने सामने 5 लीटर के मानक मापक जार में पेट्रोल भरवाकर मशीन की रीडिंग और वास्तविक मात्रा का मिलान कराया। पेट्रोल-डीजल की शुद्धता की भी जांच कराई गई। तीन नोजल से पेट्रोल की मात्रा कम मिलने पर उन्हें तत्काल सील कर दिया गया। कलेक्टर ने स्टॉक रजिस्टर, दैनिक बिक्री रिकॉर्ड और नाप-तौल संबंधी दस्तावेज भी जांचे। उन्होंने पंप संचालक और कर्मचारियों को उपभोक्ताओं को पारदर्शी सेवा देने तथा सुरक्षा मानकों का पालन करने के निर्देश दिए।

डॉमिनोज फूड सेंटर पर भी कार्रवाई के निर्देश

पेट्रोल पंप परिसर में संचालित डॉमिनोज फूड सेंटर की जांच के दौरान एफएसएसआई लाइसेंस और अन्य अनुमति संबंधी दस्तावेज मौके पर प्रस्तुत नहीं किए गए। कलेक्टर ने खाद्य पदार्थों के सैंपल लेने तथा संचालक को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।



गीले-सूखे कचरे की अलग व्यवस्था के निर्देश

गार्बेज ट्रांसफर स्टेशन के निरीक्षण में रोजाना आने वाले कचरे की जानकारी ली गई। कलेक्टर ने गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखने तथा परिसर में खड़े कबाड़ हो चुके पुराने वाहनों का नियमानुसार निस्तारण करवें के निर्देश दिए।

बिजली शिकायतों के निराकरण पर जोर

विद्युत सेवा केंद्र रांझी में कलेक्टर ने उपभोक्ताओं को मिलने वाली सेवाओं की जानकारी ली और बिजली आपूर्ति से संबंधित शिकायतों का समय पर निराकरण करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अपर कलेक्टर शैलेंद्र सिंह, एसडीएम मोनिका बाघमारे, तहसीलदार, नायब तहसीलदार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

क्लीनिक में रजिस्टर का रिकॉर्ड गायब, मरीजों से फोन पर ली जानकारी

संजीनी क्लीनिक में कलेक्टर ने दैनिक कामकाज, मरीजों के रिकॉर्ड और एएनसी पंजीयन से संबंधित रजिस्टर देखे। रजिस्टर में बीच का रिकॉर्ड गायब होने और क्रमांक में गड़बड़ी मिलने पर उन्होंने दर्ज मरीजों के नाम और मोबाइल नंबरों के आधार पर कई मरीजों से फोन पर बात कर उपचार और दवाइयों की जानकारी ली। कुछ मरीजों ने क्लीनिक में उचित इलाज नहीं मिलने की बात भी बताई। इस पर कलेक्टर ने नाराजगी जताते हुए सभी कर्मचारियों का वेतन रोकने और कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। रजिस्टर और हाजिरी रिकॉर्ड दुरुस्त करने तथा भविष्य में लापरवाही नहीं दोहराने को कहा।

तहसील में लंबित राजस्व प्रकरण जल्द निपटाने के निर्देश

रांझी तहसील कार्यालय में कलेक्टर ने सीमांकन, नामांतरण, बंटवारा, नक्शा बटांकन, खसरा सुधार और शासकीय भूमि से जुड़े अतिक्रमण के प्रकरणों की समीक्षा की। सीएम हेल्पलाइन की लंबित शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण करने के साथ तहसील न्यायालय से निराकृत मामलों की भी जानकारी ली। पट्टे की भूमि पर अवैध निर्माण और सरकारी जमीन से अतिक्रमण संबंधी शिकायतों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। बकाया राजस्व की वसूली में तेजी लाने को भी कहा।



खबर संक्षेप

अखंड सीताराम संकीर्तन पूरा होने पर हवन पूजन व कन्या भोज का आयोजन सिलोड़ी। श्री पंचमुखी दरबार के तत्वावधान में पूरे एक माह सावन में अखंड श्री सीताराम का संकीर्तन पूरा हुआ। भक्तों की इच्छा पर अखंड श्री सीताराम संकीर्तन अभी चलता रहेगा। इस साल भी पूरे भक्ति भाव से सभी ग्रामवासियों के सहयोग से अखंड श्री सीताराम संकीर्तन के 30 दिन पूरे हो चुके हैं। जिसमें सभी वरिष्ठ, महिलाएं युवा बच्चे शामिल होकर अखंड श्री सीताराम संकीर्तन कर रहे हैं। नेगई, अतरसुमा, सगवा सहित हर गांव के लोग अखंड श्री सीताराम संकीर्तन में शामिल हो रहे हैं। संयोजक अमरेश राय ने बताया कि इसका मकसद सनातन संस्कृति की प्राचीन परंपरा को घर-घर तक पहुंचाना और समाज में भक्ति व संस्कारों की भावना को मजबूत करना है।सभी भक्तों की इच्छा पर अखंड श्री सीताराम संकीर्तन अभी चलता रहेगा। जल्द ही श्री पंचमुखी दरबार में भगवान श्री विष्णु का मंदिर बनाकर उसमें श्री विष्णु भगवान की प्रतिमा स्थापित होगी।

बहनों ने माइयों को बांधी प्रेम स्नेह की डोर सिलौड़ी। भाई-बहन के अटूट प्रेम और विश्वास का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व सिलौड़ी क्षेत्र में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ग्रामीण लोगों ने पहले मंदिरों और देवालियों में भगवान का पूजन किया और राखी चढ़ाई। बहनों ने शुभ मुहूर्त में भाइयों के माथे पर चंदन-अक्षत का तिलक लगाकर आरती उतारी और राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र एवं सुख-समृद्धि की कामना की। भाइयों ने भी बहनों को उपहार भेंट कर उनकी रक्षा का संकल्प लिया। सुबह से ही बारिश होने के कारण नेगाई पुल में पानी ऊपर से होने के कारण लगभग दो घंटे मां बिरासन मार्ग बंद रहा। राखी, मिठाई और कपड़ों की दुकानों पर बारिश के कारण हर साल की अपेक्षा कम ग्राहकी दिखीं। पर्व को लेकर पूरे क्षेत्र में दिनभर उत्साह और उल्लास का माहौल रहा।

अलग अलग स्थानों में मारपीट की हुई घटनाएं कटनी। जिले के अलग अलग थाना क्षेत्रों में मारपीट की घटनाएं हुईं। माधवनगर थाना अंतर्गत उत्कृष्ट स्कूल के सामने समदंडिया कॉलोनी में आरोपी आशुष निषाद, बच्चू सोनी, आरिफ खान, विशाल पांडेय, बिट्टू पांडे, भूरा त्रिपाठी, अभिषेक खान और शरद निषाद ने अभिषेक कोल (24 वर्ष) को घेरकर गाली-गलौच की। आरोपियों ने मारपीट करते हुए युवक के पेट में चाकू मार दिया। पुलिस ने बीएनएस की गंभीर धारा 109(1) समेत अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया है। रीठी थाना के ग्राम जमुनिया निवासी लोकेंद्र पटेल (38 वर्ष) के घर में आरोपी लकी सोनी जबरन घुस आया। आरोपी ने गाली-गलौच करते हुए लोकेंद्र पटेल और उनकी पत्नी चंद्रकली 35 वर्ष पर डंडे से हमला कर घायल कर दिया और जान से मारने की धमकी दी। एन.के.जे. थाना अंतर्गत हीरापुर कौड़िया में संतोष पटेल और रामकुमार पटेल के परिवारों के बीच विवाद हो गया। एक पक्ष से संतोष पटेल घायल हुए, वहीं दूसरे पक्ष से राजकुमार, प्रहलाद, कीमती और गोल्ड पटेल को चोट आई। पुलिस ने दोनों पक्षों की शिकायत पर केस दर्ज किया है।

आदिवासी संस्कृति एवं परंपराओं से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारीयों की संकलित

लोक ज्ञान एवं विज्ञान के विशेषज्ञ पद्मश्री बाबूलाल दाहिया का पचेली बोली एवं उससे जुड़ी लोक संस्कृति के अध्ययन के सिलसिले में जिले के स्लीमनाबाद क्षेत्र का प्रवास हुआ। इस दौरान वे अपने प्रपौत्र एवं सहयोगी अनुपम दाहिया के साथ पहुंचे। प्रवास के दौरान उन्होंने पचेली बोली, बघेली भाषा, ग्रामीण लोकजीवन, पारंपरिक कृषि ज्ञान तथा आदिवासी संस्कृति से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारीयों संकलित कीं। पद्मश्री दाहिया ने स्लीमनाबाद स्थित आदर्श विद्यापीठ हायर सेकेंडरी स्कूल पहुंचकर संस्था के प्राचार्य एवं पचेली बोली के विद्वान डॉ. के.एल. हल्दकार से मुलाकात की। इस दौरान दोनों के बीच

स्लीमनाबाद-बिलहरी मार्ग का मामला, वर्षाकाल में डूब जाता है संगम नदी का पुल 18 माह में बनना था पुल, 80 माह बाद भी नहीं बन सका जिम्मेदारों की बेपरवाही से दर्जनों गांव के लोग हलाकान

हरिभूमि न्यूज►►► स्लीमनाबाद वर्षा काल का समय चल रहा है।हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दर्जनों गांवों के ग्रामीणों को वर्षाकाल में आवागमन करने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।क्योंकि स्लीमनाबाद से बिलहरी मार्ग पर संगम नदी का पुल वर्षा काल मे डूब जाता है।हाल ही मे हुई वर्षा से चार -पांच दिनों तक संगम पुल डूबा रहा है।जिससे राहगीरों को आवागमन के लिए लंबी दूरी तय कर दूसरे रास्ते का सहारा लेना पड़ा जिससे राहगीरों को 10 से 15 किलोमीटर का अतिरिक्त चक्कर लगाना पड़ा। गौरतलब है किक्षेत्रीय ग्रामीणों व जनप्रतिनिधियों ने संगम नदी के पुल की ऊँचाई बढ़ाने विधायक प्रणय पांडेय से मांग की गई थी।जिस पर विधायक ने निर्माण एजेंसी पीएमजीएसवाई को पुल की ऊँचाई बढ़ाने पत्र लिखा गया जिस पर पीएमजीएसवाई के द्वारा बिलहरी से स्लीमनाबाद मार्ग पर संगम नदी पर बने पुल की ऊँचाई बढ़ाने की कार्ययोजना तैयार की।

आर्डिनंस खेल मैदान में राष्ट्रीय खेल दिवस पर तीन दिवसीय आयोजन

हरिभूमि न्यूज►►► कटनी खेलगा भारत जीतेगा भारत तीन दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान के माध्यम से राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन जिला स्तर पर 27 अगस्त को खेलों इण्डिया स्मॉल सेंटर अंतर्गत आर्डिनेन्स खेल मैदान में रिले दौड़ की प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें बालक वर्ग प्रथम स्थान पर धर्मेन्द्र कुमार, हिमांशू कुमार, रावेन्द्र कोरी एवं दिलीप पटेल तथा बालिका वर्ग में काजल सेन, अंशिका यादव, सोनम निषाद एवं रागिनी वंशकार प्रथम स्थान पर रहें। खेल दिवस के उपलक्ष्य में 29 अगस्त को माधवनगर इण्डोर हॉल खेल मैदान में खेलों का आयोजन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि

कलेक्टर ने कहा औद्योगिक क्षेत्र की हर बाधा होगी दूर

हरिभूमि न्यूज►►► कटनी मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान-2026 के तहत लमतरा औद्योगिक क्षेत्र के युनियन पल्सेस के परिसर में कलेक्टर श्री आशीष तिवारी की अध्यक्षता में ‘उद्यम संवाद’ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में औद्योगिक क्षेत्र के उद्यमियों ने उद्योग संचालन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं, आवश्यकताओं और सुझावों को अधिकारियों के समक्ष रखा। कलेक्टर ने उद्योगपतियों और औद्योगिक इकाईयों के संचालकों को आश्चर्य किया कि उनकी व्यवसायगत हर समस्याओं और बाधाओं का नियमानुसार निराकरण किया जाएगा। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ सुश्री हरसिमरनप्रीत कौर, एसडीएम जितेन्द्र कुमार पटेल, डीएसपी शिवा पाठक, वंशीशरद अजीत तिवारी



ग्रामीणों ने बताई अपनी पीड़ा

क्षेत्रीय ग्रामीण गौरीशंकर गोस्वामी, संतोष यादव,बबलू राजपाल,मोहन यादव ने बताया सरकार विकास का जो ढिंढोरा पीटती है उसकी बानगी संगम पुल कुछ ओर बर्बाद कर रही है। संगम पुल निर्माण कार्य की लेटलतीपी ने पूरे सरकारी सिस्टम की पोल खोलकर सामने रख दी है। पता नहीं अभी कितना समय पुल निर्माण कार्य पूर्ण होने मे लग जाये।बारिश के दौरान खम्हरिया,खरखरी,पिपरिया परौहा,घुचरा

सहित आसपास के गाँवो के लोगो को वर्षा काल मे पुल के ऊपर पानी होने पर दूसरे रास्ते का सहारा लेना पड़ता है।

इनका कहना है

इस संबंध में बहोरीबंद विधायक प्रणय पांडेय का कहना है कि संगम नदी पर बन रहे पुल का कार्य समयावधि में पूर्ण न होने का मामला संज्ञान में है। ठेकेदार की लापरवाही के चलते कार्य मे लेटलतीपी हुई जिसके बाद निर्माण एजेंसी का टेंडर निरस्त किया गया और नया टेंडर जारी हुआ। वर्षाकाल

विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को ट्राफी एवं मेडल से किया गया पुरस्कृत



शुभम चक्रवर्ती पैरा एथलीट पावर्लीफिटिंग, विशिष्ट अतिथि प्रवीण सिंह, यूनिट हैड जे.के. सीमेंट कटनी की परिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। श्रीमती सुनीता यादव, जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी कटनी द्वारा अवगत कराया कि खेल दिवस के उपलक्ष्य में कटनी जिले के वरिष्ठ खिलाडियों/प्रशिक्षकों अशोक राव, आलोक जोसफ, प्रताप निषाद,

अनुराग फिटनेस ट्रेनर, सुश्री वृन्दा खरडा, लखन लाल साहू (योग संघ), इत्यादि की स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में ज्हालीबाल, योगा और रस्साकसी खेलों का आयोजन किया गया जिसमें ज्हालीबाल खेल के बालक वर्ग में केन्द्रीय विद्यालय आर्डिनेन्स कटनी एवं ग्राम छहरी के मधु मैत्री मैच खेला गया जिसमें केन्द्रीय

आंगनवाडी आने वाले सभी बच्चों के आधार एवं समग्र आईडी की ली जानकारी, दिये आवश्यक दिशा निर्देश

हरिभूमि न्यूज►►► कटनी

सरकारी योजनाओं की जमीनी हकीकत जानने निकले कलेक्टर आशीष तिवारी जब विकासखंड कटनी के ग्राम डिटवारा स्थित आंगनवाड़ी केंद्र पहुंचे तो माहौल कुछ ही पलों में बदल गया। निरीक्षण के बीच नहीं बालिकाओं ने कलेक्टर को राखी बांधने की इच्छा जताई। कलेक्टर श्री तिवारी ने भी बड़ी सहजता और आत्मीयता के साथ उनसे राखी बंधवाया। इस छोटे-से पल ने पूरे आंगनवाड़ी केंद्र में अपनत्व की मुस्कान भर दी। कलेक्टर ने बच्चों को लाडू,प्यार और दुलार किया,जिससे बच्चे अत्यंत प्रफुल्लित हो गये। मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान-2026 के तहत आंगनवाड़ी केंद्र के निरीक्षण

रेलवे प्रशासन ने अस्थायी अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही



कटनी रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए रेल प्रशासन ने सख्त कदम उठाया है। शनिवार को स्टेशन के सर्कुलेटिंग परिया का अधिकारियों द्वारा गहन निरीक्षण किया गया, जिसके बाद परिसर में काबिज अस्थायी अतिक्रमण पर तत्काल कार्रवाई की गई। निरीक्षण टीम में सीसीआई नावेद सिद्दीकी, एमसी एच. के. शुक्ला और सीएचआई बलवंद प्रताप सिंह शामिल रहे। अधिकारियों ने जब सर्कुलेटिंग परिया का मुआयना किया, तो वहां अव्यवस्थित ढंग से लगे चाय-पान के टपरे और अवैध दुकानें पाई गईं। इन दुकानों के कारण न सिर्फ यात्रियों के आने-जाने का रास्ता बाधित हो रहा था, बल्कि स्टेशन की स्वच्छता पर भी असर पड़ रहा था। मामले की गंभीरता को देखते हुए अधिकारियों ने मौके पर ही सफाई मित्रों की टीम बुलाई और सर्कुलेटिंग परिया में फैले तमाम टपरी और अस्थायी निर्माण को पूरी तरह हटवा दिया। कार्रवाई के बाद पूरे क्षेत्र की गहन सफाई भी कराई गई। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि रेलवे स्टेशन परिसर को साफ-सुथरा और सुगम बनाए रखना पहली प्राथमिकता है। उन्होंने सख्त हिदायत दी कि सर्कुलेटिंग परिया में दोबारा किसी भी तरह का अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और नियम तोड़ने वालों पर आगे भी ऐसी ही कठोर कार्रवाई जारी रहेगी।

निरीक्षण में पहुंचे कलेक्टर को बालिकाओं ने बांधी राखी, उपहार देकर किया दुलार



की। उन्होंने आंगनवाड़ी सहायिका श्रीमती करुणा शुक्ला से केंद्र में आने वाले बच्चों के आधार कार्ड और समग्र आईडी के संबंध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने निर्देश दिए कि केंद्र से जुड़े प्रत्येक बच्चे का आधार कार्ड एवं समग्र आईडी सहित आवश्यक दस्तावेज पूर्ण होना चाहिए, ताकि कोई भी बच्चा शासन की योजनाओं और सुविधाओं से वंचित न रहे। कलेक्टर ने बच्चों से बातचीत कर उनकी गतिविधियों, पढ़ाई, मिलने वाले नाश्ता और सुविधाओं के बारे में सहजता से जानकारी ली। कलेक्टर श्री तिवारी की नजर नहीं बिटिया हर्षिता राजपूत पर पड़ी। उन्होंने हर्षिता से कविता सुनाने को कहा।हर्षिता ने बिना झिझक अपनी तोतली बोली में पूरे आत्मविश्वास के

साथ ‘हाथी राजा कहीं चले....’ कविता सुनानी शुरू कर दी। नहीं बालिका का आत्मविश्वास और उसकी मासुम प्रस्तुति देखकर कलेक्टर श्री तिवारी भी प्रसन्न हुए। उन्होंने हर्षिता को चॉकलेट देकर उत्साह बढ़ाया। यह पल केवल एक कविता सुनने का नहीं था, बल्कि उसे प्रोत्साहित करने का था, जो किसी बच्चे के व्यक्तित्व की मजबूत नींव बनता है। डिटवारा आंगनवाड़ी में सबसे भावुक क्षण तब आया, जब नहीं बालिकाएं संजना राजपूत और हर्षिता राजपूत ने कलेक्टर की कलाई पर राखी बांधी। कलेक्टर श्री तिवारी ने स्नेहपूर्वक दोनों से राखी बंधवाई और उन्हें चाकलेट और उपहार भेंट कर सभी बच्चों से प्रतिदिन आंगनवाड़ी आने की बात कही।

कुएं में गिरे तेंदुए का मशक्कत से किया रेस्क्यू, गंभीर चोटे आने से हो गई मौत

हरिभूमि न्यूज►►► कटनी

बड़वारा वन परिक्षेत्र अंतर्गत पथवारी बीट में एक तेंदुआ 60 फीट गहरे कुएं में गिर गया। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की विशेषज्ञ टीम ने कई घंटों की मशक्कत के बाद तेंदुए को सफुशल बाहर निकाला, लेकिन अंदरूनी चोटों और समय पर उचित इलाज न मिल पाने के कारण उसकी मौत हो गई। घटना पथवारी बीट के कक्ष क्रमांक 369 से सटे राजस्व क्षेत्र की है। आशंका जताई जा रही है कि 4 से 5 वर्षीय नर तेंदुआ एक जंगली सूअर का पीछा करते हुए अंधेरे में बिना मुंडेर के कुएं में जा गिरा। कुएं में हलचल और तेंदुए की दहाड़ सुनकर ग्रामीणों ने तत्काल वन विभाग को सूचना दी। सूचना मिलते ही उपवनमंडल अधिकारी, बड़वारा वन परिक्षेत्र



अधिकारी और वनमंडल अधिकारी (DFO) दल-बल व रेस्क्यू उपकरणों के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। कुएं की अत्यधिक गहराई और संकरे रास्ते के कारण स्थानीय अमलें को तेंदुए को बाहर निकालने में सफलता नहीं मिल रही थी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व से विशेषज्ञ रेस्क्यू टीम को बुलाया गया। टीम ने सुरक्षा घेरा तैयार कर देर रात तक चले जोखिम भरे ऑपरेशन के बाद

डाकघरों में 31 अगस्त को आधार महाअभियान कटनी। जिले के डाकघरों में 31 अगस्त को आधार से जुड़ी सेवाओं के लिए विशेष महाअभियान आयोजित किया जाएगा। अभियान के दौरान नवीन आधार पंजीयन, आधार कार्ड में आवश्यक सुधार, बायोमेट्रिक अपडेट तथा आधार में मोबाइल नंबर और ई-मेल लिंक कराने जैसी सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। अभियान के लिए 30 अगस्त को टोकन वितरित किए जाएंगे। इच्छुक लोग संबंधित डाकघर से टोकन प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा ऑन-द-स्पॉट रजिस्ट्रेशन की सुविधा भी रहेगी। अपने क्षेत्र के पोस्टमैन से संपर्क कर भी टोकन प्राप्त किया जा सकता है। 31 अगस्त को विशेष अभियान के तहत अधिकांश आधार केंद्र सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक संचालित होंगे। वहीं प्रधान डाकघरों में संचालित आधार केंद्रों पर शाम 8 बजे तक आधार संबंधी सेवाएं उपलब्ध रहेंगी। जबलपुर संभाग के अंतर्गत दो प्रधान डाकघरों और 36 उपडाकघरों में आधार पंजीयन एवं अपडेशन अभियान संचालित किया जा रहा है। जिले में बाकल, बरही, कटनी सीमेंट फैक्ट्री, कटनी प्रधान डाकघर, माधवनगर, कैमोर, निवार, रीठी, सरोली, मझगवां, सिहोरा एमडीजी, स्लीमनाबाद, उमरियापान और विजयराघवगढ़ डाकघरों में आधार संबंधी सेवाएं उपलब्ध रहेंगी।

डायरेक्ट या रेगुलर : बाजार में पैसा लगाने से पहले अपना लक्ष्य तय करें

निवेश से पहले समझें कौन सा प्लान सबसे बेहतर

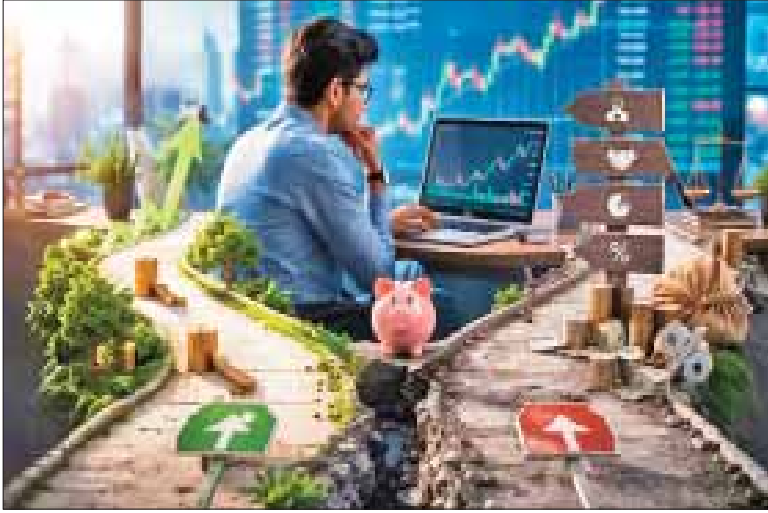
दोनों प्लान में निवेश एक ही फंड और लगभग समान पोर्टफोलियो में होता है ■ खर्च, एनएवी और लंबी अवधि के रिटर्न में आ सकता है अंतर ■ निवेशक अपनी रिस्क क्षमता और जरूरत के आधार पर लें फैसला

म्यूचुअल फंड निवेश में एक्सपेंस रेटियो का महत्व इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि निवेश लंबे समय के लिए किया जाता है। यदि दो समान योजनाओं में से एक में खर्च लगातार थोड़ा अधिक है, तो कई वर्षों में इसका असर निवेश के कुल मूल्य पर पड़ सकता है। इसीलिए निवेशक को केवल पिछले रिटर्न को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। उसे एक्सपेंस रेटियो, फंड का प्रदर्शन, जोखिम, निवेश का उद्देश्य और अपने निवेश की अवधि जैसे पहलुओं को भी देखना चाहिए।

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश का फैसला करते समय केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि कौन सा फंड अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि वह डायरेक्ट प्लान में निवेश कर रहा है या रेगुलर प्लान में। दोनों विकल्पों में आमतौर पर एक ही म्यूचुअल फंड स्कीम और एक ही फंड मैनेजर के जरिए निवेश किया जाता है, लेकिन दोनों की लागत संरचना अलग होती है। यही अंतर लंबी अवधि में निवेश के रिटर्न पर असर डाल सकता है। निवेशक के लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान में अंतर क्या है और इनमें से कौन सा विकल्प उसके लिए बेहतर है। इसका जवाब हर निवेशक के लिए एक जैसा नहीं हो सकता। यदि निवेशक खुद फंड की रिसर्च कर सकता है और अपने पोर्टफोलियो को संभालने में सक्षम है तो डायरेक्ट प्लान कम लागत वाला विकल्प हो सकता है। वहीं नए या ऐसे निवेशक जिन्हें फंड चुनने और निवेश प्रबंधन में मदद चाहिए, उनके लिए रेगुलर प्लान उपयोगी हो सकता है।



रेगुलर प्लान में मिलती है डिस्ट्रीब्यूटर की मदद

रेगुलर प्लान में निवेशक म्यूचुअल फंड कंपनी यानी एक्ससी तक सीधे नहीं पहुंचता। वह बैंक, म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर, ब्रोकर या वित्तीय सलाहकार के माध्यम से निवेश करता है। निवेश प्रक्रिया पूरी करने के साथ-साथ डिस्ट्रीब्यूटर निवेशक को फंड चुनने, कागजी प्रक्रिया और निवेश से जुड़ी दूसरी सेवाओं में मदद कर सकता है। इस सेवा की लागत भी होती है। म्यूचुअल फंड कंपनी डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन देती है और यह खर्च फंड के एक्सपेंस रेटियो में शामिल होता है। इसलिए आमतौर पर रेगुलर प्लान का एक्सपेंस रेटियो उसी स्कीम के डायरेक्ट प्लान की तुलना में अधिक होता है।

डायरेक्ट प्लान में नहीं होता डिस्ट्रीब्यूटर कमीशन

डायरेक्ट प्लान में निवेशक किसी डिस्ट्रीब्यूटर के माध्यम से निवेश करने के बजाय सीधे एक्ससी से निवेश करता है। इसमें डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन नहीं देना पड़ता। इसी कारण डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेटियो आमतौर पर रेगुलर प्लान से कम होता है। कम खर्च का फायदा लंबी अवधि में दिखाई दे सकता है। चूंकि निवेश की लागत कम रहती है, इसलिए बाकी परिस्थितियां समान रहने पर डायरेक्ट प्लान का नेट रिटर्न रेगुलर प्लान से थोड़ा अधिक हो सकता है। हालांकि यह समझना जरूरी है कि डायरेक्ट प्लान का मतलब कम जोखिम नहीं है। बाजार में उतार-चढ़ाव और फंड से जुड़े जोखिम दोनों प्लान में बने रहते हैं।

एनएवी भी होता है अलग

कई निवेशक यह मान लेते हैं कि जब स्कीम और फंड मैनेजर एक ही हैं तो डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान का एनएवी भी समान होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं है। दोनों प्लान के खर्च अलग होने के कारण इनके एनएवी में भी अंतर हो सकता है। रेगुलर प्लान में डिस्ट्रीब्यूटर से जुड़ी लागत शामिल होती है, जबकि डायरेक्ट प्लान में यह लागत नहीं होती। इसी वजह से समय के साथ दोनों प्लान के एनएवी और निवेशक के अंतिम रिटर्न में अंतर पैदा हो सकता है। यह अंतर किस अलग निवेश रणनीति के कारण नहीं, बल्कि मुख्य रूप से दोनों प्लान की लागत संरचना के कारण होता है।

किसके लिए बेहतर

डायरेक्ट प्लानउन निवेशकों के लिए अधिक उपयुक्त हो सकता है जिन्हें म्यूचुअल फंड की पर्याप्त जानकारी है। ऐसे निवेशक खुद अलग-अलग फंड की तुलना कर सकते हैं, जोखिम समझ सकते हैं और अपने पोर्टफोलियो की समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। यदि निवेशक को पता है कि उसे किस श्रेणी के फंड में निवेश करना है और वह अपने निवेश संबंधी फैसले खुद लेने में सहज है, तो कम एक्सपेंस रेटियो वाला डायरेक्ट प्लान उसके लिए लागत के लिहाज से आकर्षक हो सकता है। लेकिन केवल कम खर्च देखकर डायरेक्ट प्लान चुनना सही रणनीति नहीं है।

किसके लिए रेगुलर प्लान उपयोगी ?

- रेगुलर प्लान ऐसे निवेशकों के लिए उपयोगी हो सकता है जिन्हें निवेश की जानकारी सीमित है या जो फंड चुनने और पोर्टफोलियो संभालने में विशेषज्ञ की मदद चाहते हैं।
- नए निवेशक के लिए कई बार सही फंड चुनना, जोखिम का आकलन करना, निवेश की अवधि तय करना और पोर्टफोलियो में बदलाव करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ऐसे में डिस्ट्रीब्यूटर की सहायता सुविधा प्रदान कर सकती है। हालांकि निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि इस सुविधा की लागत फंड के खर्च में शामिल होती है।

फैसला करने से पहले इन बातों पर दें ध्यान

डायरेक्ट प्लानया रेगुलर प्लान चुनने से पहले निवेशक को अपनी वित्तीय स्थिति और जानकारी का आकलन करना चाहिए। केवल यह सोचकर डायरेक्ट प्लान चुनना उचित नहीं है कि उसका एक्सपेंस रेटियो कम है। इसी तरह केवल सुविधा के लिए रेगुलर प्लान लेना भी जरूरी नहीं है। निवेशक को यह देखना चाहिए कि वह कितने समय के लिए निवेश कर रहा है, कितना जोखिम उठा सकता है, फंड की लागत कितनी है और क्या वह अपने निवेश की गिरगनी खुद कर सकता है।

निवेश का फैसला जल्दबाजी में न करें

डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान के बीच चुनाव व्यक्तिगत जरूरत पर निर्भर करता है। डायरेक्ट प्लान में कम लागत का फायदा मिल सकता है, जबकि रेगुलर प्लान में डिस्ट्रीब्यूटर की सहायता और सुविधा मिलती है। दोनों में निवेश का बाजार जोखिम बना रहता है। इसलिए निवेश करने से पहले केवल प्लान का नाम देखकर फैसला न करें। फंड के उद्देश्य, जोखिम, एक्सपेंस रेटियो, पिछला प्रदर्शन, निवेश अवधि और अपनी वित्तीय जरूरतों को समझना जरूरी है। जरूरत पड़ने पर योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लेकर ही निवेश का निर्णय लेना बेहतर है।

5,000 की एसआईपी

लार्ज, मिड या स्मॉल कैप कहां बनेगा बड़ा फंड



बिजनेस डेस्क

हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी शुरू करने वाले निवेशक के सामने सबसे बड़ा सवाल होता है कि पैसा लार्ज, मिड या स्मॉल कैप फंड में लगाया जाए। तीनों कैटेगरी में जोखिम और रिटर्न की संभावना अलग होती है। इसलिए केवल पिछले एक साल के रिटर्न को देखकर फैसला करना सही रणनीति नहीं है। इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश का फायदा तभी बेहतर तरीके से मिल सकता है, जब निवेशक लंबी अवधि तक बाजार में बना रहे और उतार-चढ़ाव के दौरान घबराकर एसआईपी बंद न करे। पहले समझिए तीनों कैटेगरी में अंतर

सेबी के वर्गीकरण के अनुसार लार्ज कैप फंड मुख्य रूप से बाजार पूंजीकरण के आधार पर देश की शीर्ष 100 कंपनियों में निवेश करते हैं। 101वीं से 250वीं रैंक वाली कंपनियां मिडकैप और इसके बाद की कंपनियां स्मॉल कैप श्रेणी में आती हैं। लार्ज कैप कंपनियां आकार में बड़ी और स्थापित होती हैं। इसलिए इनके कारोबार में अपेक्षाकृत स्थिरता देखने को मिल सकती है। हालांकि इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि लार्ज कैप फंड सुरक्षित या जोखिम-मुक्त है। शेयर बाजार में बड़ी गिरावट आने पर इनमें भी नुकसान हो सकता है। मिड कैप कंपनियां आकार में लार्ज कैप से छोटी होती हैं, लेकिन इनमें कारोबार तेजी से बढ़ाने की संभावना हो सकती है। इसी वजह से इनके शेयरों में उतार-चढ़ाव भी अधिक हो सकता है।

पहली बार निवेश कर रहे हैं तो लार्ज कैप पर विचार

अगर कोई निवेशक पहली बार इक्विटी म्यूचुअल फंड में एसआईपी शुरू कर रहा है और बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं चाहता, तो लार्ज कैप फंड अपेक्षाकृत आसान शुरुआत हो सकते हैं। बड़ी कंपनियों के पास आम तौर पर लंबा कारोबारी ट्रैक रिकॉर्ड और मजबूत कारोबार होता है। फिर भी निवेशक को यह समझना चाहिए कि लार्ज कैप का मतलब गारंटीड रिटर्न नहीं है। बाजार में 15-20% की गिरावट आती है तो लार्ज फंड भी नीचे जा सकते हैं। अंतर केवल इतना है कि मिड कैप और स्मॉल कैप की तुलना में उतार-चढ़ाव कई बार कम हो सकता है।

15 साल में 9 लाख का निवेश कितना होगा

5,000 रुपये की मासिक एसआईपी 15 साल तक जारी रखने पर कुल निवेश 9 लाख रुपये होगा। उदाहरण के लिए, पिछले 15 वर्षों के औसत सालाना रिटर्न को आधार मानकर लार्ज कैप के लिए करीब 11.9%, मिड कैप के लिए 17.2% और स्मॉल कैप के लिए करीब 14.7% रिटर्न माना जाए, तो अलग-अलग कैटेगरी में निवेश से रकम अलग बन सकती है। उपरोक्त अनुपात में 2,500 लॉन कैप, 1,500 मिड कैप और 1,000 रुपये स्मॉल कैप में लगाने पर ऐतिहासिक औसत रिटर्न को सिर्फ उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल करने पर 15 साल में करीब 28.7 लाख का फंड बन सकता है। इसमें लगभग 9 लाख मूल निवेश और करीब 19.7 लाख का अनुमानित लाभ शामिल होगा। हालांकि यह सिर्फ गणितीय अनुमान है। बाजार का वास्तविक रिटर्न हर साल अलग हो सकता है और भविष्य में यही रिटर्न दोहराया जाएगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

बैंक की सावधि जमा यानी एफडी को सुरक्षित निवेश का साधन माना जाता है। यही वजह है कि बड़ी संख्या में लोग अपनी बचत को निश्चित अवधि के लिए एफडी में जमा करते हैं। लेकिन कई बार अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है और निवेशक को एफडी की अवधि पूरी होने से पहले ही रकम निकालने का फैसला करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में एफडी को समय से पहले बंद करना संभव है, लेकिन इसके कुछ आर्थिक नुकसान भी हो सकते हैं। एफडी शुरू करते समय बैंक एक निश्चित अवधि और ब्याज दर तय करता है। यदि निवेशक उस अवधि के पूरा होने से पहले एफडी बंद करता है तो जरूरी नहीं कि उसे शुरुआत में तय ब्याज दर का पूरा लाभ मिले। बैंक के नियमों के अनुसार ब्याज में कटौती की जा सकती है और कुछ मामलों में समय से पहले एफडी बंद करने का शुल्क भी लगाया जा सकता है। इसलिए जल्दबाजी में एफडी तोड़ने के बजाय पहले इन पांच जरूरी बातों को समझ लेना चाहिए।

1. समय से पहले एफडी बंद करने पर लग सकता है शुल्क सबसे पहले अपने बैंक के नियमों की जानकारी लें। एफडी की तय अवधि पूरी होने से पहले पैसा निकालने पर बैंक समयपूर्व निकासी शुल्क या जुर्माना लगा सकता है। यह शुल्क बैंक, एफडी की अवधि और जमा की गई रकम के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। इसलिए एफडी बंद करने से पहले बैंक से यह जरूर पता करें कि शुल्क के रूप में कितनी रकम काटी जाएगी और एफडी बंद करने के बाद आपके खाते में वास्तविक रूप से कितनी राशि आएगी।

2. पूरा ब्याज नहीं मिल सकता समय से पहले एफडी बंद करने का सबसे बड़ा असर मिलने वाले ब्याज पर पड़ सकता है। एफडी बनते समय जिस ब्याज दर का निर्धारण किया गया था, जरूरी नहीं कि समय से पहले एफडी बंद करने पर उसी दर से ब्याज मिले। बैंक आमतौर पर उस अवधि के आधार पर ब्याज की गणना कर सकता है, जितने समय तक रकम वास्तव में एफडी में जमा रही। इसके अलावा समयपूर्व निकासी का शुल्क भी लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपने पांच साल के लिए एफडी कराई थी, लेकिन दो साल बाद ही उसे बंद कर दिया, तो आपको पांच साल की तय ब्याज दर का पूरा लाभ नहीं मिल सकता।

3. ब्याज पर लगने वाले कर को भी समझें एफडी से मिलने वाला ब्याज आपको आय का हिस्सा माना जाता है और उस पर लागू आयकर नियमों के अनुसार कर देनदारी बन सकती है। इसलिए समय से पहले एफडी बंद करने का फैसला करते समय केवल शुल्क और ब्याज में होने वाले नुकसान पर ही ध्यान न दें। यह भी देखें कि एफडी से अब तक कितना ब्याज अर्जित हुआ है और उस पर आपको कर देनदारी कितनी बन सकती है। अलग-अलग निवेशकों की कर स्थिति अलग हो सकती है।

त्योहारी ऑफरों में ‘नो-कॉस्ट ईएमआई’ देखकर न बहकें, वरना जेब होगी खाली

त्योहारों पर आसान किस्त और छूट के प्रस्ताव बढ़ेंगे

बिजनेस डेस्क

त्योहारों का मौसम शुरू होते ही बाजार और ऑनलाइन खरीदारी में पार-तरह के आकर्षक ऑफर आने लगते हैं। मोबाइल, टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन से लेकर फर्नीचर और दूसरे महंगे सामान पर भारी छूट के साथ आसान मासिक किस्तों के प्रस्ताव बाहकों को खरीदारी के लिए आकर्षित करते हैं। इनमें नो-कॉस्ट ईएमआई या बिना ब्याज वाली किस्त का प्रस्ताव सबसे ज्यादा लुभाता है। बाहक को लगता है कि महंगा सामान बिना अतिरिक्त ब्याज के छोटे-छोटे भुगतानों में खरीदा जा सकता है। लेकिन त्योहारों की खरीदारी में इस तरह के प्रस्ताव को देखकर तुरंत फैसला करना समझदारी नहीं है। ‘नो-कॉस्ट’ का मतलब यह जरूरी नहीं कि खरीदारी से जुड़ी कोई लागत ही नहीं होगी। कई मामलों में प्रसंस्करण शुल्क, कर, छूटी हुई तत्काल छूट, समय से पहले कर्ज बंद करने का शुल्क या देर से भुगतान का जुर्माना बाहक की कुल लागत बढ़ा सकता है। अलग-अलग बैंक और ऋणदाता अपनी अलग शर्तें रखते हैं। मसलन, 2026 में बैंकों की प्रकाशित शुल्क तालिकाओं में किस्त सुविधा के लिए प्रसंस्करण शुल्क और समयपूर्व भुगतान शुल्क के अलग-अलग प्रावधान दिखाई देते हैं। इसलिए इस त्योहारी मौसम में खरीदारी से पहले केवल मासिक किस्त नहीं, बल्कि कुल भुगतान पर नजर रखना जरूरी है।



पहले तय करें, सामान की जरूरत है या नहीं त्योहारों में सबसे बड़ी गलती यही होती है कि बाहक जरूरत से ज्यादा खरीदारी कर लेता है। इतनी बड़ी छूट दोबारा नहीं मिलेगी या इतनी कम किस्त में सामान मिल रहा है? जैसी सोच खरीदारी का फैसला प्रभावित कर सकती है। इससे बचने का आसान तरीका है कि बाजार जाने या ऑनलाइन खरीदारी शुरू करने से पहले जरूरी सामान की सूची बना लें। जो सामान पहले से खरीदने की योजना में नहीं था, उसे केवल छूट या किस्त के प्रस्ताव के कारण खरीदने से बचें। याद रखें, जिस सामान की जरूरत नहीं है, उस पर मिलने वाली बड़ी छूट भी वास्तव में बचत नहीं है। उल्टा, उसकी मासिक किस्त आपके आने वाले महीनों के बजट को प्रभावित कर सकती है।

‘नो-कॉस्ट’ का मतलब पूरी तरह मुफ्त नहीं

नो-कॉस्ट ईएमआई में आमतौर पर सामान की कीमत को कोई मासिक किस्तों में बांट दिया जाता है और ब्याज की राशि को वित्ता की ओर से दी जाने वाली छूट के माध्यम से समायोजित किया जा सकता है। इसलिए बाहक को अलग से ब्याज चुकाने का बोझ दिखाई नहीं देता। लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण बात समझना जरूरी है। ब्याज का समायोजन हो जाने के बाद भी प्रसंस्करण शुल्क या अन्य शुल्क लागू हो सकते हैं। इसलिए केवल ‘बिना ब्याज’ लिखा देखकर यह मान लेना सही नहीं है कि बाहक को कोई अतिरिक्त रकम नहीं देनी होगी। उदाहरण के लिए, कुछ बैंकों की मौजूदा शुल्क तालिकाओं में किस्त सुविधा पर लेनदेन राशि के आधार पर प्रसंस्करण शुल्क और समय से पहले किस्त बंद करने पर अलग शुल्क का प्रावधान है।

नकद व किस्त वाली कीमत की तुलना करें त्योहारी खरीदारी में बाहक को सबसे पहले सामान की वास्तविक नकद कीमत और किस्त योजना में चुकाई जाने वाली कुल रकम की तुलना करनी चाहिए। मान लीजिए किसी सामान की कीमत एक लाख रुपये है। दुकान पर उसे 12 महीनों की किस्त में खरीदने का प्रस्ताव दिया जा रहा है। मासिक किस्त देखकर यह तय न करें कि सौदा सस्ता है। सभी किस्तों को जोड़ें और उसमें प्रसंस्करण शुल्क, कर तथा अन्य लागू खर्च शामिल करें। देखें कि कुल भुगतान कितना हो रहा है। यदि सामान पर बिना किस्त भुगतान पर अलग छूट मिल रही है तो उस छूट को भी तुलना में शामिल करें। कई बार किस्त के लाभच में तत्काल भुगतान पर मिलने वाली छूट छेड़ देता है।

प्रसंस्करण शुल्क की जानकारी पहले लें किस्त लेने से पहले बैंक या वित्तीय संस्था से यह जरूर पूछें कि प्रसंस्करण शुल्क कितना है। यह एक निश्चित रकम हो सकती है या खरीदारी की रकम के आधार पर तय हो सकती है। इस पर लागू कर की जानकारी भी लें। कुछ बैंकों की 2026 की शर्तों में किस्त सुविधा पर न्यूनतम रकम या लेनदेन के प्रतिशत के आधार पर प्रसंस्करण शुल्क निर्धारित है। इसलिए हर ‘नो-कॉस्ट’ प्रस्ताव की वास्तविक लागत अलग हो सकती है।

त्योहार में छूट देखकर बजट न बिगाड़ें

त्योहारी ऑफर का फायदा उठाना मालत नहीं है, लेकिन छूट का मतलब बचत तभी है जब खरीदारी आपके बजट के भीतर हो। खरीदारी की रकम पहले से तय करें और उसी सीमा में सामान खरीदें। अगर कोई सामान जरूरत का है और उस पर वास्तविक छूट मिल रही है, किस्त की कुल लागत स्पष्ट है और मासिक भुगतान आसानी से किया जा सकता है तो प्रस्ताव पर विचार किया जा सकता है। केवल ‘आज का ऑफर’, ‘सीमित समय की छूट’ या ‘बिना ब्याज की किस्त’ देखकर ज्यादा खर्च करना आर्थिक दबाव बढ़ाता है।

खरीदारी से पहले ये पांच चीजें जरूर जांचें

- पहला, सामान की नकद कीमत और किस्त में कुल भुगतान कितना है।
- दूसरा, तत्काल छूट छेड़ने पर आपको कितना नुकसान हो रहा है।
- तीसरा, प्रसंस्करण शुल्क और उस पर लगने वाले कर कितने हैं।
- चौथा, समय से पहले किस्त बंद करने पर कोई शुल्क लगना या नहीं।
- पांचवां, देर से भुगतान की स्थिति में कितना अतिरिक्त खर्च हो सकता है।

‘नो-कॉस्ट’ नहीं, कुल लागत देखें

नो-कॉस्ट ईएमआई खराब विकल्प नहीं है, लेकिन इसे तभी चुनना समझदारी है जब सामान की जरूरत हो, कुल लागत स्पष्ट हो और किस्त आपको आर्थिक क्षमता के भीतर हो। आसान किस्त देखकर नहीं, पूरी कीमत देखकर फैसला करें।



कार्तिक घुटने की सर्जरी के बाद एक्शन में लौटेंगे

मुंबई। कार्तिक आर्यन जल्द ही अपनी अगली बहुचर्चित फिल्म ‘कैप्टन इंडिया’ के साथ बड़े पर्दे पर धमाल मचाने के लिए तैयार हैं। फिल्म की शूटिंग 1 सितंबर से लंदन में शुरू होने जा रही है। घुटने की सर्जरी से पूरी तरह उबरने के बाद कार्तिक ‘कैप्टन इंडिया’ की शूटिंग शुरू करने वाले हैं। इस फिल्म का निर्देशन ‘चक दे! इंडिया’ जैसी शानदार फिल्म बना चुके मशहूर निर्देशक शमित अमीन कर रहे हैं। ‘कैप्टन इंडिया’ की कहानी एक युद्धग्रस्त देश में भारत द्वारा चलाए गए असल जिंदगी के साहसिक रेस्क्यू मिशन से प्रेरित है। फिल्म के प्री-प्रोडक्शन का काम इस वक्त काफी तेजी से चल रहा है।

मुंबई। कार्तिक आर्यन जल्द ही अपनी अगली बहुचर्चित फिल्म ‘कैप्टन इंडिया’ के साथ बड़े पर्दे पर धमाल मचाने के लिए तैयार हैं। फिल्म की शूटिंग 1 सितंबर से लंदन में शुरू होने जा रही है। घुटने की सर्जरी से पूरी तरह उबरने के बाद कार्तिक ‘कैप्टन इंडिया’ की शूटिंग शुरू करने वाले हैं। इस फिल्म का निर्देशन ‘चक दे! इंडिया’ जैसी शानदार फिल्म बना चुके मशहूर निर्देशक शमित अमीन कर रहे हैं। ‘कैप्टन इंडिया’ की कहानी एक युद्धग्रस्त देश में भारत द्वारा चलाए गए असल जिंदगी के साहसिक रेस्क्यू मिशन से प्रेरित है। फिल्म के प्री-प्रोडक्शन का काम इस वक्त काफी तेजी से चल रहा है।

लाइफ Style

अभिनेत्री तापसी पन्नू की आगामी फिल्म ‘गांधारी’ रिलीज होने से पहले विवादों में घिर गई है। हाल ही में, मुंबई के लेखक राघव देसाई ने दावा किया कि उन्होंने 2024 में फिल्म निर्माताओं को एक पटकथा सुनाई थी। उन्होंने कथित तौर पर आरोप लगाया कि फिल्म की निर्माता टीम ने उनके विचार का इस्तेमाल किया है।

तापसी

फिल्म ‘गांधारी’ पर नकल का आरोप

एजेंसी ► मुंबई

उधर, राघव के आरोपों को नकारते हुए ‘गांधारी’ की लेखक-निर्माता कनिका ढिल्लों ने अपनी चुप्पी तोड़ी और स्पष्ट किया कि फिल्म एक मौलिक परियोजना है। कनिका के प्रोडक्शन हाउस ‘कथा पिक्चर्स’ ने अपने बयान में कहा, ‘सोशल मीडिया और कुछ प्रकाशनों में प्रसारित हो रहे आरोपों की ओर हमारा ध्यान गया कि हमारी आगामी फिल्म ‘गांधारी’ किसी अन्य व्यक्ति की अवधारणा की नकल करती है और उस व्यक्ति के शोषक का उपयोग करती है। ये आरोप झूठे हैं और हम इन्हें स्पष्ट रूप से नकारते हैं।’ बयान में कहा गया कि ‘गांधारी’ एक मौलिक रचना है, जिसे कनिका ढिल्लों ने लिखा और निर्मित किया है। कथा पिक्चर्स ने बयान में आगे कहा, हम मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और जनता से अनुरोध करते हैं कि वे इन आरोपों को उनके वास्तविक स्वरूप में ही मानें, यानी अपुष्ट और झूठे, और इन्हें पुख्ता तथ्य मानकर प्रकाशित, प्रसारित या दोहराने से बचें। बता दें कि देवाशीष मखीजा द्वारा निर्देशित, फिल्म ‘गांधारी’ में तापसी मुख्य किरदार में हैं। बदले की भावना से प्रेरित एक मां की कहानी पर आधारित यह फिल्म सितंबर को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो रही है।



अपने अभिनय से दर्शकों का दिल जीत चुकी हैं

मुंबई। कियारा आडवाणी इन दिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म ‘टॉक्सिक: अ फेयरी टेल फॉर ग्राउन-अप’ को लेकर सुर्खियों में हैं। फिल्म में उनके साथ यश, नयनतारा, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत भी अहम भूमिकाओं में हैं। हालांकि, कियारा इससे पहले भी कई शानदार फिल्मों और वेब सीरीज में अपने दमदार अभिनय से दर्शकों का दिल जीत चुकी हैं। ऐसे में आइए जानते हैं कियारा के बेहतरीन प्रदर्शन वाली फिल्मों के बारे में। साल 2018 में रिलीज हुई नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज ‘लस्ट स्टोरीज’ में कियारा ने जबरदस्त अभिनय किया था। उन्होंने एक ऐसे संवेदनशील विषय को बहुत सहजता, हास्य और भावनात्मक ईमानदारी के साथ पेश किया था, जिसके लिए उन्हें खूब तारीफ मिली।



ऋतिक के बेटे का संगीत में डेब्यू

मुंबई। ऋतिक रोशन और उनकी पूर्व पत्नी सुजैन खान के बेटे, रेहान रोशन ने संगीत जगत में अपना पदार्पण किया है। उन्होंने अपने पहले सिंगल म्यूजिक वीडियो ‘दिस हेवनली प्लेस’ के साथ एक स्वतंत्र कलाकार के रूप में शुरुआत की, जिसकी झलक अभिनेता ने फैस को दिखाई है। इस गाने में रेहान ने गायक-गीतकार और गिटारवादक की भूमिका निभाई है। इसका निर्माण सूडान ने किया है, जबकि अंकुर तिवारी ने आर्टिस्ट्स एंड रेपरटॉयर के रूप में काम किया है। अभिनेता ने गाने का वीडियो जारी करते हुए लिखा, ‘रे, तुम जन्म से ही एक खास समझ लेकर आए हो: मुझे इस पर पूरा भरोसा है। यही मुझे निडर बनाता है। रेहान को काले और सफेद बैकग्राउंड में एक्वास्टिक सेटअप पर गाते और गिटार बजाते देखा जा सकता है।

टीवी मसाला



केबीसी में जीएसटी ऑफिसर ने दिया गलत जवाब, पांच लाख पर गिरे

मुंबई। अतिमा बच्चन के शो ‘कौन बनेगा करोड़पति 18’ के 27 अगस्त के एपिसोड में राजस्थान के उदयपुर से आए डॉ. अनुज भटनागर हॉट सीट पर बैठे। जीएसटी डिपार्टमेंट में डिप्टी कमिश्नर के तौर पर काम करने वाले अनुज अपनी पत्नी और बेटे के साथ शो में आए थे। उन्होंने 7.5 लाख रुपये तक का गेम खेला, लेकिन भारत, जॉर्डन और जाम्बिया से जुड़े एक सवाल पर उनका गेम खत्म हो गया।

जीएसटी डिप्टी कमिश्नर से हो गई गलती

इसके बाद अनुज ने ‘सुपर सैंडवूच’ राउंड खेला और 10 में से नौ सवालों के सही जवाब देकर 90,000 रुपये जीते। 7.5 लाख रुपये का 11वां सवाल अनुज के लिए मुश्किल साबित हुआ और इसे पार करने के लिए उन्होंने ‘महापिलप’ लाइफलाइन का इस्तेमाल किया। फिर वह गेम के 12वें सवाल पर पहुंचे, जो 12.5 लाख रुपये का था। भारत, जॉर्डन और जाम्बिया के झंडों से जुड़ा यही सवाल हॉट सीट पर उनके सफर का अंत बना। डॉ. अनुज भटनागर 12.5 लाख रुपये का सवाल गलत कर बैठे।

सवाल यह था

अनुज को भारत, जॉर्डन और जाम्बिया के झंडे दिखाए गए और पूछा गया: तस्वीर में दिखाए गए झंडों वाले देशों के बारे में इनमें से कौन-सी बात सही है? **विकल्प थे थे:** ए- इनके अंग्रेजी नाम नदियों के नाम पर हैं। बी- इनका आजादी का दिन एक ही है। सी- इनकी राजधानियों के नाम न्यू से शुरू होते हैं। डी- ये उत्तरी गोलार्ध में हैं **50-50 लाइफलाइन का इस्तेमाल :** सही जवाब को लेकर पक्ता न होने पर, अनुज ने अपनी आखिरी लाइफलाइन, 50-50 का इस्तेमाल किया। इस लाइफलाइन ने दो गलत विकल्पों राजधानियों के नाम न्यू से शुरू होते हैं और उत्तरी गोलार्ध में हैं को हटा दिया, जिससे उनके पास ये विकल्प बचे: ए- अंग्रेजी नाम नदियों से आए हैं। बी- आजादी का दिन एक ही है। अनुज ने आजादी का दिन एक ही है चुना, लेकिन यह गलत जवाब था। सही जवाब था अंग्रेजी नाम नदियों से आए हैं। गलत जवाब देने के बाद अनुज पैसे हार गए इसलिए उनकी जीती हुई रकम घटकर वापस 5 लाख रुपये हो गई और आखिर में उन्हें यही रकम मिली। **‘केबीसी 18’ के बारे में:** ‘कौन बनेगा करोड़पति 18’ की शुरुआत सीमित लाइफलाइन ऑप्शन के साथ होती है और जैसे-जैसे कंटेस्टेंट गेम में आगे बढ़ते हैं, उन्हें और लाइफलाइन मिलती जाती हैं। कंटेस्टेंट ‘सुपर सैंडवूच’ राउंड के जरिए 50-50 लाइफलाइन भी हासिल कर सकते हैं, जबकि ‘महापिलप’ एक और लाइफलाइन है जिसे गेम में बाद में शामिल किया गया है। मौजूदा सीजन में कई कंटेस्टेंट ने शानदार जीत हासिल की है। इनमें से दो कंटेस्टेंट 1 करोड़ रुपये के सवाल तक तो पहुंचे, लेकिन उन्होंने गेम छोड़ने और 50 लाख रुपये लेकर घर जाने का फैसला किया।

सलमान खान ही नहीं, हॉलीवुड में छाए बॉलीवुड के ये सितारे

मुंबई। बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान ने ‘मैरीगोल्ड’ समेत कई अंतरराष्ट्रीय फिल्मों में काम किया है। अब वह बहुप्रतीक्षित एक्शन थ्रिलर फिल्म ‘7 डॉग्स’ में नजर आ रहे हैं, जो 21 अगस्त को रिलीज हो चुकी है। हालांकि, सलमान

प्रियंका और इरफान



प्रियंका चोपड़ा का नाम इस सूची में पहले स्थान पर है। वो फिल्म ‘बेवॉच’ और ‘क्वांटिको’ जैसी सीरीज के जरिए वैश्विक स्तर पर पहचान बना चुकी हैं। वहीं शादी के बाद प्रियंका विदेश में रहती हैं और हॉलीवुड फिल्मों में ज्यादा काम करती हैं। इरफान खान ने ‘रलमंडांग मिलियनेयर’, ‘लाइफ ऑफ पाई’ और ‘जुरासिक वर्ल्ड’ जैसी कई बड़ी हॉलीवुड फिल्मों में काम किया है। हॉलीवुड में उनकी पहचान एक बेहतरीन वैश्विक अभिनेता के रूप में थी।

दीपिका और ऐश्वर्या राय

इस सूची में दीपिका पादुकोण का नाम भी शामिल है। वो साल 2017 में आइ फिल्म ट्रिपल एक्स- रित्व ऑफ जेडर

अकेले ऐसे बॉलीवुड अभिनेता नहीं हैं, जिन्होंने विदेशी फिल्मों में अभिनय किया है। हिंदी सिनेमा के कई सितारे अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट्स का हिस्सा रह चुके हैं। ऐसे में आइए जानते हैं, इस खास सूची में कौन-कौन शामिल हैं।

केज में विलेन का किरदार निभाया था। उनके अभिनय को लोगों ने खूब पसंद किया था। बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन ने कई हॉलीवुड फिल्मों में काम किया है। उनकी प्रमुख हॉलीवुड फिल्मों में ‘बाइड एंड प्रेजुडिस’ (2004), ‘प्रोवेनड’ (2006), ‘द लास्ट लीजन’ (2007) और ‘द पिक पैथर 2’ (2009) जैसी फिल्में शामिल हैं।

नसीरुद्दीन शाह

प्रसिद्ध भारतीय अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने बॉलीवुड के साथ-साथ हॉलीवुड में भी काम किया है। उनकी सबसे चर्चित फिल्मों की बात करें, तो वो फिल्म ‘द मॉनसून वेडिंग’, ‘द लीग ऑफ एक्स्ट्राऑर्डिनरी जेंटलमैन’, ‘दा गेट न्यू वंडरफुल’ में नजर आ चुके हैं।



नेपाल के इन कलाकारों ने बॉलीवुड में भी जमाया सिक्का

मुंबई। नेपाल इन दिनों भीषण बाढ़ से जूझ रहा है। इस प्राकृतिक आपदा में सैकड़ों लोगों की मौत की खबर है, जबकि 1,000 से अधिक लोग लापता बताए जा रहे हैं। बॉलीवुड में भी हर कोई नेपाल में जल्द हालात सामान्य होने की प्रार्थना कर रहा है। ऐसे में आपको बता दें कि नेपाल के भी कई कलाकार अपनी प्रतिभा से बॉलीवुड में खास पहचान बना चुके हैं। आइए जानते हैं उन नेपाली कलाकारों के बारे में।

उदित नारायण और आदित्य नारायण : उदित नारायण का जन्म नेपाल में ही हुआ था। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 1970 में रेडियो नेपाल में मैथिली लोक गायक के तौर पर की थी। फिर वहां 8 साल तक काम करने के बाद उन्होंने बॉलीवुड में किस्मत आजमाई और सुपरहिट फिल्म साबित हुए। उदित के बेटे आदित्य नारायण का नाम भी इस सूची में शामिल है। वैसे तो उनका जन्म भारत में हुआ है, लेकिन उनका परिवार मूल रूप से नेपाल का रहने वाला है। **माला सिन्हा और मनीषा कोइराला :** माला सिन्हा का जन्म नेपाली-कश्चिगिन परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने अभिनय करियर की शुरुआत बंगाली फिल्मों से की थी। इसके बाद उन्होंने नेपाली फिल्मों में काम किया और फिर बॉलीवुड में भी अपना नाम बनाया। मनीषा कोइराला नेपाल के प्रतिष्ठित घराने से ताल्लुक रखती हैं।



उनका जन्म नेपाल में ही हुआ था। हालांकि, अपना करियर बनाने के लिए वो भारत आ गईं और यहां पर उन्होंने कई सुपरहिट फिल्मों में काम किया। **सुनील थापा :** सुनील थापा नेपाली सिनेमा के मशहूर अभिनेता थे। उन्होंने बॉलीवुड के साथ-साथ नेपाली सिनेमा में अपने बेहतरीन अभिनय से लोगों के दिलों में एक खास पहचान बनाई थी। हालांकि, उनका निधन साल 2026 के शुरुआत में हो गया था।

रक्षाबंधन पर अपने फैस को बधाई देते आए नजर

एक-दूसरे पर जान छिड़कते हैं बॉलीवुड के ये भाई-बहन, करियर अलग-अलग

मुंबई। देशभर में रक्षाबंधन का पर्व धूमधाम से मनाया गया है। बॉलीवुड में भी यह त्योहार खास अंदाज में मनाया जाता है। फिल्म इंडस्ट्री में कई ऐसे सेलिब्रिटी भाई-बहन हैं, जिन्होंने अपने करियर के लिए अलग-अलग क्षेत्र चुने। किसी ने अभिनय में पहचान बनाई, तो किसी ने कारोबार या अन्य पेशे को अपनाया। अलग-अलग राह चुनने के बावजूद इन सितारों के बीच प्यार बेहद मजबूत है। ऐसे में आइए उन सितारों के बारे में जानते हैं। **सैफ अली-सबा अली और अभिषेक-श्वेता बच्चन** सैफ अली खान एक प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता और निर्माता हैं, जबकि उनकी बहन सबा अली खान (सबा पटौदी) पेशे से एक उच्चैरी डिजाइनर, टैरो रीडर और उद्यमी हैं। इसके साथ ही पटौदी परिवार की धर्मार्थ संपत्ति और लेखा-जोखा संभालती हैं। अभिषेक बच्चन एक प्रसिद्ध भारतीय अभिनेता और निर्माता हैं, जबकि श्वेता बच्चन नंदा एक लेखिका और कॉलमनिस्ट हैं। इसके साथ ही उन्होंने अपना खुद का फैशन लेबल शुरू किया है।



सलमान-अलवीरा खान अग्निहोत्री : सलमान खान एक प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता और फिल्म निर्माता हैं, जबकि उनकी बहन अलवीरा खान अग्निहोत्री एक फैशन और कॉस्ट्यूम डिजाइनर हैं। उनका ‘अहागजाई’ नाम का एक मार्टिस्टोर भी है। इसके साथ ही वो फिल्म निर्माता भी हैं।

अर्जुन कपूर-अंशुला कपूर और संजय दत्त-प्रिया दत्त

अर्जुन कपूर एक प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता हैं, जबकि अंशुला कपूर एक उद्यमी हैं और उन्होंने ‘फैनकाइंड’ नाम से एक स्टार्टअप शुरू किया है। इसके साथ ही वो सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर भी हैं। संजय दत्त एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं और प्रिया दत्त भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नेता हैं और महाराष्ट्र के मुंबई से 2 बार लोकसभा सांसद रह चुकी हैं। इसके साथ ही वो सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं।

मुंबई। पूरे देश में इस वक्त रक्षाबंधन की धूम मची हुई है। इस अवसर पर बॉलीवुड सितारे भी अपने-अपने भाई और बहनों के साथ इस त्योहार को मना रहे हैं। अक्षय कुमार ने अपनी बहन अलका भाटिया के साथ एक पुरानी तस्वीर साझा की और फैस को रक्षाबंधन की बधाई दी। उन्होंने पोस्ट के साथ लिखा, ‘रिश्ता वो, जिसमें नोकझोंक भी है, प्यार भी है और हर मुश्किल में साथ भी। हर भाई-बहन को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं!’ **कंगना ने अपने भाई को बांधी राखी :** अभिनेत्री कंगना रनौत ने अपने भाई को राखी बांधते हुए तस्वीरें इंस्टाग्राम पर साझा कीं। उन्होंने लिखा, ‘मेरे प्यारे भाई, मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि ये प्रेम का बंधन जो मैंने तुम्हारे हाथ पर बांधा



कभी नहीं बदलते। सिर्फ तस्वीरें बदलती हैं। हमारी इस छोटी-सी दुनिया से लेकर जीवन में हमें जो भी मिला, वहां तक... मेरी बहनें हमेशा मेरे साथ रहने वाले ‘घर’ का एक हिस्सा रही हैं। रक्षाबंधन की शुभकामनाएं। तुम्हारा भाई।’ अनुपम खेर भी रक्षाबंधन पर अपने फैस को बधाई देते नजर आए। उन्होंने त्योहार से जुड़ी एक तस्वीर साझा

हॉलीवुड मसाला



एवेंजर्स एंडगेम का ट्रेलर जारी

लॉस एंजिल्स। मार्वल की फिल्म ‘एवेंजर्स एंडगेम’ ने 2019 में रिलीज होकर तहलका मचा दिया था। निर्माताओं ने पुरानी यादों को ताजा करने के लिए फिल्म को दोबारा सिनेमाघरों में उतारने का फैसला किया है। दिलचस्प बात यह है कि इस बार फिल्म में कुछ नया फुटेज भी जोड़ा है और इसे ‘एवेंजर्स: एंडगेम एनकोर’ के रूप में सिनेमाघरों में री-रिलीज किया जाएगा। यूट्यूब पर इसका आधिकारिक ट्रेलर रिलीज कर दिया गया है, जिससे फैस का उत्साह देखने लायक है।



‘कंट्री म्यूजिक’ की गायिका व अभिनेत्री डॉली का निधन

लॉस एंजिल्स। कंट्री म्यूजिक की महारानी, गीतकार और अभिनेत्री डॉली पार्टन का 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया। टेनेसी के एक छोटे से लकड़ी के मकान से संगीत की बुलंदियों तक पहुंचने वाली डॉली ने कैन्सर जैसी गंभीर बीमारी से बहादुरी से लड़ते हुए अंतिम सांस ली। अपने तमाम कालजयी गानों से उन्होंने करोड़ों दिलों पर राज किया। उनका निधन संगीत जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति और एक महान युग का अंत है। ‘कंट्री म्यूजिक की महारानी’ डॉली के निधन का दुःखद समाचार उनके भतीजे बायन सीवर ने दिया। अपने आकर्षक व्यक्तित्व, बड़े विंग और अनोखे स्टाइल के साथ-साथ अपने चुटीले स्वभाव के लिए जानी जाने वाली डॉली पार्टन संगीत जगत की सबसे पसंदीदा हस्तियों में से एक थीं। वो एक ऐसी विरली कलाकार थीं, जिनकी लोकप्रियता पीढ़ी, भूगोल और राजनीति की सीमाओं से परे थी।

विशेष: जन्माष्टमी, 4 सितंबर

हमारे आराध्य-पथप्रदर्शक पूर्णावतार श्रीकृष्ण

जन्माष्टमी केवल श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव नहीं, एक स्मरण है कि कान्हा की हर लीला, हर प्रसंग हमें आचरण के वो पाठ सिखाते हैं, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके युग में थे। यही वजह है कि युगों बाद भी पूर्णावतार श्रीकृष्ण हमारे लिए आराध्य भगवान ही नहीं, शिक्षक की तरह जीवन के पथप्रदर्शक भी बने हुए हैं।

आवरण कथा

रामिनी रामपल्लीवार

भगवान श्रीकृष्ण को हम पूजते हैं, यह सत्य है। मंदिरों में उनकी प्रतिमा सजती है, जन्माष्टमी पर घर-घर दीप जलते हैं और भजनों में उनका नाम गुंजता है। पर यदि कृष्ण केवल पूजा तक सीमित रह जाएं, तो शायद हमने उन्हें आधा ही जाना। उनका अवतारी जीवन कोई कथा-मात्र नहीं, बल्कि ऐसा दर्पण है, जिसमें झाँककर हम अपने आचरण को तराश सकते हैं। वे केवल आराध्य नहीं, आचार्य सदृश पथप्रदर्शक भी हैं। आज की दुनिया में हमारे सामने कुरुक्षेत्र जैसा कोई युद्ध नहीं है, फिर भी हमारे भीतर न जाने कितने युद्ध चल रहे हैं! रिशतों में अविश्वास है, सफलता की होड़ है, अकेलापन है, विफल होने का डर है और हर समय दूसरों से अपनी तुलना करते रहने की बेचैनी है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण को केवल मंदिर में पूजने की नहीं, उनके गुणों को आत्मसात करने की भी जरूरत है।

सच्ची मित्रता की मिसाल: सुदामा और श्रीकृष्ण की मित्रता आज भी मित्रता का सबसे सुंदर उदाहरण है। एक ओर द्वारिकाधीश, दूसरी ओर अभाव में जीवन बिताता उनका बालसखा। जब सुदामा संकोच में लिपटे, साधारण वस्त्र पहने और मुड़ी भर चिचड़ा लेकर द्वारका पहुंचे, तो श्रीकृष्ण ने अपने मित्र को राजसी औपचारिकताओं के पीछे नहीं छिपने दिया। वे आगे बढ़े, उन्हें गले लगाया और उनके लिए छोट-से उपहार को उसी प्रेम से स्वीकार किया, जैसे वह कोई अनमोल भेंट हो। न वहां धन का भेद था, न पद का अहंकार। सच्ची मित्रता समय और परिस्थिति की मोहताज नहीं होती। वह यह नहीं पूछती कि आज तुम कितने सफल हो, बल्कि यह याद रखती है कि तुम कभी मरे अपने थे। आज जब दोस्ती भी कई बार सुविधा, हैसियत और सामाजिक दायरे से तय होती है, श्रीकृष्ण का जीवन एक सवाल करता है कि क्या हमारे पास ऐसा मित्र है, जिसके सामने हमें अपनी सफलता साबित करने की जरूरत नहीं पड़ती? और क्या हम किसी के लिए ऐसे मित्र हैं?

मित्रता का दूसरा रूप भी: अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की मित्रता इसका दूसरा रूप दिखाती है। यहां वह मित्र भी हैं, सारथी भी और

मार्गदर्शक भी। कुरुक्षेत्र में अर्जुन मोह और दुविधा से घिर गए। श्रीकृष्ण ने उनकी जगह निर्णय नहीं लिया। उन्होंने उनके भीतर के भ्रम को समझा, प्रश्नों का उत्तर दिया और अंततः निर्णय लेने की शक्ति अर्जुन के भीतर ही जगाई। आज के जीवन में भी सच्चा मित्र वही है, जो केवल हमारी हानि में हानि न मिलाए। जब हम भ्रमित हों, तब सही बात कहने का साहस रखे और फिर निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी हमें दे।

स्त्री सम्मान के रक्षक: द्रौपदी के अपमान का प्रसंग महाभारत का सबसे पीड़ादायक प्रसंग है। भरी सभा में जब उसकी गरिमा पर आघात हुआ और वह असहाय होकर सहायता की पुकार करती रही, तब श्रीकृष्ण उसके भरोसे का केंद्र बने। पर इस प्रसंग की सबसे बड़ी सीख केवल चमत्कार में नहीं, उस प्रश्न में है जो हमसे पूछता है कि जब किसी स्त्री के सम्मान पर आंच आए, तब हम कहां खड़े होते हैं?

हम कहां खड़े होते हैं? श्रीकृष्ण का जीवन बताता है कि सामर्थ्य का अर्थ केवल स्वयं को सुरक्षित रखना नहीं, बल्कि जरूरत के समय किसी दूसरे की गरिमा की रक्षा के लिए खड़ा होना भी है। आज स्त्री-सम्मान की बातें बहुत होती हैं। लेकिन सम्मान केवल अच्छे-बड़े शब्दों से नहीं आता। वह हमारे व्यवहार, हमारी दृष्टि और उस समय लिए गए निर्णयों में दिखाई देता है, जब किसी के साथ अन्याय हो रहा हो। श्रीकृष्ण का यह रूप हमें संवेदनशील होने के साथ साहसी होना भी सिखाता है।

समर्थ होकर भी विनम्र: श्रीकृष्ण के पास अपार सामर्थ्य था, फिर भी उन्होंने महाभारत के युद्ध में शस्त्र न उठाने का निर्णय लिया और अर्जुन के सारथी बने। एक योद्धा का सारथी बनना किसी शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि अर्जुन की अहंकार से ऊपर रखने का उदाहरण था। आज की दुनिया में सफलता के साथ अहंकार बहुत आसानी से चला आता है। पद बदलता है तो व्यवहार बदल जाता है, कमाई बढ़ती है तो पुराने रिश्ते छोटे लगने लगते हैं। श्रीकृष्ण इसके ठीक उलट खड़े दिखाई देते हैं। वे सिखाते हैं कि ऊँचाई का असली अर्थ ऊपर उठना नहीं, ऊपर उठकर भी सहज बने रहना है।

हर परिस्थिति में संतुलन: श्रीकृष्ण का जीवन संघर्षों से भरा था। जन्म कारागार में हुआ, बाल्यकाल में अनेक संकट आए, मथुरा छोड़कर द्वारका बसानी पड़ी और अंततः अपने ही वंश के

विशेष: शिक्षक दिवस, 5 सितंबर

मले ही आज दुनिया भर के हर विषय की जानकारी गूगल और एआई के जरिए एक क्लिक पर उपलब्ध है। लेकिन बेहतर मनुष्य बनने के लिए जरूरी सैद्धांतिक, नैतिक और व्यावहारिक ज्ञान शिक्षक ही हमें दे सकता है। तकनीकी क्रांति के दौर में भी शिक्षक की भूमिका कम नहीं हुई है।

गुरुकुल से गूगल-एआई तक बरकरार है शिक्षक की महत्ता

बदलाव / लोकमित्र गौतम

एक समय था, जब ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ किसी गुरु के सान्निध्य में बैठकर जीवन का समझना होता था। शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती थी बल्कि वह संस्कार, अनुशासन, विवेक और चरित्र निर्माण का माध्यम भी थी। भारतीय परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दिया गया है, क्योंकि वह अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक होता है। लेकिन ये सब पुरानी बातें हैं। आज 21वीं सदी में दुनिया बदल चुकी है। ज्ञान हमारी हथेली पर मौजूद है। मोबाइल फोन में समा गया है। गूगल के माध्यम से हम मिनटों में ही सैकड़ों सवालों के उत्तर दे सकते हैं और अब तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदीलत दुनिया के जटिल से जटिल सवाल का भी सैंकड़ों में उत्तर प्रस्तुत कर सकते हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या तकनीक के इस युग में गुरु यानी शिक्षक की भूमिका बदल गई है या फिर उसका महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है?

ज्ञान कम-जानकारियां बेशुमार: वास्तव में आज तकनीक ने ज्ञान तक हमारी पहुंच बेहद आसान कर दी है। पहले किसी विषय को समझने के लिए पुस्तकालयों की धूलभरी अलमारियां खंगालनी पड़ती थीं। जबकि आज दुनिया के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के दुर्लभ व्याख्यान, शोधपत्र और पाठ्यक्रम महज कुछ क्लिक की दूरी पर उपलब्ध हैं। आज हम किसी भी विषय पर वीडियो देख सकते हैं, चाहे छात्र हों या न हों। वास्तव में इस परिवर्तन ने शिक्षा को बेहद लोकतांत्रिक बनाया है। अब गुणवत्तापूर्ण जानकारी केवल बड़े शहरों या प्रतिष्ठित संस्थानों तक सीमित नहीं है। लेकिन एक महत्वपूर्ण अंतर भी पैदा हुआ है। आज जानकारी और ज्ञान एक-दूसरे के पर्याय नहीं रहे। जानकारीयां सिर्फ तथ्यों का संग्रह है, जबकि ज्ञान उन तथ्यों को सही संदर्भ में समझने और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करने का माध्यम है। गूगल यह बताता है कि कोई निर्णय कैसे लिया जा सकता है? एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे सामने किसी विषय का सार प्रस्तुत कर सकती है। लेकिन वह हमें जीवन के अनुभव, संवेदना और

मानवीय मूल्यों का स्थान नहीं ले सकती। भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा: भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि शिक्षक केवल पाठ नहीं पढ़ाता बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण भी करता है। महर्षि वेदव्यास, आचार्य चाणक्य, गुरु वशिष्ठ, गुरु द्रोणाचार्य से लेकर आधुनिक काल में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे अनेक शिक्षकों ने सिर्फ ज्ञान भर नहीं दिया बल्कि अपने शिष्यों में दृष्टि, आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व का भाव भी विकसित किया है, जो किसी भी मशीन या सचि ईंजन के बस में नहीं है। बदल गई शिक्षक की भूमिका: आज के समय में शिक्षक की भूमिका काफी हद तक बदल गई है, लेकिन समाप्त नहीं हुई। पहले शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत होता था, अब वह सिर्फ ज्ञान का मार्गदर्शक बनता जा रहा है। पहले छात्र उत्तर जानने के लिए शिक्षक पर निर्भर थे, आज यह काम तो इंटरनेट भी कर देता है। लेकिन सही उत्तर की पहचान करना, उसकी विश्वसनीयता को परखना, विभिन्न विचारों की तुलना करना और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करना, अभी भी यह सब भूमिकाएं शिक्षक के पास ही हैं। आज शिक्षक की जिम्मेदारी केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने, तर्क करने और स्वतंत्र सोच विकसित करने की क्षमता भी पैदा करना है। और महत्वपूर्ण हो गई भूमिका: वास्तव में एआई या कोई भी तकनीक चाहे जितनी उन्नत हो, लेकिन है तो एक तकनीक ही। यह शिक्षक को स्थानापन्न नहीं कर पाएगी। एआई के बावजूद शिक्षक का काम रचनात्मक उपयोग, पहले से कहीं ज्यादा जरूरी बना रहेगा। एआई के बावजूद शिक्षक का काम शिक्षा को अधिक रोचक बनाना बना रहेगा और एआई के बावजूद शिक्षक व्यक्तिगत और प्रभावी बना रहेगा, यानी एआई हर किसी को एक जैसी सहूलियत नहीं दे सकता। जो एआई के उपयोग में माहिर नहीं है, उन्हें अभी-भी ज्ञान, जानकारीयां और विश्लेषण के लिए शिक्षक की तरफ ही देखना होगा। शिक्षक दिवस के अवसर पर हमें यह भी समझना चाहिए कि गुरु का काम केवल सूचना देना भर नहीं होता। वह जीवन को दिशा देता है।

दोहे

राजेंद्र श्रीवास्तव

बरस रहे घनघोर

कल जाने क्या कर गए, इन मेघों से गोर।
आज गोर से ले ही यहाँ, बरस रहे घनघोर॥
बरसे मेघा श्रवदर, भरे तलैया-तात।
उड़े पवन के साथ फिर, बेचारे कंगाल॥
इस रिगिझ बरसात में, भीगी-भीगी गोर।
शर्रों में सड़कें धुलें, दन में नाचे गोर॥
सांझ ठढी रिर पर पड़ी, शीतल सुखद फूस।
झन-झन झन झंकृत हुए, मन-वीणा के तार॥
पावस रितु में छा गए, नभ पर घन भरपूर।
श्रिभनंदन वातक करें, स्वागत-नृत्य गमूर॥
सुनौ पपीहा की कहीं, पिय-पिय करुण पुकार।
आस बंधाने आ गई, यह पावसी फूसर॥
गाठी की मनुहार पर, मेघ गया नन हार।
रुककर बरसाने लगा, प्यार और जल-धार॥

लघुकथाएं

पनी सहेली दिव्या से पायल ने दुविधा प्रकट करते हुए कहा, 'मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं यह शादी करूँ या नहीं?' 'क्यों क्या हुआ, अच्छे-खासे घर का बहिष्ता कमाने वाला हैडसम बंदा है।' दिव्या ने समझाया। 'असल में जब से सगाई हुई है, तब से हम दोनों की नियमित बात होने लगी है।' 'हां तो यह तो और अच्छी बात है। मैरिज के पहले ही एक-दूसरे को समझने का मौका मिल रहा है।' दिव्या ने उसकी आशंका को कम करना चाहा। 'यहीं से तो मुश्किल शुरू हुई है।
बात-बात पर वह गुस्सा करने लगते हैं। मैं उनसे कहती कुछ हूं और वह उस बात का कुछ और (मनमाना) अर्थ निकालकर मुझ पर ऐसे दोष मढ़ते हैं कि मैं अपराधबोध से ग्रसित हो जाऊं। बात-बात पर मुझसे झूठ भी बोलते हैं। समझ नहीं आ रहा है कि इस रिश्ते के लिए न करूँ तो कैसे? डर है इससे सब घर वाले नाराज हो जाएंगे।' पायल ने चिंतित होते हुए सारी बात बताई। 'पागल हो गई हो तुम। जब तुम्हारा भावी साथी अपने व्यवहार से रेंड सिमनल दे रहा है, तब क्यों सबकी खुशी के लिए खुद को झोंक देने को तुली हुई हो? अगर तुमने अभी दृढ़ता से मनचाहा निर्णय नहीं लिया तो वह शख्स,
हुल की मोटरसाइकिल का टायर अचानक रास्ते में पंक्चर हो गया। वह पास की एक छोटी-सी ऑटो रियरिंग शॉप पर पहुंचा। वहां लगभग चालीस वर्ष का एक कारीगर बड़ी तमयता से अपना काम कर रहा था। चलते समय उसके एक पैर में हल्की-सी लचक साफ दिखाई दे रही थी। राहुल की आदत थी कि वह हर किसी को हंसते हुए 'क्या हाल हैं, हीरो!' या 'कैसे हो, हैडसम!' कहकर संबोधित करता था। जैसे ही उसने मुस्कराकर कहा, 'क्यों हीरो, मेरी बाइक का टायर ठीक कर दोगे?' इतना सुनना था कि कारीगर का चेहरा उतर गया। उसने धीमे स्वर में कहा, 'साहब, मजाक मत कीजिए ऊपर वाले ने तो मुझे हीरो बनने लायक छोड़ा ही कहा है?' राहुल उसकी पीड़ा समझ गया। उसने तुरंत गंभीर होकर कहा, 'भैया, मैं मजाक नहीं कर रहा। मेरे लिए हीरो वह होता है जो अपने हुनर और मेहनत

जीवन सारथी

तुम्हारा जीवनसाथी नहीं जीवन सारथी बन जाएगा। अब डिसाइड तुमको करना है कि तुम्हें जीवनसाथी चाहिए या जीवन सारथी।' दिव्या ने स्पष्ट तौर पर उसे समझाया। उसकी इस समझाइश से पायल की आंखों में दृढ़ निर्णय लेने की चमक साफ नजर आने लगी।
-आरती आस्था

ओ हीरो!

थी। पैसे लेते हुए वह मुस्कराया और बोला, 'भैया, अगली बार बाइक में कोई समस्या हो तो अपने इस हैडसम हीरो के पास ही आना।' राहुल ने देखा, उस क्षण कारीगर की आंखों में शिकायत नहीं, उसका आत्मविश्वास चमचमा रहा था।
-पावनी

देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ मुद्दे प्राक

आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mushroomworld.com
Amazon India Flipkart

वज़न बढ़ाने में सहायक

मसहम एवं 12+ जड़ी-बुटियां

10 दिनों में अक्सर देखें

क्योंकि वज़न है, तो वज़नदारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry - +91 888 922 3333

निष्करुण समय में

हम जिस समय-समाज में जी रहे हैं, वह एक बड़े वर्ग के लिए बहुत निर्मम और निष्करुण है। संतोष की बात है कि हाशिए पर निरंतर धकेले जा रहे ऐसे वर्ग की दबी-दबी ही सही कुछ आवाजें, कविताओं में यदा-कदा सुनाई पड़ जाती हैं। युवा कवि शंकरानंद के नए कविता संग्रह 'नाखून में फंसी मिट्टी' की कविताओं को भी इस नजरिए से देखा जा सकता है। इन कविताओं में जीवन की त्रासदियों को वे बहुत सशक्तता से व्यक्त करते हैं। मिसाल के तौर पर गांव से शहर में विस्थापन की बाध्यता के दर्द को 'मेरे साथ गांव/सिर्फ परिचय में कागज पर है/ बस उतनी ही हैं

जानकूर जे फंसी मिट्टी

जानकूर

मेरे पास जड़ें/जितनी पैरों के नाखून में फंसी मिट्टी' (नाखून में फंसी मिट्टी) जैसी पंक्तियों में महसूस किया जा सकता है। किसानों की मनोव्यथा को इस पंक्ति में देखा जा सकता है, 'वह किसी मुलायम मिट्टी जितना भुरभुरा है/इस तरह कि बूने से टूट जाए' (इन दिनों किसान)। इसी तरह 'स्त्री का दुख' कविता की ये पंक्तियां हमें स्त्री जीवन की उस मार्मिक पीड़ा की अनुभूति कराती हैं, जिसे प्रायः पुरुषों के द्वारा उपेक्षित ही किया जाता रहा है, 'कुछ दुख होते ही हैं ऐसे/जिसे कहा नहीं जाता/जुबान लाचार हो जाती है।' संग्रह की अधिकांश कविताएं हमारे समय की कुरूप छवियों को पूरी संवेदना के साथ सामने रखती हैं।
किताब: नाखून में फंसी मिट्टी (कविता संग्रह), रचनाकार: शंकरानंद, मूल्य: 325 रुपए, प्रकाशक: सेतु प्रकाशन, नोएडा

यूएस ओपन

सबालेंका के फॉर्म पर सवाल
खिताबी हैट्रिक पर नजर



एजेसी ►► न्यूयॉर्क

विश्व की नंबर एक खिलाड़ी एरीना सबालेंका हाल की खराब फॉर्म के बावजूद रविवार से शुरू होने वाले यूएस ओपन टेनिस टूर्नामेंट में खिताबी हैट्रिक पूरी करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

सबालेंका पिछले कुछ टूर्नामेंटों में चौथे दौर से आगे भी नहीं बढ़ पाई हैं, जिसे देखते हुए वह सेरेना विलियम्स (2012-14) के बाद लगातार तीन यूएस ओपन खिताब जीतने वाली पहली खिलाड़ी बनने के लिए शायद ही

तैयार दिखती हैं। लेकिन सबालेंका चिंतित नहीं लग रही हैं। वह तो विद्रोही लग रही हैं। जो लोग यह जानना चाहते थे कि उनके खेल में क्या खराबी है, उनके जवाब में उन्होंने कहा, 'शायद लोगों में ही कुछ खराबी है।'

सबालेंका लगातार तीसरा खिताब

सबालेंका लगातार तीसरा खिताब जीतने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने यहां 2024 में फाइनल में जैसिका पेगुला को हराकर पहली बार खिताब जीता था। पिछले साल उन्होंने अमांडा अनिसिमोवा को हराकर अपने खिताब का बचाव किया था।

सबालेंका ने की थी साल की अच्छी शुरुआत

सबालेंका ने साल की अच्छी शुरुआत की। ऑस्ट्रेलियाई ओपन के फाइनल में एलेना रायबाकिना से हारने के बाद उन्होंने इंडियन वेल्स और मियामी में लगातार दो हार्ड कोर्ट खिताब जीते। विंबलडन में चौथे दौर में नाओमी ओसाका से हारने के बावजूद माना जा रहा था कि वह जल्द ही अपनी पुरानी फॉर्म में लौट आएंगी, क्योंकि हार्ड कोर्ट उनकी पसंदीदा सतह रही है। लेकिन सबालेंका टोरंटो में चौथे दौर में एकतेरिना एलेक्जेंड्रोवा से हार गई और सिनसिनाटी में सारा बेजलेक ने उन्हें दोनों सेटों में बड़त का फायदा नहीं उठाते दिया।

मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया : एरिना

सबालेंका ने कहा, 'वह दौर मेरे लिए अच्छा नहीं था। मैं अपना बचाव नहीं करना चाहती। लेकिन जाहिर है कि मैं उस दौर के बारे में बात नहीं करना चाहती। मैं कई चीजों से जूझ रही थी।' उन्होंने कहा, 'मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया। ये कई सबक मुझे और भी ज्यादा मजबूत बनाएंगे और मैं और कड़ी मेहनत करूंगी। वापसी करना बस समय की बात है।'

अल्काराज की 4 महीने बाद वापसी, पुराने फॉर्म में लौटने की उम्मीद

एजेसी ►► नई दिल्ली

अपनी दाहिनी कलाई में लगी चोट के कारण चार महीने से अधिक समय तक खेल से बाहर रहने वाले कार्लोस अल्काराज को उम्मीद है कि वह अपनी पुरानी फॉर्म में लौट कर रविवार से शुरू होने वाले यूएस ओपन टेनिस टूर्नामेंट में अपने खिताब का बचाव करने में सफल रहेंगे। मौजूदा चैंपियन अल्काराज चोटिल होने के कारण फ्रेंच ओपन और विंबलडन में नहीं खेल पाए थे लेकिन उन्हें लगता है

कि वह वर्ष का अंतिम ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट खेलने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा, 'आप कार्लिंटोस को उसी तरह खेलते हुए देखेंगे जैसे वह हमेशा खेलता आया है।'

मुझे प्रतिस्पर्धा की जरूरत : अल्काराज

अल्काराज ने कहा, 'मुझे प्रतिस्पर्धा की जरूरत है। मेरा और मेरी टीम का मानना है कि मैं पूरी तरह से तैयार हूं। वापसी का फैसला करना आसान नहीं था। मैंने इसके लिए अपनी तरफ से हर संभव प्रयास किया है।'



दलीप ट्रॉफी सेमीफाइनल : आज मौजूदा चैंपियन मध्य क्षेत्र का सामना पूर्वी क्षेत्र से

फाइनल की जंग शुरू, भिड़ेंगी
चार टीमों, दो का टूटेगा सपना

►► बैंगलुरु। मौजूदा चैंपियन मध्य क्षेत्र रविवार से शुरू होने वाले दलीप ट्रॉफी के सेमीफाइनल में आत्मविश्वास से भरी पूर्वी क्षेत्र का सामना करेगा जबकि उत्तर क्षेत्र और पिछले साल की उपविजेता दक्षिण क्षेत्र के बीच भी रोमांचक मुकाबला होने की संभावना है। उत्तर और पूर्व क्षेत्र को टीम क्वार्टर फाइनल में जीत हासिल करके आगे बढ़ी हैं जबकि मध्य और दक्षिणी क्षेत्र को सेमीफाइनल में सीधे प्रवेश मिला था। पूर्वी क्षेत्र ने क्वार्टर फाइनल में उत्तर पूर्वी क्षेत्र को करारी शिकस्त दी थी जबकि उत्तर क्षेत्र ने पश्चिम क्षेत्र के खिलाफ बाएं हाथ के स्पिनर आबिद मुश्ताक की शानदार गेंदबाजी की बदौलत रोमांचक जीत हासिल की थी।



पाटीदार और तिलक को करनी
होगी शानदार शुरुआत

लगातार दूसरे साल रजत पाटीदार की कप्तानी में खेल रहे मध्य क्षेत्र और तिलक वर्मा की अगुवाई वाली दक्षिण क्षेत्र की टूर्नामेंट में एक भी मैच न खेलने के बावजूद शानदार शुरुआत करनी होगी। मध्य क्षेत्र में पिछले साल ट्रॉफी जीतने वाली टीम के प्रमुख खिलाड़ियों को टीम में बनाए रखा है। पाटीदार आईपीएल और एमपी टी20 लीग में शानदार प्रदर्शन के बाद टूर्नामेंट में उतर रहे हैं, जबकि उप-कप्तान रिकू सिंह के रूप में उसके पास मध्य क्रम में एक और मजबूत खिलाड़ी है।

ईशान, सूर्यवंशी और ईश्वरन
से बड़ी पारी की उम्मीद

क्वार्टरफाइनल में पूर्व क्षेत्र ने शानदार प्रदर्शन करते हुए उत्तर पूर्वी क्षेत्र को पारी और 210 रन से करारी शिकस्त दी थी। इस मैच में बंगाल के सुदीप घरामी और शाहबाज अहमद ने शतक जड़े थे। कप्तान ईशान किशन, युवा सनसनी सूर्यवंशी और अनुभवी अजिंक्येश्वरन भी इस मैच में बड़ी पारियां खेलने की कोशिश करेंगे। शाहबाज ने वार विकेट लेकर गेंदबाजी में भी अहम योगदान दिया था। उनके अलावा अनुकूल रॉय ने दूसरी पारी में पांच विकेट लिए और अजिंजीत सरकार ने मैच में छह विकेट हासिल किए।

नार्थ और साउथ जोन
का पलड़ा बराबर

उत्तर क्षेत्र और दक्षिण क्षेत्र के बीच होने वाले सेमीफाइनल मुकाबले में दोनों टीम का पलड़ा लगभग समान नजर आता है। दक्षिण क्षेत्र के पास कप्तान तिलक वर्मा, रिकी भुई, नारायण जगदीशजन और करुण नाथर जैसे अनुभवी बल्लेबाज हैं। दक्षिण क्षेत्र की गेंदबाजी की बात करें तो श्रेयस गोपाल और बाएं हाथ के स्पिनर तनाय त्वागराजन गेंदबाजी आक्रमण में विविधता लाते हैं। तेज गेंदबाजी विभाग में उसका दशरेमदार विद्युत कावेरप्पा पर रहेगा।

वेस्ट जोन में टीम चयन
को लेकर सवाल

उत्तर क्षेत्र की टीम पश्चिम क्षेत्र को 52 रन से हराकर इस मुकाबले में उतरेगी। उसकी टीम के चयन को लेकर सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि रणजी ट्रॉफी में तीसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी सनत सांगवान पर यश दुल को प्राथमिकता दी गई है। दुल पश्चिम क्षेत्र के खिलाफ संघर्ष करते हुए नजर आए तथा केवल नौ रन और शून्य पर आउट हो गए, जबकि सांगवान बेंच पर बैठे मैच देखते रहे। सांगवान को इस मैच में अंतिम एकादश में जगह मिल सकती है।

गेंदबाजी आक्रमण में फेरबदल
कर सकता नार्थ जोन

उत्तर क्षेत्र अपने तेज गेंदबाजी आक्रमण में भी फेरबदल कर सकता है, जिसमें सुनील कुमार की जगह भारतीय तेज गेंदबाज गुरुनूर बराड़ को मौका दिया जा सकता है। गुरुनूर ने श्रीलंका ए के खिलाफ प्रभावशाली प्रदर्शन किया था। इंग्लैंड के खिलाफ वनडे में भी उनका प्रदर्शन उत्साहजनक रहा था। बल्लेबाजी ने उत्तर क्षेत्र की तरफ से उप कप्तान आयुष बडोनी की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने पिछले मैच की दोनों पारियों में अर्धशतक बनाए थे।

खबर संक्षेप



बुडापेस्ट ओपन स्ववाश के चैंपियन बने सैथिलकुमार बुडापेस्ट। भारत के वेलावन सैथिलकुमार ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए फाइनल में बालाज फरकास को हराकर हंगरी की राजधानी में खेले गए बुडापेस्ट ओपन स्ववाश के रूप में अपना पहला पीएसए कॉपर-लेवल का खिताब जीता। विश्व रैंकिंग में 54वें स्थान पर काबिज और आठवीं वरीयता प्राप्त भारतीय खिलाड़ी ने 43,500 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि वाले टूर्नामेंट के फाइनल में स्थानीय खिलाड़ी फरकास को 11-4, 11-2, 11-3 से हराकर अपना 11वां पीएसए टूर खिताब जीता। यह दोनों खिलाड़ी तीसरी बार आमने-सामने थे।

कट में जगह बनाने वाली
इकलौती भारतीय प्रणवी



किल्डारे। युवा गोल्फर प्रणवी उर्स प्रतिष्ठित केपीएमजी विमेंस आयर्लिश ओपन के दूसरे दौर में दो अंडर 70 का कार्ड खेल संयुक्त आठवें पायदान पर पहुंच गईं। प्राणवी कट में प्रवेश करने वाली इकलौती भारतीय है। वह तालिका में शीर्ष पर काबिज दक्षिण अफ्रीका की कैसांद्रा एलेक्जेंडर से 10 शॉट पीछे हैं। प्रणवी ने तीन बर्डी के मुकाबले तीन बोगी किए लेकिन 10वें होल में ईंगल लगाने के कारण वह दो अंडर का कार्ड खेलने में सफल रही।

एजेसी ►► नई दिल्ली

भारत के दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने शनिवार को घोषणा की कि अभ्यास के दौरान उनके टखने के लिगामेंट में चोट लग गई है, जिसके कारण वह आगामी एशियाई खेलों में नहीं खेल पाएंगे। चोपड़ा ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि लुसाने डायमंड लीग में सत्र का सर्वश्रेष्ठ श्रो करने के कुछ ही समय बाद उन्हें चोट लगी।

चोपड़ा ने कहा, 'कड़ी मेहनत के बाद मुझे लग रहा था कि मैं आखिरकार अच्छी लय हासिल कर रहा हूं, जिसकी मुझे तलाश थी और



लुसाने में मैंने सत्र का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।' उन्होंने कहा, 'दुर्भाग्य से कुछ समय बाद ही अभ्यास के दौरान मेरे टखने के लिगामेंट में चोट लग गई। अपने डॉक्टर और टीम से सलाह मशविरा करने के बाद हमने फैसला किया है

कि मैं इस सत्र में आगे नहीं खेल पाऊंगा। यह निराशाजनक है, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे लग रहा था कि मैं अपनी लय पाने के करीब था। लेकिन जैसा कि कहते हैं, उतार-चढ़ाव तो जीवन का हिस्सा होते हैं।'

आज से महिला टी20 एशिया कप, तीन बार जीता खिताब

भारत का रण शुरू, थाईलैंड के खिलाफ दबदबे की वापसी

एजेसी ►► दुबई

ऐसे समय में जबकि टीम की फॉर्म और निरंतरता पर सवाल उठ रहे हैं तब हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली भारतीय टीम रविवार को महिला टी20 एशिया कप ग्रुप ए के अपने पहले मैच में थाईलैंड के खिलाफ बड़ी जीत दर्ज करके अपने अभियान की शानदार शुरुआत करना चाहेगी।

पिछले एक दशक में महिला टी20 एशिया कप में भारत सबसे दबदबा बनाने वाली टीम रही है। उसने 2016-17 से इस टूर्नामेंट के टी20 प्रारूप के पांच संस्करणों में तीन बार खिताब जीता है लेकिन हाल में उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है।



चोट के कारण जेमिमा बाहर

एशिया कप और एशियाई खेलों के लिए मरोसेमंद बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिक्स के बाहर होने के बाद भारत ने अपनी टीम में प्रतिका रावल को शामिल किया है, लेकिन टीम को मध्य क्रम में जेमिमा की कमी खलेगी। भारत के पास स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा के रूप में मजबूत सलामी जोड़ी है लेकिन तीसरे नंबर और उसके बाद के बल्लेबाजों के लिए सबसे बड़ी चुनौती लय को बनाए रखना और स्कोरबोर्ड को गति प्रदान करना होगा।

खराब फील्डिंग चिंता का विषय

पिछली बार जब भारत इस प्रारूप में खेला था तब खराब फील्डिंग बड़ी चिंता का विषय था। भारतीय खिलाड़ियों ने कई कैच छोड़े, जो उसकी हार का प्रमुख कारण भी रहा। भारत को अगर एशिया कप और एशियाई खेलों में अपना दबदबा बरकरार रखना है तो उसे अपनी फील्डिंग में जल्द से जल्द सुधार करना होगा।

अल्काराज मौजूदा चैंपियन

अल्काराज मौजूदा चैंपियन हैं और लगातार दूसरी बार खिताब जीतने के प्रबल दावेदार हैं। एक साल पहले उन्होंने यानिक सिनर को हराकर नंबर एक रैंकिंग हासिल की थी। इस बार सिनर नहीं खेल रहे हैं। दाहिने घुटने में चोट के कारण उन्होंने नाम वापस ले लिया है। सिनर की अनुपस्थिति में अलेक्जेंडर ज्वेरेव शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी हैं। लेकिन सबकी निगाहें अल्काराज पर टिकी हैं, जिन्होंने इसी साल ऑस्ट्रेलियाई ओपन के फाइनल में नोवाक जोकोविच को हराकर अपना सातवां ग्रैंड स्लैम खिताब जीता था। अल्काराज का पहला मुकाबला रोमन सफिउलिन से होगा।

मैं विकेट लेने वाला
गेंदबाज हूं : सूर्यवंशी



एजेसी ►► नई दिल्ली

वैभव सूर्यवंशी भले ही दलीप ट्रॉफी क्वार्टर फाइनल में अपनी टीम की एकमात्र पारी में बल्लेबाजी में कुछ खास योगदान नहीं दे पाए लेकिन उन्होंने गेंद से शानदार प्रदर्शन करते हुए दो अहम विकेट चटकाए, जिसकी मदद से पूर्वी क्षेत्र ने पूर्वोत्तर क्षेत्र को पारी और 210 रन से करारी शिकस्त दी। सूर्यवंशी ने कहा, 'अगर आप किसी बल्लेबाज से पूछेंगे तो उसे गेंदबाजी करना भी पसंद होता है और गेंदबाज को बल्लेबाजी करना पसंद होता है। दोनों को एक-दूसरे की भूमिका निभाना काफी पसंद है।' सूर्यवंशी ने कहा, 'विपक्षी टीम के विकेट नहीं गिर रहे थे और मुझे दो-तीन ओवर गेंदबाजी करने के लिए कहा गया। इशान भैया को लगा कि मुझे गेंदबाजी देना थोड़ा जोखिम भरा है, लेकिन उन्हें नहीं पता था कि मैं विकेट लेने वाला गेंदबाज हूं।' सूर्यवंशी ने किशन लिंगदोह (25) और इम्लीवती लेमरूर (04) को आउट किया।

वैभव ने कहा कि जरूरत के समय विकेट लेने से ज्यादा खुशी एक बल्लेबाज के लिए और कुछ नहीं हो सकती। उन्होंने कहा, 'मेरे दिमाग में सिर्फ यही था कि अगर मैं यहां पांच विकेट भी ले लूं, तो मुझे केवल तीन ओवर ही गेंदबाजी करनी है। इसलिए मैंने अपनी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी करने, एक ही जगह पर गेंद डालने और अपना स्पेल पूरा करने की कोशिश की।' वैभव ने कहा, 'मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि बल्लेबाजी में मेरे लिए चीजें अच्छी नहीं रहीं। ऐसे में गेंदबाजी से योगदान देना वास्तव में अच्छा लगा।' जब कोई बल्लेबाज विकेट लेता है तो उससे ज्यादा खुशी की बात और कुछ नहीं होती।'

प्रीमियर लीग : बायर्न म्यूनिख और
मैनचेस्टर सिटी की धमाकेदार जीत

एजेसी ►► म्यूनिख

बायर्न म्यूनिख और मैनचेस्टर सिटी ने अपनी राष्ट्रीय फुटबाल लीग में बड़ी जीत हासिल करके अपने अभियान की धमाकेदार शुरुआत की। जर्मनी की बुंडेसलीगा में मौजूदा चैंपियन बायर्न म्यूनिख ने लीग में हमेशा की तरह दबदबा बनाए रखते हुए घरेलू मैदान पर स्टटगार्ट के खिलाफ 5-1 से जीत हासिल की। बायर्न म्यूनिख बुंडेसलीगा में पिछले 15 वर्षों से सत्र का अपना पहला मैच नहीं हारा है। इंग्लैंड में प्रीमियर लीग में मैनचेस्टर सिटी ने क्रिस्टल पैलेस को 4-1 से हराया।



हालैंड और चेर्की ने दागे दो-दो गोल

मैच में एर्लिंग हालैंड और रायन चेर्की ने दो-दो गोल किए। फ्रांस की लीगा के मौजूदा चैंपियन पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) की लीली के खिलाफ 2-2 से ड्रा खेलने के लिए स्टॉपेज टाइम में दो गोल की जरूरत पड़ी। फ्रांसीसी और यूरोपीय चैंपियन पीएसजी ने इससे पहले पिछले सप्ताह रेनेस के खिलाफ भी पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए 2-2 से ड्रा खेला था। इटली की लीग सीरी ए में एसी मिलान ने वेनेजिया को 2-0 से पराजित किया। उधर स्पेन में ला लीगा में अलावेस और रेंसिंग सैंटेंडर ने क्रमशः विलारियल और एल्वो पर एक-एक गोल से जीत हासिल की।

महिला जूनियर एशिया कप हॉकी
भारत का पहला मुकाबला कोरिया से



एजेसी ►► नई दिल्ली

मिडफील्डर खैदेम शिलेमा चानू की अगुवाई वाली भारतीय महिला हॉकी टीम 4 से 13 सितंबर तक चीन के मोकी में होने वाले एएचएफ महिला जूनियर एशिया कप में दक्षिण कोरिया के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी। नवनिर्वाचित

कोच टिम व्हाइट के नेतृत्व में 18 सदस्यीय टीम ने इसके लिए अच्छी तैयारी की है। इसके सहित भारतीय टीम ने इस साल ब्रिटेन का दौरा भी किया था। भारत को इस प्रतियोगिता के लिए मेजबान चीन, जापान, दक्षिण कोरिया और मलेशिया के साथ एलीट पूल में रखा गया है।

चीन की नजर में जबलपुर का गारमेंट क्लस्टर, ग्लोबल बाजार की ओर बढ़े कदम

चीनी प्रतिनिधिमंडल ने चैंबर में कारोबारियों से जानी हकीकत, आधुनिक मशीनरी, इंटरनेशनल डिजाइन और ई-कॉमर्स को बताया तरक्की की कुंजी

हरिभूमि, जबलपुर।

संस्कारधानी के रेडीमेड गारमेंट उद्योग में अब स्थानीय बाजार से निकलकर ग्लोबल मार्केट तक पहुंच बनाने की तैयारी है। जबलपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज में पहुंचे चीनी प्रतिनिधिमंडल ने शहर के गारमेंट उद्योग की संभावनाओं को करीब से समझा और कारोबारियों के साथ उत्पादन, तकनीक, डिजाइन और बाजार को लेकर चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल ने साफ किया कि आधुनिक मशीनरी, अंतरराष्ट्रीय फैशन ट्रेंड, बेहतर गुणवत्ता और ई-कॉमर्स से जुड़ाव के जरिए जबलपुर का गारमेंट क्लस्टर बड़े बाजार में अपनी जगह बना सकता है। लेमा गार्डन और गोहलपुर क्षेत्र में विकसित हो रहा रेडीमेड गारमेंट क्लस्टर पहले ही बड़ी संख्या में छोटे और मध्यम कारोबारियों को कारोबार का आधार दे रहा है। अब इस क्लस्टर को नई तकनीक और आधुनिक उत्पादन व्यवस्था से जोड़ने की कवायद शुरू हो गई है। यदि सुझावों को जमीन पर उतारा जाता है तो जबलपुर के गारमेंट कारोबार का स्वरूप आने वाले समय में बदल सकता है।



मशीनें बदलेगी उत्पादन की रफ्तार

गारमेंट कारोबार में सबसे बड़ी जरूरत उत्पादन क्षमता बढ़ाने की है। चीनी प्रतिनिधिमंडल ने कंप्यूटराइज्ड कटिंग मशीन, हाई-स्पीड सिलाई मशीन और ऑटोमेशन आधारित तकनीक अपनाने पर जोर दिया। आधुनिक मशीनों से न केवल उत्पादन की गति बढ़ेगी, बल्कि कटिंग की सटीकता और तैयार कपड़ों की गुणवत्ता में भी सुधार होगा। खास बात यह है कि इसका फायदा छोटे कारोबारियों को भी मिल सकता है। बड़े ऑर्डर मिलने पर समय पर डिलीवरी करना आसान होगा और उत्पादन लागत को भी निर्धारित किया जा सकेगा।

डिजाइन बदला तो बाजार भी बदलेगा

ग्लोबल बाजार में सिर्फ सस्ता उत्पाद पर्याप्त नहीं है। ग्राहक डिजाइन, फिटिंग, गुणवत्ता और पैकेजिंग को भी महत्व देता है। यही वजह है कि प्रतिनिधिमंडल ने वैश्विक फैशन ट्रेंड के अनुरूप डिजाइन तैयार करने और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों की पसंद को समझने पर जोर दिया। जबलपुर में फैशन डिजाइनिंग और टेक्सटाइल से जुड़ा उच्चस्तरीय संस्थान स्थापित होने की जरूरत भी सामने आती रही है। स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित डिजाइनर उपलब्ध होने से उद्योग को बाहर से विशेषज्ञ बुलाने की निर्भरता कम होगी और युवाओं के लिए रोजगार के नए रास्ते खुलेंगे।

क्लस्टर में ही पूरी व्यवस्था तो कम होगी लागत

गारमेंट उद्योग के लिए सिर्फ सिलाई इकाइयां पर्याप्त नहीं हैं। डाइंग, वॉशिंग, फिनिशिंग, पैकेजिंग और गुणवत्ता जांच जैसी सुविधाएं यदि क्लस्टर के आसपास ही उपलब्ध हों तो कारोबारियों को उत्पादन के अलग-अलग चरणों के लिए दूसरे शहरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। कॉमन फैसिलिटी सेंटर मजबूत होने से समय और परिवहन खर्च दोनों कम हो सकते हैं। इसका सीधा फायदा छोटे और मध्यम निर्माताओं की प्रतिस्पर्धा क्षमता पर पड़ेगा।

मोबाइल से खुलेगा दुनिया का बाजार

जबलपुर के गारमेंट कारोबार के लिए ई-कॉमर्स सबसे बड़ा गेमचेंजर साबित हो सकता है। स्थानीय निर्माता अपने ब्रांड तैयार कर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से जुड़ते हैं तो शहर में बने कपड़े देश के बड़े शहरों के साथ विदेशों में भी खरीदारों तक पहुंच सकते हैं। हालांकि इसके लिए केवल ऑनलाइन बिक्री शुरू करना पर्याप्त नहीं होगा। ब्रांडिंग, आकर्षक पैकेजिंग, डिजिटल मार्केटिंग, उत्पाद की गुणवत्ता और मजबूत लॉजिस्टिक्स नेटवर्क तैयार करना होगा। इसके बाद जबलपुर के निर्माता ग्लोबल सप्लाई चेन का हिस्सा बनने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

रोजगार का भी बढ़ेगा दायरा

गारमेंट उद्योग के विस्तार का असर रोजगार पर भी दिखाई देगा। उत्पादन बढ़ने के साथ कटिंग, सिलाई, डिजाइनिंग, पैकेजिंग, क्वालिटी कंट्रोल, मार्केटिंग और लॉजिस्टिक्स में नए अवसर बनेंगे। आधुनिक मशीनरी के साथ उन्हें संचालित करने वाले तकनीकी कर्मचारियों की मांग भी बढ़ेगी।

जो बदल सकते हैं तस्वीर

- **आधुनिक मशीनरी:** कंप्यूटराइज्ड कटिंग और हाई-स्पीड सिलाई मशीनों से उत्पादन बढ़ाने पर जोर।
- **ग्लोबल डिजाइन:** अंतरराष्ट्रीय फैशन ट्रेंड और ग्राहकों की पसंद के अनुसार उत्पाद तैयार करने की सलाह।
- **कॉमन फैसिलिटी सेंटर:** डाइंग, वॉशिंग, फिनिशिंग और पैकेजिंग की सुविधाएं

- क्लस्टर में ही विकसित करने पर जोर।
- **ई-कॉमर्स कनेक्शन:** स्थानीय निर्माताओं को अपने बांड के साथ ऑनलाइन बाजार में उतारने का सुझाव।
- **ग्लोबल सप्लाई चेन:** जबलपुर के गारमेंट निर्माताओं को देश के साथ विदेशी बाजार और सप्लाई नेटवर्क से जोड़ने पर फोकस।

ऐसे बदलेगी तस्वीर

आज: स्थानीय उत्पादन और पारंपरिक बाजार **कम:** आधुनिक मशीनरी और बड़े ऑर्डर **अगला कदम:** ब्रांडिंग और ई-कॉमर्स **लक्ष्य:** राष्ट्रीय से अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंच **समाहित नतीजा:** उत्पादन, निवेश और रोजगार में बढ़ोतरी

डॉ. बी.के. दीक्षित के शोधात्मक व्याख्यान की विद्वानों ने की सराहना

हरिभूमि, जबलपुर।

अमेरिका के बोस्टन स्थित हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में 16 से 22 अगस्त तक आयोजित तुलसी जयंती कॉन्फ्रेंस में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के सॉइल साइंस विभाग के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ. ब्रजेश (बी.के.) दीक्षित ने 'तुलसी की दृष्टि में महर्षि वाल्मीकी' विषय पर शोधात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. दीक्षित ने गौस्वामी तुलसीदास की दृष्टि से महर्षि वाल्मीकि के वैज्ञानिक, कविश्चर

हार्वर्ड में गूंजी तुलसी की दृष्टि से वाल्मीकी की गाथा



एवं मुनि के रूप में निरूपित करते हुए विभिन्न शास्त्रीय उद्धरणों के माध्यम से इसकी व्याख्या की। उनके शोधपरक वक्तव्य की सम्मेलन में विश्वभर से आए अकादमिक एवं

विश्वविद्यालयीन विद्वानों ने सराहना की। उन्होंने कहा कि श्री रामचरितमानस भारत की समृद्ध ज्ञानपरंपरा का ऐसा ग्रंथ है, जो सदियों से घर-घर में साहित्य, कला, विज्ञान और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दे रहा है। उन्होंने रामचरितमानस के वैश्विक महत्व पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम में संस्कारधानी जबलपुर से डॉ. अखिलेश गुमास्ता की अंग्रेजी रामायण की भी विद्वानों ने सराहना की। वहीं श्रीमती मंजूषा शुक्ला ने रामभजन प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना और गारमेंट एंड फैशन डिजाइन क्लस्टर के बीच एमओयू

फैशन डिजाइनिंग से रोजगार तक विद्यार्थियों को मिलेगा निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण



जबलपुर। जबलपुर संभाग के शासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को अब गारमेंट एवं फैशन डिजाइनिंग के क्षेत्र में कौशल विकास के साथ रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर मिलेंगे। इस दिशा में संभागीय कार्यालय, स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना, उच्च शिक्षा, जबलपुर संभाग एवं जबलपुर गारमेंट एंड फैशन डिजाइन क्लस्टर एसोसिएशन के मध्य एमओयू (समझौता ज्ञापन) संपन्न हुआ। संभागीय समन्वयक प्रो. अरुण शुक्ल ने बताया कि एमओयू के तहत विद्यार्थियों को गारमेंट एवं फैशन डिजाइनिंग, कटिंग, डिजाइन विकास, मार्केटिंग एवं सेलिंग, उद्यमिता तथा रोजगार एवं स्वरोजगार से

संबंधित निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण और मार्गदर्शन दिया जाएगा। प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावहारिक कौशल प्रदान करने के साथ स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए भी मार्गदर्शन मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह पहल विद्यार्थियों के कौशल को रोजगार, स्वरोजगार और उद्यमिता से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम में श्री दीपक जैन, महाप्रबंधक, जबलपुर गारमेंट एंड फैशन डिजाइन क्लस्टर एसोसिएशन, डॉ. महेन्द्र कुमार कुशवाहा, जिला नोडल अधिकारी, प्रो. राजीव मिश्रा, डॉ. अजय डाकुर, डॉ. साक्षी मरावी, डॉ. उमा भारती एवं डॉ. बुशरा खान उपस्थित रहे।

मजदूर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

जबलपुर। गोहलपुर थाना क्षेत्र के चंडालभाटा, मनमोहन नगर में एक निर्माणशील मकान में काम करने वाले 55 वर्षीय मजदूर रामदयाल चक्रवर्ती की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले को जांच में लिया है। पुलिस के अनुसार आकाश चक्रवर्ती (26), निवासी झंडा चौक, शहपुरा मिटनी में सूचना दी कि उसके पिता रामदयाल चक्रवर्ती निर्माणशील मकान में मजदूरी करते थे। परिजनों के मुताबिक, 28 अगस्त की रात करीब 10-30 बजे राधेश्याम विश्वकर्मा ने आकाश के बड़े पिता धनीराम चक्रवर्ती के मोबाइल पर फोन कर रामदयाल की मृत्यु की जानकारी दी। सूचना मिलने पर आकाश चंडालभाटा पहुंचा, जहां उसके पिता तख्त पर मृत अवस्था में पड़े मिले। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। गोहलपुर पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को अस्थायक कार्रवाई के लिए भेजते हुए मृत्यु के कारणों की जांच शुरू कर दी है।

बहकावे में दर्ज कराई दुष्कर्म की झूठी रिपोर्ट निरस्त महिला मुआवजे की हकदार नहीं : हाईकोर्ट

जबलपुर। मप्र हाईकोर्ट ने बहकावे में आकर एक कर्मचारी के खिलाफ दर्ज कराई गई दुष्कर्म और अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत अपराध की रिपोर्ट सहित उससे जुड़ी सभी आपराधिक कार्यवाहियां निरस्त कर दी हैं। जस्टिस हिमांशु जोशी की सिंगल बेंच ने कहा कि आपराधिक कानून और वास्तविक पीड़ितों के हित में बनाए गए लाभकारी प्रविधानों के दुरुपयोग को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि शिकायतकर्ता महिला इस मामले में पीड़ित प्रतिकर योजना के तहत किसी मुआवजे की हकदार नहीं होगी। यदि उसे पहले कोई प्रतिकर राशि दी जा चुकी है तो उसकी

► **अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत दर्ज प्रकरण भी निरस्त, अदालत ने कहा- कानून और पीड़ित हितैषी प्रविधानों का दुरुपयोग बर्दाश्त नहीं**

वसूली की जाए। मामला सिंगरौली जिले के लोक निर्माण विभाग में समयपाल के पद पर पदस्थ संतोष सिंह से जुड़ा है। उनके खिलाफ एक महिला ने गढ़वा थाने में चार जनवरी, 2013 को दुष्कर्म और अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत अपराध दर्ज कराया था। संतोष सिंह ने इसके विरुद्ध वर्ष 2016 में हाई कोर्ट में पुनरीक्षण

याचिका दायर की थी। सुनवाई के दौरान 11 अगस्त को दोनों पक्षों ने समझौते का आवेदन प्रस्तुत किया। हाई कोर्ट ने समझौते की वास्तविकता का सत्यापन करने के लिए मामला रजिस्ट्रार के समक्ष भेजा। सत्यापन के दौरान शिकायतकर्ता महिला ने स्वीकार किया कि उसने प्रदीप सिंह के कहने पर संतोष सिंह के खिलाफ झूठी रिपोर्ट दर्ज कराई थी। महिला की स्वीकारोक्ति और उपलब्ध तथ्यों को देखते हुए हाई कोर्ट ने प्राथमिकी तथा उससे संबंधित पूरी आपराधिक कार्यवाही निरस्त कर दी। कोर्ट ने कहा कि किसी निर्दोष व्यक्ति को फंसाने के लिए कानून और वास्तविक पीड़ितों की सहायता के लिए बनाई गई योजनाओं का गलत इस्तेमाल न्याय व्यवस्था के उद्देश्य को प्रभावित करता है।

चार विरोधभासी फैसलों के बाद हाईकोर्ट ने उठाया महत्वपूर्ण कानूनी कदम

संविलियन से पहले की दैवेभो सेवा पेंशन में जुड़ेगी या नहीं, लार्जर बेंच तय करेगी

हजारों पूर्व दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों पर पड़ सकता है असर

जबलपुर। मप्र हाईकोर्ट ने दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों की पेंशन और अर्हक सेवा, क्वालिफाइंग सर्विस से जुड़े महत्वपूर्ण कानूनी सवाल को लार्जर बेंच के समक्ष भेज दिया है। सिंगल बेंच ने इस मुद्दे पर हाई कोर्ट के पूर्व चार निर्णयों में विरोधाभासी अभिमत सामने आने के बाद मामला बड़ी बेंच के विचारार्थ भेजने के निर्देश दिए।

अब लार्जर बेंच यह तय करेगी कि नियमितोकरण अथवा नियमित पद पर संविलियन से पहले दैनिक वेतन भोगी के रूप में की गई सेवा अवधि को पेंशन के लिए अर्हक सेवा में शामिल किया जा सकता है या नहीं। फैसला प्रदेश के हजारों पूर्व दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। मामला नरसिंहपुर लोक निर्माण विभाग से चौकीदार पद से सेवानिवृत्त कल्याण सिंह गौड़ की याचिका से जुड़ा है। उनकी नियुक्ति एक जुलाई 1985 को दैनिक वेतन भोगी चौकीदार के रूप में हुई थी। बाद में 13 फरवरी 1997 को शासकीय आदेश के तहत उनका नियमित पद पर संविलियन कर दिया गया। वे 31 जनवरी 2018 को



सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद दैनिक वेतन भोगी के रूप में संविलियन से पहले की उनकी सेवा अवधि को पेंशन के लिए अर्हक सेवा में शामिल नहीं किया गया। इसके खिलाफ उन्होंने वर्ष 2019 में हाईकोर्ट में याचिका दायर की। सुनवाई में सामने आया कि दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों की पूर्व सेवा को पेंशन लाभ में शामिल करने के मुद्दे पर हाई कोर्ट के चार फैसलों में अलग-अलग मत हैं। इसे देखते हुए सिंगल बेंच ने रजिस्ट्री को मामला एक्टिंग चीफ जस्टिस के समक्ष रखने के निर्देश दिए हैं। लार्जर बेंच के सामने मुख्य प्रश्न यह होगा कि कामचलाक अथवा आकस्मिक स्थापना से नियमित स्थापना में संविलियन किए गए कर्मचारी की अर्हक सेवा किस अवधि से मानी जाएगी और क्या संविलियन से पहले की दैनिक वेतन भोगी सेवा को पेंशन में जोड़ा जा सकता है।

देशी पिस्टल और कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार

जबलपुर। शहपुरा थाना पुलिस ने अवैध हथियार के खिलाफ कार्रवाई करते हुए गाम नटवारा से एक युवक को देशी पिस्टल एवं कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से एक देशी पिस्टल और एक कारतूस बरामद किया है। पुलिस अधीक्षक जबलपुर समत उपाध्याय (भा पु से) के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गामगोण सूर्यकांत शर्मा एवं एसडीओपी पाटन लोकेश डाबर के मार्गदर्शन में यह कार्रवाई की गई। थाना प्रभारी शहपुरा प्रवीण धुवे ने बताया कि 27 अगस्त की रात मुखबिर से सूचना मिली थी कि गाम नटवारा में एक युवक अवैध हथियार बेचने की फिराक में खड़ा है। सूचना पर पुलिस टीम ने मौके पर दबिश दी। पुलिस को देखकर युवक भागने लगा, जिसे बेराबंदी कर पकड़ लिया गया। पूछताछ में उसने अपना नाम प्रशांत झारिया (19), निवासी गाम नटवारा बताया। तलाशी लेने पर उसकी कमर में एक देशी पिस्टल और जींस की छेटी जेब में एक कारतूस मिला। पुलिस ने हथियार जब्त कर आरोपी के विरुद्ध धारा 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत कार्रवाई की है। हथियार कहां से और किससे प्राप्त किया गया, इस संबंध में पूछताछ जारी है। कार्रवाई में सहायक उप निरीक्षक दिनेश सिंह तथा आरक्षक रोहित, गौरव सोनी एवं गोविन्द की सराहनीय भूमिका रही।